



**CHAUKHAMBA
AYURVEDA POCKET SERIES**

द्रव्यगुण-विज्ञान

AS PER CCIM NEW SYLLABUS - IIND PROFESSIONAL

लेखक

बोर्ड आफ स्कालर्स

प्राक्कथन एवं सम्पादक

डॉ. दीपक यादव 'प्रेमचन्द'

Chaukhamba Surbharati Prakashan



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

विषयानुक्रमणिका

संपादकीय

v

पेपर 1 भाग अ

1. द्रव्यगुण शास्त्र परिभाषा	1
2. द्रव्य	6
3. गुण	13
4. रस	26
5. विपाक	41
6. वीर्य	45
7. प्रभाव	49
8. कर्म	53
9. चरक का दर्शोमानि गण	67
10. मिश्रक गण	87
11. द्रव्य नामकरण सिद्धान्त	111

12. भेषज परीक्षा विधि आदि	114
पैपर 1 भाग ब	
13. द्रव्य शोधनादि प्रकरण	123
14. प्रशस्त भेषजादि प्रकरण	129
15. निवण्टु विज्ञान	132
16. Pharmacology	135
पैपर 2 भाग अ	
1. प्रमुख द्रव्य प्रकरण	177
पैपर 2 भाग ब	
1. सामान्य द्रव्य परिचय	287
2. जांगम द्रव्य प्रकरण	361
3. अन्पान वर्ग प्रकरण	363
• • •	

1. द्रव्यगुण शास्त्र परिभाषा

द्रव्य गुण शास्त्र लक्षण

शास्त्रे यस्मिन् द्रव्यं नामाकृतिर्धर्मकर्मसंयोगैः।

विनियते च प्रयोगैः द्रव्यगुणन्तद् विनिर्दिष्टम्॥

पोडशांगहृदयम् 3.2

जिस शास्त्र में द्रव्य से सम्बन्धित नाम, आकृति, धर्म, कर्म, संयोग और प्रयोग का वर्णन हो – उसे ‘द्रव्यगुण शास्त्र’ कहते हैं।

द्रव्याणां गुणकर्माणि प्रयोगा विविधास्तथा।

सर्वशो यत्र वर्णन्ते शास्त्रं द्रव्यगुणं हि तत्॥

आचार्य प्रियव्रत शर्मा

गुण शब्देन चेह धर्मवाचिना रसवीर्यविपाक-

प्रभावाः सर्व एव गृह्णन्ते।

च.सू. 1.51 पर चक्रपाणि

द्रव्याणां गुणाः।

शिवदास सेन

/ द्रव्यों के गुण, कर्म और प्रयोग का जि शास्त्र में विवेचन हो उसे

2020-7-11 11:45

द्रव्यगुण विज्ञान

'द्रव्यगुणशास्त्र' कहते हैं। 'द्रव्यगुण' शब्द में 'गुण' शब्द धर्म में रूढ़ हो गया है और इससे गुण एवं कर्म दोनों का बोध होता है।

द्रव्यगुण शास्त्र की महत्ता

(1) आयुर्वेद की व्याख्या -

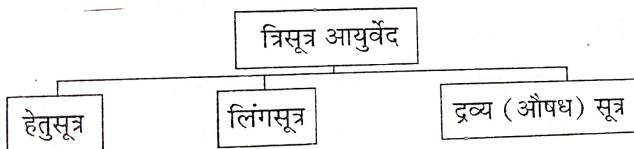
स्वलक्षणतः सुखासुखतो हिताहिततः प्रमाणाप्रमाणतश्च;
यतश्चायुष्याण्यनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽप्यायुर्वेदः।

च.सू. 30.23

(2) त्रिसूत्र आयुर्वेद -

हेतुलिंगौषधज्ञानं स्वस्थातुरपरायणम्।
त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यं बुद्धेयं पितामहः॥

च.सू. 1.24



(3) चिकित्सा के चतुष्पाद -

भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम्।
गुणवत् कारणं ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये॥

च.सू. 9.3

(4) रोग एवं औषधि परीक्षा -

रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम्।

च.सू. 20.20

द्रव्यगुण शास्त्र परिभाषा

(5) भिषक् का श्रेष्ठत्व -

तेषां कर्मसु बाह्येषु योगमाभ्यन्तरेषु च।

संयोगं च प्रयोगं च यो वेद स भिषग्वरः॥

च.सू. 4.29

(6) लोकोक्ति -

निघण्टुना विना वैद्यो विद्वान् व्याकरणं विना।

अनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयो हासस्य भाजनम्॥

राजनिघण्टु

द्रव्यगुण विज्ञान के मौलिक सिद्धान्त

षड् पदार्थ सिद्धान्त -

सामान्यं च विशेषं च गुणान् द्रव्याणि कर्म च।

समवायं च तज्जात्वा तन्त्रोक्तं विधिमास्थिताः॥

च.सू. 11.28

सामान्य + विशेष + गुण + द्रव्य + कर्म + समवाय

पञ्चमहाभूत सिद्धान्त -

महाभूतानि खं वायुरग्निरापः क्षितिस्तथा।

शब्दः स्पर्शश्च रूपञ्च रसो गन्धश्च तदगुणाः॥

च.सा. 1.27

आकाशपवनदहनतोयभूमिषु यथासंख्येकोत्तरपरिवृद्धाः

शब्दस्पर्शस्त्रपरसगन्धाः।

सु.सू. 42.3

ख (आकाश), वायु, अग्नि, आप (जल) और क्षिति (पृथिवी) ये

पञ्चमहाभूत हैं। इनके क्रमशः गुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गन्ध हैं। ये भूतों के नैसर्गिक गुण हैं। इसके अतिरिक्त पिछले-पिछले भूत के आगले-आगले भूत में अनुप्रवेश (सम्मिलन) से आगले-आगले भूत में पिछले भूतों के गुण भी आ जाते हैं।

रसादि पञ्च पदार्थ सिद्धान्त -

द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च ।

पदार्थः पञ्च तिष्ठन्ति स्वं स्वं कुर्वन्ति कर्म च ॥

भा.प्र. पू. मिश्रवर्ग 6.181

रस + गुण + वीर्य + विपाक + शक्ति

पद् रस सिद्धान्त -

रसनेन्द्रिय के विषय को रस कहते हैं। अर्थात् जिस गुण का रसना के द्वारा ग्रहण होता है वह रस कहलाता है। यथा-

रसनार्थो रसः ।

च.सू. 1

रसनेन्द्रियग्राह्यो योऽर्थः स रसः ।

शि.

संख्या - इन रसों की संख्या 6 है। यथा -

रसास्तावत् घट् - मधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायाः । च.चि. 1

- मधुर - अम्ल - लवण - कटु

- तिक्त - कषाय

सप्त पदार्थ सिद्धान्त -

द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च ।

पदार्थः पञ्च तिष्ठन्ति स्वं स्वं कुर्वन्ति कर्म च ॥

भा.प्र. पू. मिश्रवर्ग 6.181

द्रव्य + रस + गुण + वीर्य + विपाक + शक्ति + कर्म

• • •

द्रव्य

आचार्य सुश्रुत मतेन -

द्रव्यलक्षणं तु - क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति । सु.सू. 40.3

जो क्रियायुक्त, गुणयुक्त तथा समवायि कारण हो, वह द्रव्य है।

महर्षि कणाद मतेन -

क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम् । वै.सू.1.1.15

जो क्रियायुक्त, गुणयुक्त तथा समवायिकारण हो उसे द्रव्य कहा जाता है।

आचार्य अनन्धमट्ट मतेन -

द्रव्यत्वजातिमत्वं गुणवत्वं समवायिकारणत्वं वा द्रव्यसामान्य-
लक्षणम् । तर्कसंग्रह व्याख्या

जो द्रव्यत्व जाति वाला, गुणयुक्त अथवा समवायिकारण हो, वह द्रव्य है।

आचार्य प्रियत्रतं शर्मा मतेन -

गुणकर्मश्रायभूतं द्रव्यम् ।

षोडशांगहृदयम् 3.4

द्रव्य का पाञ्चभौतिकत्व -

सर्वं द्रव्यं पञ्चभौतिकमस्मिन्नर्थे ।

च.सू. 26.10

इह हि द्रव्यं पञ्चमहाभूतात्मकम् ।

अ.सं.सू. 17.3

सभी द्रव्य पाञ्चभौतिक होते हैं।

2. द्रव्य

निरूप्ति -

द्रवति गच्छति परिणाममभीक्षणमिति द्रव्यम् ।

जो सदैव परिणाम को प्राप्त करते हैं या जिनसे परिणाम का ज्ञान होता है वह द्रव्य है।

द्रवति गच्छति संयोगविभागादिगुणानिति वा द्रव्यम् ।

वह पदार्थ जो परिणाम को प्राप्त होता है अथवा जो संयोग-विभाग को प्राप्त होता है, द्रव्य है।

लक्षण -

आचार्य चरक मतेन -

यत्राश्रितः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत् ।

तद् द्रव्यम् ।

च.सू. 1.50

जिसमें कर्म और गुण (समवाय सम्बन्ध से) आश्रित हों, जो (कार्य द्रव्य, गुण एवं कर्म) का समवायिकारण हो, वह द्रव्य है।

।।।।। - ०८०८
द्रव्य का औषधत्व -

अनेनोपदेशेन नानौषधिभूतं जगति किञ्चिद्द्रव्यमुपलभ्यते तां तां
युक्तिमर्थं च तं तमभिप्रेत्य ॥
च.सू. 26.12

अनेन निर्दर्शनेन नानौषधीभूतं जगति किञ्चिद्द्रव्यमस्तीति ।

च.सू. 41.5

द्रव्य प्राधान्य में युक्ति -

आचार्य सुश्रुत मतेन -

पाको नास्ति विना वीर्यद्वीर्यं नास्ति विना रसात् ।
रसो नास्ति विना द्रव्याद् द्रव्यं श्रेष्ठतमं स्मृतम् ॥ सु.सू. 40.15

आचार्य वाग्भट मतेन -

द्रव्यमेव रसादीनां श्रेष्ठं, ते हि तदाश्रयाः । अ.ह.सू. 9.1

षोडशांगहृदयम् मतेन -

गुर्वाद्यास्तु गुणा ये मधुराम्लाद्याः रसास्तथा वीर्यम् ।
द्रव्ये स्थिताः विपाको द्रव्यप्रभावश्च कर्माणि ॥

षोडशांगहृदयम् 3.3

द्रव्य वर्गीकरण -

कुल द्रव्यों की संख्या 9 हैं (आयुर्वेद/ वैशेषिक/ न्याय मतेन)
खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः । च.सू. 1.48

द्रव्यगुण विज्ञान

द्रव्य

- | | | |
|--------|----------|---------|
| - आकाश | - वायु | - अग्नि |
| - जल | - पृथ्वी | - आत्मा |
| - मन | - काल | - दिशा |

द्रव्य के दो भेद -

1. क्रारण द्रव्य (संख्या: 9)

- मूर्त्ति/परमाणु द्रव्य (5: - वायु - तेज - जल - पृथ्वी - मन)
- अमूर्ति/विभु द्रव्य (4: - आकाश - काल - दिशा - आत्मा)

2. कार्य द्रव्य (संख्या: असंख्य)

कार्य द्रव्य के भेद -

1. चेतन द्रव्य (सेन्द्रिय)

• अन्तश्चेतन

- चनस्पति (फलैर्वनस्पतिः)
- वैर्वनस्पत्य (पुष्पैर्वैर्वनस्पत्यः फलैः)
- औषध (ओषधः फलपाकान्ताः)
- वीरुद्ध (प्रतानैर्वीरुद्धः)

2. बहिरन्तश्चेतन

- जरायुज (तत्र पशुमनुष्यव्यालादयो जरायुजाः)
- अण्डज (खगसर्पसरीसृपप्रभृतयोऽण्डजाः)

JASU

द्रव्यगुण विज्ञान

१८: || || - / वर्त्तुले उच्चमिकीटपिपीलकाप्रभृतयः)
- उद्दिष्ट (इन्द्रगोपादि)

2. अचेतन द्रव्य (निरन्दित्रिय)

• खनिज

- धातु

- अधातु

• कृत्रिम

द्रव्य के अन्य भेद -

1. योनि भेद से: 3

1. जांगम द्रव्य / जान्तव द्रव्य

2. औन्हिद् द्रव्य / वानस्पतिक द्रव्य

क. वनस्पति ख. वानस्पत्य

ग. औषध

घ. वीरुद्ध

- *लूह, लैल, लुह*
जैल, गुल

3. पार्थिव द्रव्य / भौम द्रव्य

2. प्रयोग भेद से: 2 (चक्रपाणि मतेन)

1. औषध द्रव्य 2. आहार द्रव्य

3. रस भेद से: 6

1. मधुरस्कन्ध	2. अम्लस्कन्ध	3. लवणस्कन्ध
4. कटुस्कन्ध	5. तिक्तस्कन्ध	6. कथायस्कन्ध

द्रव्य

4. प्रभाव भेद से: 3

1. दोषशामक	2. धातुप्रकापेक	3. स्वास्थ्यानुवर्तन
------------	-----------------	----------------------

5. आहार द्रव्य भेद से: 12

1. शूकधान्य वर्ग	2. शमीधान्य वर्ग	3. मांस वर्ग
4. शाक वर्ग	5. फल वर्ग	6. हरित वर्ग
7. मद्य वर्ग	8. जल वर्ग	9. गोरस वर्ग
10. इक्षु वर्ग	11. कृतान्न वर्ग	12. आहारोपयोगी वर्ग

6. आहार द्रव्य वर्गीकरण (सुशुतानुसार)

1. द्रवद्रव्य वर्ग: 10

1. जलवर्ग	2. क्षीरवर्ग	3. दधिवर्ग	4. तक्रवर्ग
5. घृतवर्ग	6. तैलवर्ग	7. मधुवर्ग	8. इक्षुवर्ग
9. मद्यवर्ग	10. मूत्रवर्ग		

2. अन्द्रव्य वर्ग: 12

1. शालिवर्ग	2. कुधान्यवर्ग	3. मुद्गादि वर्ग
4. मांसवर्ग	5. फलवर्ग	6. शाकवर्ग
7. पुष्पवर्ग	8. कन्दवर्ग	9. लवणवर्ग
10. कृतान्नवर्ग	11. भक्ष्यवर्ग	12. अनुपानवर्ग

3. कर्मभेद से: 37 गण

द्रव्य उत्पत्ति -

अम्बुयोन्यग्निपवननभसां समवायतः ।

तनिर्वृत्तिर्विशेषश्च ॥

अ.ह.सू. 9.2

द्रव्य के सम्पूर्ण अवयवों के विकास में अम्बु (जल) योनि है (जिस प्रकार घड़े के निर्माण में मिट्टी का गोला पानी की सहायता से बनता है) एवं अग्नि, वायु और आकाश सामूहिक रूप से सहयोगी हैं। द्रव्यों की विशेषताओं का भी यही हेतु है (एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से भिन्न है)। इस विशेषता का भी हेतु यही पञ्चभूतात्मक समुदाय है।

द्रव्य प्राधान्य -

सन्दर्भ - सु.सू. 40

- | | | |
|----------------------|---------------------|--------------------|
| (1) व्यवस्थितत्व | (2) नित्यत्व | (3) स्वजात्यवस्थान |
| (4) पञ्चन्दियग्रहण | (5) आश्रयत्व | (6) आरम्भसामर्थ्य |
| (7) शास्त्रप्रामाण्य | (8) क्रमापेक्षितत्व | (9) एकदेशसाध्यत्व |
| (10) तरतमयोगा- | (11) विकल्प | (12) प्रतीघात |
| नुपलब्धि | सामर्थ्य | सामर्थ्य |

• • •

3. गुण

निरुक्ति -

(गुणते आमन्यते लोक अनेन इति गुणः ।)

जिसके द्वारा लोग द्रव्य की ओर आकर्षित होते हैं वह गुण है।

लक्षण -

समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः ।

च.सू. 1.51

जो समवाय सम्बन्ध वाला हो, चेष्टारहित हो और ग्रहण में कारण हो उसे गुण कहते हैं।

द्रव्याश्रयगुणवान्

संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष

इति

गुणलक्षणम् ।

वै द 1.1.16

गुण वह है जो द्रव्य में आश्रित हो (द्रव्याश्रयी), गुणरहित हो, कर्मरहित या कर्म से भिन्न हो और स्वसमान गुणान्तर की उत्पत्ति में कारण हो।

अथ द्रव्याश्रिता जया: निरुणा: निष्क्रिया गुणाः। कारिकावलि
द्रव्याश्रिता: गुणाः प्रोक्ताः। षोडशांगहृदयम् 3.4

द्रव्यगुण विज्ञान

संख्या -

- आयुर्वेद मतेनः 41
- योगीन्द्रनाथ सेन मतेनः 42/46
- वैशेषिक दर्शन मतेनः 17
- प्रशस्तपाद मतेनः 24
- न्याय दर्शन मतेनः 24
- तर्कसंग्रह मतेनः 24
- सांख्य दर्शन मतेनः 3

आयुर्वेद मतेन गुण वर्गीकरण -

सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः।

गुणाः प्रोक्ताः॥

च.सू. 1.49

- सार्था / इन्द्रिय / वैशेषिक गुणः 5 ✓
- गुर्वादि / सामान्य / शारीर द्रव्य गुणः 20 ✓
- अध्यात्म / आत्म गुणः 6 ✓
- परादि / सामान्य गुणः 10 ✓

गुण

वैशेषिक गुण

पर्यायः सार्थ गुण / इन्द्रिय गुण / विशिष्ट गुण

संख्या: 5

1. शब्द 2. स्पर्श 3. रूप 4. रस 5. गन्ध

गुर्वादि गुण

पर्यायः सामान्य गुण / शारीर गुण (कविराज गंगाधरराय
मतेन) / द्रव्य गुण

संख्या: 20

- | | | | | |
|----------|-------------|------------|-------------|------------|
| 1. गुरु | 2. लघु | 3. शीत | 4. उष्ण | 5. स्निग्ध |
| 6. रुक्ष | 7. मन्द | 8. तीक्ष्ण | 9. स्थिर | 10. सर |
| 11. मुदु | 12. कठिन | 13. विशद | 14. पिच्छिल | 15. शलक्षण |
| 16. खर | 17. सुक्ष्म | 18. स्थूल | 19. सान्द्र | 20. द्रव |

ये गुण पञ्चमहाभूतों में सामान्यतया रहते हैं, अतः इन्हें 'सामान्य गुण'
भी कहते हैं।

1. गुरु / गुरुत्व (heaviness) -

आद्यपतनासमवायिकारणं गुरुत्वम्।

किसी वस्तु के प्रथम पतन का जो असमवायिकारण है, वह गुरुत्व
है।

- संयोग-**वेग-प्रयत्नाभावे सति गुरुत्वात् पतनमिति। तर्कसंग्रह
2. **लघु / लघुत्व (lightness) -**
लघूनि हि द्रव्याणि वाच्चग्निगुणबहुलानि भवन्ति। च.सू. 5.6
वायु तथा अग्नितत्त्व की अधिकता के रूप द्रव्यों में लघु गुण उत्पन्न होता है।
3. **शीत / शीतत्व (coldness) -**
शरीर में उष्णता कम करनेवाला गुण 'शीत' ।
4. **उष्ण / उष्णत्व (heatness) -**
उष्णो भवति शीतस्य विपरीतश्च पाचनः। भा.प्र.
जिससे शरीर में उष्णता की वृद्धि हो तथा जो शीत गुण के विपरीत हो वह उष्ण गुण है।
5. **स्निग्ध / स्निग्धत्व (soothingness) -**
पर्यायः स्नेह
संग्रहहेतुगुणः स्नेहः।
पिण्डीभाव के हेतु का नाम 'स्नेह' है।
प्रशस्तपाद ने इसे अमूर्त और वैशेषिक गुण माना है।
6. **रुक्ष / रुक्षत्व (dryness) -**
यस्य शोषणे शक्तिः स रुक्षः। हेमाद्रि

गुण

- जिसमें शोषण करने की शक्ति हो वह रुक्ष गुण है।
- रुक्षस्तद्विपरीतः।** सु.सू. 46.516
स्निग्ध के विपरीत गुण को रुक्ष कहते हैं।
वैशेषिक मतेन स्नेह का अभाव ही रुक्ष है।
7. **मन्द / मन्दत्व (dullness) -** हेमाद्रि
यस्य शमने शक्तिः स मन्दः।
जिस गुण के कारण शरीर में शमन कर्म हो वह मन्द है।
चरक मतेन मन्द और तीक्ष्ण गुण सापेक्ष हैं।
सुश्रुत मतेन मन्द और सर गुण सापेक्ष हैं।
8. **तीक्ष्ण / तीक्ष्णत्व (sharpness) -** हेमाद्रि
यस्य शोधने शक्तिः स तीक्ष्णाः।
शोधन का कारण तीक्ष्ण गुण होता है।
चरक मतेन तीक्ष्ण और मन्द गुण सापेक्ष हैं।
सुश्रुत मतेन तीक्ष्ण और मृदु गुण सापेक्ष हैं।
9. **स्थिर / स्थिरत्व (immobility) -** हेमाद्रि
यस्य धारणे शक्तिः स स्थिरः।
जिस गुण में धारण शक्ति होती है वह स्थिर है।
यह सर गुण का सापेक्ष गुण है।

/ इः | | | | - / - ०८०८
10. सर / सरत्व (mobility) -

यस्य प्रेरणे शक्तिः स सरः।

जिस गुण में प्रेरक गुण होता है वह सर है।

सुश्रुत ने इसे जल महाभूत से युक्त माना है।

11. मृदु / मृदुत्व (softness) -

यस्य श्लथने शक्तिः स मृदुः।

जो शरीर में शिथिलता या कोमलता उत्पन्न करता है वह मृदु है।

चरक मतेन मृदु एवं कठिन सापेक्ष गुण हैं।

सुश्रुत मतेन मृदु एवं तीक्ष्ण सापेक्ष गुण हैं।

12. कठिन / कठिनत्व (hardness) -

यः दृढ़ीकरोति स कठिनः।

जिसमें दृढ़ता प्रदान करने की शक्ति हो वह कठिन गुण हैं।

मृदु एवं कठिन गुण सापेक्ष हैं।

13. विशद / विशदत्व (clearness) -

यस्य क्षालने शक्तिः स विशदः।

जिसमें क्षालन शक्ति हो वह विशद गुण है।

विशद और पिच्छिल सापेक्ष गुण हैं।

द्रव्यगुण विज्ञान

हेमाद्रि

गुण

14. पिच्छिल / पिच्छिलत्व (sliminess) -

यस्य लेपने शक्तिः स पिच्छिलः।

जिसमें लेपन करने की शक्ति हो वह पिच्छिल गुण है।

15. श्लक्षण / श्लक्षणत्व (smoothness) -

यस्य रोपणे शक्तिः स श्लक्षणः।

जिसमें रोपण शक्ति हो वह श्लक्षण गुण है।

चरक मतेन श्लक्षण और खर सापेक्ष गुण हैं।

सुश्रुत मतेन श्लक्षण और कर्कशा सापेक्ष गुण हैं।

16. खर / खरत्व (roughness) -

यस्य लेखने शक्तिः स खरः। हेमाद्रि

जिसमें लेखन करने की शक्ति हो वह खर गुण है।

चरक ने पृथिवी महाभूत का असाधारण लक्षण 'खर' कहा है।

17. सूक्ष्म / सूक्ष्मत्व (minuteness) -

यस्य विवरणे शक्तिः स सूक्ष्मः।

जिसमें विवरण शक्ति अर्थात् स्रोतों को खोलने की शक्ति हो वह सूक्ष्म गुण है।

चरक मतेन सूक्ष्म और स्थूल सापेक्ष गुण हैं।

सुश्रुत मतेन सूक्ष्म और आशु सापेक्ष गुण हैं।

हेमाद्रि

हेमाद्रि

हेमाद्रि

४६।।।-०८०८

द्रव्यगुण विज्ञान

18. स्थूल / स्थूलत्व (bulkiness) -

यस्य संवरणे शक्तिः स स्थूलः।

हेमाद्रि

जो अवरोध उत्पन्न करने वाला हैं वह स्थूल गुण है।

19. सान्द्र / सान्द्रत्व (solidity) -

यस्य प्रसादने शक्तिः स सान्द्रः।

हेमाद्रि

जो प्रसादन करने वाला होता हैं वह सान्द्र गुण है।

सान्द्र एवं द्रव सापेक्ष गुण हैं।

20. द्रव / द्रवत्व (fluidity) -

यस्य विलोडने शक्तिः स द्रवः।

हेमाद्रि

जिसमें विलोडन अर्थात् व्याप्त होने की शक्ति हो वह द्रव गुण है।

प्रकार: 2 (1) सांसिद्धिक (जल महाभूत में) एवं (2) नैमित्तिक (तेज एवं पृथिवी महाभूत में)

गुरुर्वादि 20 गुणों का आधुनिक शब्द एवं उनका भौतिक संगठन

गुण	आधुनिक	भौतिक संगठन
गुरु	heaviness	पृथिवी एवं जल
लघु	lightness	वायु, आकाश एवं अग्नि
स्नाध	soothingness	जल
रुक्ष	dryness	पृथिवी, अग्नि एवं वायु

गुण

21

गुण	आधुनिक	भौतिक संगठन
द्रव	fluidity	जल
सान्द्र	solidity	पृथिवी
शीत	cold	जल
उष्ण	hot	अग्नि
मर्द	dullness	पृथिवी एवं जल
तीक्ष्ण	sharpness	अग्नि
स्थिर	immobility	पृथिवी
सर	mobility	जल
मृदु	softness	जल एवं आकाश
कठिन	hardness	पृथिवी
विशद	clearness	पृथिवी, वायु, तेज एवं आकाश
पिच्छिल	sliminess	जल
श्लक्षण	smoothness	अग्नि
खर	roughness	वायु
स्थूल	bulkiness	पृथिवी
सूक्ष्म	minuteness	अग्नि, वायु एवं आकाश

द्रव्यगुण विज्ञान

अध्यात्म गुण

पर्यायः अध्यात्म / आत्म गुण / आध्यात्मिक गुण

संख्या: 6

- | | | | |
|------------|-----------|--------|---------|
| 1. इच्छा | 2. द्वेष | 3. सुख | 4. दुःख |
| 5. प्रयत्न | 6. बुद्धि | | |

परादि गुण

पर्यायः सामान्य गुण / चिकित्सा सिद्धयुपाय गुण

संख्या: 10

- | | | | |
|------------|------------|-------------|-----------|
| 1. परत्व | 2. अपरत्व | 3. युक्ति | 4. संख्या |
| 5. संयोग | 6. विभाग | 7. पृथक्त्व | 8. परिणाम |
| 9. संस्कार | 10. अध्यास | | |

1. परत्व (Paratva) –

तच्च परत्वं प्रधानत्वम् । चक्र. च.सू. 26.31 पर
परत्वं प्रधान को कहते हैं। एक ही प्रकार के अनेक द्रव्यों में जो श्रेष्ठतम् हैं, वह पर कहलाता है।

प्रकारः 2 (1) दिक्कृत् एवं (2) कालकृत्

2. अपरत्व (Aparatva) –

अपरत्वं अप्रधानत्वम् । चक्र. च.सू. 26.31 पर

गुण

अपर का अर्थ अप्रधान है। एक समान जाति के द्रव्यों में जो निकृष्टम् द्रव्य होता है, वह अपर कहलाता है।

प्रकारः 2 (1) दिक्कृत् एवं (2) कालकृत्

3. युक्ति (Yukti) –

युक्तिश्च योजना या तु युज्यते ।
योजना को युक्ति कहते हैं।

च.सू. 26.31

4. संख्या (Samkhyा) –

संख्या स्यादगणितम् ।

च.सू. 26.32

एक, दो, तीन आदि करके जो गणना की जाती है, वह संख्या है। एकत्वादिव्यवहारहेतुः संख्या ।

तर्कसंग्रह

एक – दो – तीन आदि संज्ञायें जो व्यवहार का कारण हैं, वे ही संख्या कहलाती हैं।

5. संयोग (Sanyoga) –

योगः सह संयोग उच्यते ।

द्रव्याणां द्वन्द्वसर्वेककर्मजोऽनित्य एव च ॥

च.सू. 26.32

दो या अधिक द्रव्यों का योग अर्थात् साथ में मिलना संयोग कहा जाता है।

प्रकारः 3 (1) द्वन्द्वकर्मज संयोग (2) सर्वकर्मज संयोग एवं (3) एककर्मज संयोग । DAS 2020-7-11

6. विभाग (Vibhaga) -

विभागस्तु विभक्तिः स्याद्वियोगो भागशो ग्रहः। च.सू. 26.33

द्रव्यों के विभाजन अथवा संयोग के नाश के कारण को विभाग कहते हैं।

प्रकारः 3 (1) द्वन्द्वकर्मज संयोग (2) सर्वकर्मज संयोग एवं (3) एककर्मज संयोग

7. पृथक्त्व (Prthaktva) -

पृथक्त्वं स्यादसंयोगो वैलक्षण्यमनेकता। च.सू. 26.33

एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य से अलग करनेवाले गुण को पृथक्त्व कहते हैं।

प्रकारः 3 (1) असंयोगज (2) वैलक्षण्य एवं (3) अनेकता

8. परिणाम (Parinama) -

परिमाणं पुनर्मानम्। च.सू. 26.34

किसी वस्तु को माप कर या तील कर जो उसका मान लिया जाता है, वह परिमाण है।

प्रकारः 4 (1) अणु (2) महत् (3) हस्त एवं (4) दीर्घ

• अमरकोष मतेन 3 प्रकार (1) पौत्रव (2) द्रव्य एवं (3) पात्र

9. संस्कार (Samskara) -

संस्कारः करणं मतम्। च.सू. 26.34

जिसके कारण द्रव्य के स्वाभाविक गुण में परिवर्तन लाया जाये, वह 'संस्कार' है।

भेदः 3 (वैशेषिक तथा न्याय मतेन) - (1) वेग (2) स्थिति-स्थापक एवं (3) भावना

10. अभ्यास (Abhyasa) -

भावाभ्यसनप्रभ्यासः शीलनं सततक्रिया। च.सू. 26.34

किसी द्रव्य विशेष का निरन्तर सेवन 'अभ्यास' है।

पर्यायः - अभ्यसन - शीलन - सततक्रिया

गुणों की कार्यकृता -

कर्मभिस्त्वनुर्मीयन्ते नानाद्रव्याश्रया गुणाः॥ सु.सू. 46.514

द्रव्याश्रित गुणों का अनुमान उनके कर्मों के द्वारा होता है।

गुणा य उक्ता द्रव्येषु शरीरेष्वपि ते तथा।

स्थानवृद्धिक्षयास्तस्मादेहिनां द्रव्यहेतुकाः॥ सु.सू. 41.12

गुण प्राधान्य -

(1) रसाभभव (2) रसानुग्रह (3) विपाककारणत्व

(4) संख्यावाहुल्य (5) प्रयोगवाहुल्य (6) कर्मवाहुल्य

(7) विपयवाहुल्य (8) उपदेश (9) अपदेश

(10) अनुमान

• • •

2020-7-11

4. रस

निरुक्ति -

रसति अहरहर्गच्छतीति रसः ।

शरीर का आद्य धातु 'रस' जो कि निरन्तर गतिशील रहता है, उसे 'रस' (धातु) कहते हैं।

रसनात् सर्वधातूनां रस इत्यभिधीयते । र.र.स. 1.76

जो सभी धातुओं को आत्मसात् कर लेता है उसे 'रस' (पारद) कहते हैं।

रसति शरीरे आशु प्रसरति इति रसः ।

जो शरीर में प्रयुक्त होने पर शीघ्र फैल जाता है, उसे 'रस' (कल्पना) कहते हैं।

रसनेन्द्रियग्राह्यवस्तुनि रसः ।

रसनेन्द्रिय से जिस वस्तु का ग्रहण किया जाता है, उसे 'रस' (इन्द्रियार्थ) कहते हैं।

रस

27

लक्षण -

रसनार्थो रसः । च.सू. 1.64

रसनार्थस्तु रसः स्याद् । पोडशांगहदयम् 3.4

रसना (जिहा) के अर्थ (ग्राह्य वस्तु या विषय) को 'रस' कहते हैं।

संख्या -

स्वादुरम्लोऽथ लवणः कटुकस्तिक्त एव च ।

कषायश्वेति घट्कोऽयं रसानां संग्रहः स्मृतः ॥

च.सू. 1.65

रस	आधुनिक नाम	बल
1. स्वादु अर्थात् मधुर	Sweet ✓	++++++
2. अम्ल	Sour ✓	+++++
3. लवण	Salty ✓	++++
4. तिक्त	Bitter ✓	+++
5. उण्णा अर्थात् कटु	Pungent ✓	++
6. कषाय	Astringent ✓	+

पाञ्चभौतिकत्व -

रसनार्थो रसस्तस्य द्रव्यमापः क्षितिस्तथा ।

निर्वृत्तौ च विशेषे च प्रत्ययाः खादयस्त्रयः ॥

च.सू. 1.64

- रसना द्वारा ग्राह्य विषय

2020-7-11

- रस की निर्वृत्ति: जल और पृथिवी द्वारा
 - रस का विशेष ज्ञान: आकाश, वायु एवं अग्नि द्वारा
- तत्र, भूम्यम्बुगुणबाहुल्यान्मधुरः, भूम्यग्निगुणबाहुल्यादम्लः, तोयाग्निगुणबाहुल्याल्लवणः, वाय्वग्निगुणबाहुल्यात् कटुकः, वाय्वाकाशगुणबाहुल्यात्तिक्तः, पृथिव्यनिलगुणबाहुल्यात् कषाय इति ॥ सु.सू. 42.3
- तेषां घण्णां रसानां सोमगुणातिरेकान्मधुरो रसः, पृथिव्यग्निभूयिष्ठत्वादम्लः, सलिलाग्निभूयिष्ठत्वाल्लवणः, वाय्वग्निभूयिष्ठत्वात् कटुकः, वाय्वाकाशातिरिक्तत्वात्तिक्तः, पवनपृथिवीव्यतिरेकात् कषाय इति । च.सू. 26.40

रस	पाञ्चभौतिक संगठन	
	चरक मतेन	सुश्रुत मतेन
मधुर	-जल + पृथिवी	जल + पृथिवी
अम्ल	पृथिवी + अग्नि	पृथिवी + अग्नि
लवण	जल + अग्नि	जल + अग्नि
कटु	वायु + अग्नि	वायु + अग्नि
तिक्त	वायु + आकाश	वायु + आकाश
कषाय	वायु + पृथिवी	वायु + पृथिवी

M S - S
P A A
J A L
V A
V A
✓ P

ऋतु प्रभाव -

ऋतु	रसोत्पत्ति
शिशिर (Extreme winter)	तिक्त
वसन्त (Spring)	कषाय
ग्रीष्म (Summer)	कटु
वर्षा (Rainy season)	अम्ल
शरद् (Autumn)	लवण
हेमन्त (Early winter)	मधुर

रस और अनुरस में भेद -

तत्र व्यक्तो रसः स्मृतः ॥

अव्यक्तोऽनुरसः किञ्चिदन्ते व्यक्तोऽपि चेष्यते । अ.ह.सू. 9/3-4

द्रव्य में स्थित व्यक्त रस → रस — ऋत्यै

अन्त में व्यक्त होनेवाला रस → अनुरस — ऋत्यै

लक्षण -

मधुर रस -

स्नेहनप्रीणनाह्लादनमार्दवैरुपलभ्यते ।

मुखस्थो मधुरश्चास्यं वापुर्वेल्लिम्पतीव च ॥ च.सू. 26.74

स्नेहन, प्रीणन, आह्लादन, मार्दव गुणों से मुख में स्थित मधुर रस

2020-7-1

मुख के चारों ओर फैलता हुआ मुख को लिप्त कर देता है, वह मधुर रस है।

अम्ल रस -

दन्तहर्षन्मुखास्त्रावात् स्वेदनाम्मुखबोधनात्।
विदाहाच्चास्यकण्ठस्य प्राशयैवाम्लं रसं वदेत्॥ च.सू. 26.75

दन्तहर्ष से, मुख स्त्राव से, स्वेद उत्पन्न करने से, मुख बोधन की शक्ति को उत्पन्न करने से, मुख एवं कण्ठ में विदाह करने से तथा प्राशन से इसे अम्ल रस कहते हैं।

लवण रस -

प्रलीयन् क्लेदविष्यन्दमार्दवं कुरुते मुखे।
यः शीघ्रं लवणो ज्ञेयः स विदाहाम्मुखस्य च॥ च.सू. 26.76

जो मुख में रखा हुआ शीघ्र ही प्रलीन कर देता है, क्लेदन, विष्यन्दन और मृदुता करता है और मुख में विदाह उत्पन्न करता है – वह लवण रस है।

कटु रस -

संवेजयेद्यो रसानां निपाते तुदतीव च।
विदहन्मुखनासाक्षि संस्त्रावी स कटुः स्मृतः॥ च.सू. 26.77
जो जिह्वा पर रखने मात्र से घबराहट उत्पन्न करे, जिह्वा पर चुभने सी

पीड़ा करे, दाहकारक हो, मुख, नासिक और नेत्र से स्त्राव उत्पन्न करे वह कटु रस है।

तिक्त रस -

प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च।
स तिक्तो मुखवैशद्यशोषप्रह्लादकारकः॥ च.सू. 26.78

जो जिह्वा को कट्ट दे, अन्य रस का ज्ञान न होने दे, मुख विशदता को दूर कर प्रह्लादकारक हो – वह तिक्त रस है।

कथाय रस -

वैशद्यस्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्गः।
बधनातीव च यः कण्ठं कथायः स विकास्यपि॥ च.सू. 26.79

जो जिह्वा की विशदता को दूर करे परन्तु जाड़यता भी उत्पन्न करे, कण्ठ बँधन करे और जो विकासी गुण का हासक हो – वह कथाय रस है।

कर्म -

० मधुर रस -

तत्र, मधुरो रसः शारीरसात्प्याद्रसरुधिरमांसमेदोस्थिमज्जौजः-
शुक्राभिवर्धन आयुष्यः षडिन्द्रियप्रसादगो बलवर्णकरः
पित्तविषमारुतघस्तृष्णादाहप्रशमनस्त्वच्यः क्लेशः कण्ठ्यो
बल्यः प्रीणनो जीवनस्तरपर्णो बृहणः स्थैर्यकरः क्षीणक्षत-

2020-7-11

सन्धानकरो द्वाणमुखकण्ठौष्ठजिह्वाप्रहलादनो दाहमूर्च्छाप्रशमनः
घटपदपिरीलिकानामिष्टतमः स्निग्धः शीतो गुरुश्च।

च.सू. 26.43(1)

• अम्ल रस -

अम्लो रसो भक्तं रोचयति, अग्निं दीपयति, देहं बृहयति
ऊर्जयति, मनो बोधयति, इन्द्रियाणि दृढीकरोति, बलं वर्धयति,
वातमनुलोमयति, हृदयं तर्पयति, आस्यमास्त्रावयति,
भुक्तमपकर्षयति, क्लेदयति जरयति, प्रीणयति, लघुरुष्णः
स्निग्धश्च।

च.सू. 26.43(2)

• लवण रस -

लवणो रसः पाचनः क्लेदनो दीपनश्चयावनश्छेदनो
भेदनस्तीक्ष्णः सरो विकास्यथः स्नांस्यवकाशकरो वातहरः
स्तम्भबन्धसंघातविधमनः सर्वरसप्रत्यनीकभूतः,
आस्यमास्त्रावयति, कफं विष्यन्दयति, मार्गान् विशोधयति,
सर्वशरीरावयवान् मृदूकरोति, रोचयत्याहारम्, आहारयोगी,
नात्यर्थं गुरुः स्निग्ध उष्णश्च।

च.सू. 26.43(3)

• कटु रस -

कटुको रसो वक्त्रं शोधयति, अग्निं दीपयति, भुक्तं शोषयति,
द्वाणमास्त्रावयति, चक्षुविर्गेचयति, स्फुटीकरोतीन्द्रियाणि,

अलसकश्चयथूपचयोदर्दीभिष्यन्दस्नेहस्वेदक्लेदमलानुपहन्ति,
रोचयत्यशनं, कण्डूविनाशयति, व्रणानवसादयति, क्रिमीन्
हिनस्ति, मांसं विलिखति, शोणितसंघातं भिनति,
बन्धांश्छिनति, मार्गान् विवृणोति, श्लेष्माणं शमयति,
लघुरुष्णो रुक्षश्च।

च.सू. 26.43(4)

• तिक्त रस -

तिक्तो रसः स्वयमरोचिष्णुरप्यरोचकघ्नो विषष्टः क्रिमिन्
मूर्च्छदाहकण्डूकुष्ठतृष्णाप्रशमनस्वडमांसयोः स्थिरीकरणो
ज्वरघ्नो दीपनः पाचनः स्तन्यशोधनो लेखनः
क्लेदमेदोवसामज्जलसीकापूयस्वेदमूत्रपुरीषपित्तश्लेष्मोपशोषणो
रुक्षः शीतो लघुश्च।

च.सू. 26.43(5)

• कषाय रस -

कषायो रसः संशमनः संग्राही सन्धानकरः पीडनो रोपणः
शोषणः स्तम्भनः श्लेष्मरक्तपित्तप्रशमनः शरीरक्लेदस्योपयोक्ता
रुक्षः शीतोजलघुश्च।

च.सू. 26.43(6)

रस	कर्म
मधुर रस	<ul style="list-style-type: none"> - आजन्म सात्य होने से धातुओं को प्रबल वल देना - बाल, वृद्ध, क्षत, क्षीण, वर्ण, केश और इन्द्रियाँ तथा ओज के लिये प्रशस्त

रस	कर्म
	<ul style="list-style-type: none"> - वृंहण - कण्ठग - स्तन्यवर्धक - सम्धानकृत् - गुरु - आयुवर्धक - जीवन - स्निग्ध - पित्त, वायु और विष को नष्ट करने वाला
अम्ल रस	<ul style="list-style-type: none"> - अग्निदोषक - स्निग्ध - हृदय - पाचन - रोचन - उत्त्वावीर्य - शीत स्पर्श वाला - प्रीणन - बलेदन - लघु - कफ, रक्त एवं पित्तवर्धक - मूढ़ वात का अनुलोमन
लवण रस	<ul style="list-style-type: none"> - स्तम्भ, संधात और बन्ध का नाशक - अग्निवर्धक - स्नेहन - स्वेदन - तीक्ष्ण - रोचन - छेदन - भेदन
तिक्क रस	<ul style="list-style-type: none"> - स्वयं ही अरोचक होने पर भी असुचिनाशक - कृत्त्वा - तुष्णा - विष - कुष्ठ - मूर्च्छा - ज्वर - उत्क्लेश - दाह और पित्तकफ नाशक - बलेद, मेद, वसा, मज्जा, मल, मूत्र का शोषक - लघु - मेध्य - शीत - रुक्ष - स्तन्यशोधक - कण्ठशोधक
कटु रस	<ul style="list-style-type: none"> - गलरोग - उदर्द - कुष्ठ - अलसक - शोफ नाशक - व्रणाकरसादन नाशक

रस	कर्म
	<ul style="list-style-type: none"> - स्नेह, मेद और बलेद उपशोषक - दीपन - पाचन - रुचिकर - शोधन - अन्न शोषक - अवरोधों को दूर करना - स्रोतों को फैलाना - कफबन
कषाय रस	<ul style="list-style-type: none"> - पित्तकफहर - गुरु - रक्तशोधक - पीडन - रोपण - शीत - बलेद और मेद का शोषक - आमस्ताभ - ग्राही - रुक्ष - त्वचा को अतिनिर्भल करने वाला

रसों की तुलनात्मक गुणवत्ता -

रस	शीतता एवं औषध्य	गुरुता एवं लघुता	लक्ष्यता एवं स्निग्धता
मधुर	शीततम	गुरुतम	स्निग्धतम
अम्ल	उत्त्वातर	लघु	स्निग्धतर
लवण	उत्त्वातम	गुरु	स्निग्ध
कटु	उत्त्वा	लघुतर	रुक्षतर
तिक्क	शीत	लघुतम	रुक्ष
कषाय	शीततर	गुरुतर	रुक्षतम

रसों का अधोवात-मूत्रादि मलों पर प्रभाव -

मधुर - अम्ल - लवण	वात - मूत्र - पुरीष निकालने में सुखदायक
कटु - तिक्क - कषाय	वात - मूत्र - पुरीष निकालने में दुःखदायक

बहुस द्वारा दोष कोपन एवं शमन –

स्वाद्वम्ललवणा वायुं, कषायस्वादुतिक्तकाः।
जयन्ति पित्तं, श्लेष्माणं कषायकटुतिक्तकाः॥
(कट्वम्ललवणाः पित्तं, स्वाद्वम्ललवणाः कफम्।
कटुतिक्तकषायाश्च कोपयन्ति समीरणम्॥॥॥) च.सू. 1.66(1)

रस	वात दोष पर प्रभाव	पित्त दोष पर प्रभाव	कफ दोष पर प्रभाव
मधुर (Sweet)	क्षय	क्षय	वृद्धि
अम्ल (Sour)	क्षय	वृद्धि	वृद्धि
लवण (Salty)	क्षय	वृद्धि	वृद्धि
तिक्त (Bitter)	वृद्धि	क्षय	क्षय
कटु (Pungent)	वृद्धि	वृद्धि	क्षय
कपाय (Astringent)	वृद्धि	क्षय	क्षय

रस अतियोगजन्य लक्षण एवं विकार –

सदर्भ – अ.ह.सूत्रस्थान अध्याय 9

रस	अतियोगजन्य लक्षण एवं विकार
मधुर रस	- मेदोज रोग - श्लेष्मज रोग - स्थौल्य - अग्निमान्द्य - सन्न्यास - प्रमेह - गलगण्ड - अर्बुदादि विकार
अम्ल रस	- शैथिल्य - तिमिर - भ्रम - कण्ठ - पाण्डुरोग - वीसर्प - शोफ - विस्फोट - तुष्णा - ज्वर

अतियोगजन्य लक्षण एवं विकार

लवण रस	- वातरक्त - खालित्य - पलित - वलि पड़ना - तुष्णा - कुष्ठ - विषु - विसर्प - बल का हास
तिक्त रस	- धातुक्षय - वातव्याधि
कटु रस	- तुष्णा - शुक्रक्षय - बलक्षय - मुच्छा - सिरादि का संकोच - कम्प - कटि एवं पृष्ठादि में व्यथा
कषाय रस	- विष्टम्भ - आध्मान - हृत्प्रदेश में वेदना - तुष्णा - कार्श्य - पौरुषध्रुंश - स्रोतोरोध - मलग्रह

रसोपलब्धि में हेतु –

प्रत्क्षतोऽनुमानादुपदेशतश्च रसानामुपलब्धिः। र.वै. 3.108

प्रत्यक्ष, अनुमान एवं उपदेश प्रमाण से रसों का ज्ञान होता है।

आहार में रस –

नित्यं सर्वरसाभ्यासः स्वस्वाधिक्यमृतावृतौ॥ अ.ह.सू. 3/57

पूर्वं मधुरमश्नीयान्मध्येऽम्ललवणौ रसौ॥

पश्चाच्छेषान् रसान् वैद्यो भोजनेष्वचारयेत्। सु.सू. 46.460-461

- सर्वप्रथम मधुर रसात्मक द्रव्यों का सेवन।

- मध्य में अम्ल एवं लवण रसात्मक द्रव्यों का सेवन।

- अन्त में कटु-तिक्त-कषाय रसात्मक द्रव्यों का सेवन।

औषधि में रस -

दोषावस्था	प्रयोग काल	प्रयोक्तव्य रस	रस प्रयोग का आधार
वातज	आदि	लवण	<ul style="list-style-type: none"> प्रक्लेदि गुण द्वारा वायु के विबन्ध का शमन उष्ण गुण द्वारा वायु की शीतता का शमन गुरु गुण द्वारा वायु की लघुता का शमन
	मध्य	अम्ल	<ul style="list-style-type: none"> तीक्ष्ण गुण द्वारा अवरुद्ध स्रोतों को खोलना उष्ण गुण द्वारा विमार्गागमी वायु का अनुलोमन
	अन्त	मधुर	<ul style="list-style-type: none"> गुरु गुण द्वारा वायु की लघुता का शमन पिच्छिल गुण द्वारा वायु की विशदता का शमन स्निग्ध गुण द्वारा वायु के रुक्ष गुण का शमन
पित्तज	आदि	तिक्त	<ul style="list-style-type: none"> आमपित्त का पाचन

दोषावस्था	प्रयोग काल	प्रयोक्तव्य रस	रस प्रयोग का आधार
मध्य	मध्य	मधुर	<ul style="list-style-type: none"> शीत-गुरु-स्निग्ध एवं माधुर्य द्वारा पित्त का शमन
	अन्त	कषाय	<ul style="list-style-type: none"> रुक्षता एवं शोषण धर्म द्वारा पित्त के द्रवत्व का नाश
कफज	आदि	कटु	<ul style="list-style-type: none"> कफ की पिच्छिलता एवं गौरवता का नाश
	मध्य	तिक्त	<ul style="list-style-type: none"> मुखगत माधुर्य का नाश कर कफ का शोषण
अन्त	कषाय		<ul style="list-style-type: none"> कफ के स्नेहर्षा का नाश एवं कफोत्पत्ति का अन्त

रस भेद - 63

- एक रस - 6 ✓
- द्विक रस - 15 ✓
- त्रिक रस - 20 ✓
- चतुष्क रस - 15 ✓
- पञ्चक रस - 6 ✓
- षट्क रस - 1 ✓

द्रव्यगुण विज्ञान

40

रस प्राधान्य -

- | | | |
|-------------|---------------------|---------------|
| (1) आगमात् | (2) उपदेशात् | (3) अनुमानात् |
| (4) आप्तवचन | (5) रसेषु गुणसंज्ञा | |

• • •

5. विपाक

निरुक्ति -

विशिष्टः जरणनिष्ठाकाले रसविशेषस्य पाकः

प्रादुर्भावः विपाकः।

प्राचनक्रिया के अन्त में उत्पन्न विशिष्ट रस को 'विपाक' कहते हैं।

पर्याय - निष्ठापाक

लक्षण -

जाठरेणाग्निना योगाद्यदेति रसान्तरम्।

रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः॥ १०/२०

रसयुक्त द्रव्यों का जठरानि द्वारा पाक हो जाने के पश्चात् जो रसान्तर (अन्य रस) उत्पन्न होता है, वह 'विपाक' कहलाता है।

विपाकः कर्मनिष्ठ्या।

च.सू. 26.66

द्रव्यों का जो चरम कर्म शरीर पर परिलक्षित होता है, वह 'विपाक' कहलाता है।

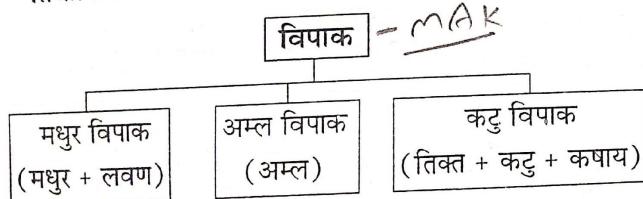
द्रव्यगुण विज्ञान

विपाक इति पाकः पचनं द्रव्याणां स्वरूपरसयोः परावृत्तिः।
 सा च स्वरूपान्तरत्वेन रसान्तरत्वेन परिणतिः, तस्या विशेषो
 विपाकः। कविराज गंगाधर राय
 परिणामलक्षणो विपाकः। रसवैशेषिक
 परिणाम या रूपान्तर होना या जारण होना विपाक का लक्षण है।

संख्या -

आचार्य चरक एवं वाग्भट मतेन - 3

स्वादुः पटुश्च मधुरमलोऽम्लं पच्यते रसः।
 तित्तोषणकषायाणां विपाकः प्रायशः कटुः॥ अ.ह.सू. 9/21



आचार्य सुश्रुत मतेन - 2

आगमे हि द्विविधं एव पाको मधुरः कटुकश्च।
 तयोर्मधुराख्यो गुरुः, कटुकाख्यो लघुरिति।
 तत्र पृथिव्यप्तेजोवाव्याकाशानां द्वैविध्यं भवति गुण-
 साधार्यादगुरुता लघुता च; पृथिव्यापश्च गुर्व्यः, शेषाणि लघूनि;
 तस्माद्विविधं एव पाक इति॥ सु.सू. 40.10

आगम प्रमाण एवं पञ्चमहाभूतों के आधार पर मधुर एवं कटु भेद से विकार दो प्रकार होता है। इनमें मधुर विपाक गुरु तथा कटु विपाक लघु होता है। पञ्चमहाभूतों के गुणों की साम्यता से गुरु या लघु विपाक होता है अर्थात् पृथिवी और जल महाभूत के कारण गुरु विपाक एवं शेष तीन (अग्नि, आकाश, वायु) के कारण लघु विपाक होता है।

विपाक के कर्म -

मधुर विपाक -

मधुरः सृष्टविष्णमूत्रो विपाकः कफशुक्रलः॥ च.सू. 26.61

अम्ल विपाक -

पित्तकृत् सृष्टविष्णमूत्रः पाकोऽम्लः शुक्रनाशनः॥ च.सू. 26.62

कटु विपाक -

शुक्रहा बद्धविष्णमूत्रो विपाको वातलः कटुः॥ च.सू. 26.61

विपाक	शुक्र पर परिणाम	मल पर परिणाम	दोष पर	स्वभाव
मधुर विपाक	शुक्रल	सृष्ट विद्मूत्र	कफवर्धक	गुरु
अम्ल विपाक	शुक्रनाश	सृष्ट विद्मूत्र	पित्तकृत्	लघु
कटु विपाक	शुक्रनाश	बद्ध विद्मूत्र	वातल	लघु

विपाकों की गौरवता एवं लाघवता -

तेषां गुरुः स्यान्मधुरः कटुकाम्लावतोऽन्यथा ॥ च.सू. 26.62

विपाक	स्वभाव
मधुर विपाक	गुरु
अम्ल विपाक	लघु
कटु विपाक	लघु

विपाक प्राधात्य -

- (1) तन्निमित्तत्वात् प्रशमनवर्धनयोः ।
 - (2) भानुपदेहात् ।
 - (3) विपाकापेक्षत्वादितरेषां, प्रायशो विपाकसाद्गुण्ये च गुणवत्तामध्यदोषात् ।
 - (4) शास्त्रप्रामाण्यात् ।
 - (5) तदभावे चिकित्साभंवात् ।
 - (6) आरोग्यप्रयोजनत्वादायुर्वेदस्य, सम्यग्विपाके तदुपलब्धेः ।
- • •

6. वीर्य

निरुक्ति -

वीरयते विक्रान्तः कर्मसमर्थो भवति अनेन इति वीर्यम् ।
जिसके द्वारा द्रव्य कर्मसम्पादन में समर्थ होता है, उसे 'वीर्य' कहते हैं।

लक्षण -

येन कुर्वन्ति, तद्वीर्यम् । च.सू. 26.13

जिससे कार्य करते हैं वह वीर्य है।

वीर्य तु क्रियते येन या क्रिया । च.सू. 26.65

जिससे जो क्रिया की जाती है, उसे उसका वीर्य कहते हैं । क्योंकि बिना वीर्य के किसी कार्य का सम्पादन नहीं किया जा सकता, अतः जितनी क्रियायें हैं, वे सब वीर्य से ही की जाती हैं ।

कर्मलक्षणं वीर्यम् । रसवैशेषिक 11।1169

कर्म लक्षण ही 'वीर्य' है।
 वीर्य शक्तिर्वेन द्रव्यं कुरुते कर्म सर्वदा।
 नावीर्यं कुरुते किञ्चित् सर्वा वीर्यकृताः क्रियाः॥

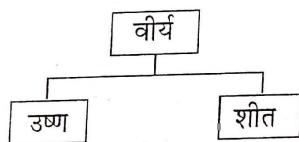
प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.39

वीर्य वह शक्ति है जिससे द्रव्य अपना कर्म करने में समर्थ होता है।
 बिना वीर्य के कोई द्रव्य कर्म नहीं कर सकता क्योंकि सभी कर्म वीर्य से ही
 सम्पन्न होते हैं।

द्विविध वीर्य -

उष्णशीतगुणोत्कर्षात्तत्र वीर्य द्विधा स्मृतम्।

अ.ह.सू. 1/17

द्विविध वीर्य के कर्म -

तत्रोष्णं भ्रमतृङ्गलानिस्वेददाहाशुपाकिताः॥
 शमं च वातकफयोः करोति, शिशिरं पुनः।
 ह्लादनं जीवनं स्तम्भं प्रसादं रक्तपित्तयोः॥ अ.ह.सू. 9.18-19

उष्ण वीर्य के कर्म	शीत वीर्य के कर्म
- भ्रम	- ह्लादन
- तृड़	- जीवन
- ग्लानि	- स्तम्भ
- स्वेद	- रक्त एवं पित्त प्रसादन
✓ दाह	
- आशुपाक	
- वातकफशमन	

अष्टविध वीर्य -

संख्या	वीर्य	भूतोत्कर्ष
1	शीत	पृथिवी + जल
2	उष्ण	अग्नि
3	स्निग्ध	जल
4	रुक्ष	वायु
5	गुरु	पृथिवी + जल
6	लघु	अग्नि + वायु + आकाश
7	मृदु	जल + आकाश
8	तीक्ष्ण	अग्नि

आचार्य मुश्तुत ने सूक्तस्थान के 41वें अध्याय में गुरु एवं लङ्घु के स्थान पर पिञ्चल और विशद को बीर्य कहा है। पिञ्चल बीर्य में जल तथा विशद बीर्य में पृथिवी + वायु की प्रथानता होती है।

पञ्चदशा बीर्य -

आचार्य निमि मत्तेन - 15

बीर्य की उपलब्धि में हेतु -

बीर्य यावदथीवासान्निपाताच्चोपलभ्यते ॥

च.सू. 26.66

इत्यगत बीर्य का ज्ञान शरीर के साथ सम्बन्ध (निपात) होने से लेकर जब तक वह शरीर के अन्दर रहता है (आधिवास), तब तक शरीर पर होने वाली उसकी क्रियाओं द्वारा होता है।

बीर्य की प्रथानता -

सत्तर्प - रसवेशोषिक

- (1) आदोपदेश
- (2) तुल्यरसगुणेषु विशेषात्
- (3) कर्मकारणात्
- (4) बीर्यप्राधान्याद् द्रव्याणाम्

• • •

7. प्रभाव

निरुक्ति -

प्रभवति सामर्थ्यविशिष्टं भवति इत्यमनेन इति प्रभावः ।
अजिसके कारण इत्य में विशिष्ट सामर्थ्य उत्पन्न होता है, उसे 'प्रभाव' कहते हैं।

लक्षण -

रसबीर्यविपाकानां सामान्यं चत्र लक्ष्यते।

विशेषः कर्मणां चैव प्रभावस्तस्य स्मृतः ॥

च.सू. 26.67

..... प्रभावोऽचिन्त्य उच्यते ॥

च.सू. 26.70

(दो या दो से अधिक द्रव्यों के रसादि में अनुरूपता अर्थात् समानता रहते हुए भी जहों कर्मों की विशेषता रेखी जाती है) - वह कर्म प्रभावज्ञ होता है।

(रसादिसाम्बे यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावज्ञम्) अ.ह.सू. 9.26

प्रभाव

रस एवं विपाक आदि की समानता होने पर भी उन उन द्रव्यों का जो प्रमुख कर्म होता है उसमें प्रभाव ही कारण है।

प्रभावः स विशिष्टा या कर्मशक्तिः स्वभावजा।

शिरीषस्य विषष्टात्वं यथा हृद्यत्वमर्जुने ॥ प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.47

द्रव्य की स्वाभाविक विशिष्ट शक्ति को 'प्रभाव' कहते हैं। यथा -
शिरीष का विषष्ट और अर्जुन का हृद्य प्रभाव आदि।

पर्याय - - विशिष्ट शक्ति - अचिन्त्य शक्ति - अमीमास्य

शक्ति

- अतवर्य शक्ति - अनवधारणीय

उदाहरण -

कटुकः कटुकः पाके बीयोज्ञाश्विनको मतः।

तड्डहन्ती प्रभावात् विरेचयति मानवम् ॥

विषं विषष्टमुक्तं यत् प्रभावसत्र कारणम्।

ऊद्धवानुलोमिकं यच्च तत् प्रभावप्रभावितम् ॥

मणीनां धारणीयानां कर्म यद्विविधात्मकम्।

तत् प्रभावकृतं तेषां प्रभावोऽचिन्त्य उच्चते ॥ च.सु. 26.68-70

- चित्रक एवं दन्ती के समान गुणयुक्त होने पर भी दन्ती की विरेचन

कार्मकर्ता

- विषों की विषष्टता

- वस्त्र द्रव्यों की ऊर्ज्ज्वरा गति

- विरेचन द्रव्यों की अधः गति

- मणी आदि के कर्म आदि।

मणिमन्त्रादियोगानां कर्माचिन्त्यञ्च यत् पुनः ॥ प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.48

प्रभावजन्य कर्मों का वर्गीकरण -

1. ओषधीय कर्म (AARM B)

2. आगदीय कर्म

3. रक्षोजन कर्म

4. मानस कर्म

5. भौतिक कर्म

(समान-प्रत्यारब्ध एवं विचित्र-प्रत्यारब्ध द्रव्य)

समान-प्रत्यारब्ध द्रव्य - जिन द्रव्य विषेषों में द्रव्य और तदाश्रित रसादि का भौतिक संगठन समान हो उन्हें 'समान-प्रत्यारब्ध द्रव्य' कहते हैं। इन द्रव्यों में रसादि के अनुकूल ही कर्म होते हैं।

विचित्र-प्रत्यारब्ध द्रव्य - जिन द्रव्य विषेषों में द्रव्य और तदाश्रित रसादि का भौतिक संगठन भिन्न-भिन्न हो उन्हें 'विचित्र-प्रत्यारब्ध द्रव्य'

कहते हैं। इन द्रव्यों में रसादि से भिन्न प्रकार के कर्म होते हैं। यथा -

२०२८ - इन्हें लोटा दिया गया है।

इति सामान्यतः कर्म द्रव्यादीनां पुनश्च तत् ॥

विचित्रप्रत्ययारब्धाद्रव्यभेदेन भिद्यते ।

अ.ह.सु. 9.27-28

उदाहरण -

स्वादुर्गुरुश्च गोधूमो वातजिद्वातकृद्यवः ॥

उज्जा मत्स्याः पथः शीतं कटुः सिंहो न शूलकः ॥

अ.ह.सु. 9.28-28½

8. कर्म

प्रभाव का प्राधान्य -

सन्दर्भ - रसवैशेषिक 1.132-140

- (1) अचिन्त्यतात्
- (2) दैवीप्रतीष्ठात्
- (3) विषप्रतीष्ठात्
- (4) दर्शनाच्छ्वलणात्
- (5) तुल्यसंगुणेषु विशेषात्
- (6) दर्शनाच्छ्वाङ्गादीनां कर्मणम्
- (7) आगमात्

• • •
कर्तव्यस्य क्रिया कर्म कर्म नान्यदपेक्षते ॥
संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमान्त्रितम्।

क्रियते इति कर्म।
जो किया जाय उसे 'कर्म' कहते हैं।

च.सु. 1.52

जो संयोग और विभाग में अनपेक्ष (स्वतन्त्र) कारण हो तथा द्रव्य में
आश्रित हो उसे कर्म कहते हैं। कर्तव्य की क्रिया को कर्म कहते हैं। पूर्वोक्त
संयोग और विभाग के लिए कर्म किसी अन्य साधन की अपेक्षा नहीं
रखता।

प्रयत्नादि कर्म चेतितमुच्यते।

च.सु. 1/49

प्रयत्न आदि चेत्याओं को कर्म कहा जाता है।

→ प्रयत्न - S.P - M.G - D.M.E
→ प्रयत्न - U.P - D.G - D.M.D.E

एकद्रव्यमण्डं संयोग विभागेवनपेक्षकारणमिति कर्मलक्षणम्।

वै द 1/17

एक द्रव्य के आश्रित रहनेवाला, अणु (गुण रहित) तथा संयोग -
विभाग का निरपेक्ष (अन्य की अपेक्षा न रखते वाला) कारण कर्म
कहलाता है।

कर्मवाङ्मनः शरीरप्रवृत्तिः।

च.सू. 11/39

वाणी, मन और शरीर की चेष्टाओं को कर्म कहते हैं।

कर्म तत् क्रियते द्रव्येचर्त् संयोगविभागकृत्।

प्राणिनामपि यत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते॥। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.53

कर्म उसे कहते हैं - जो द्रव्यों द्वारा संयोग एवं विभाग के रूप में
किया जाता है। प्राणियों की प्रयत्नमूलक चेष्टा को 'कर्म' कहते हैं।

पर्याय -

प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यार्थी, सैव क्रिया, कर्म, यत्नः
कार्यसमाराभश्च॥।

च वि 8.77

- चेष्टा - क्रिया - कर्म - यत्न - कार्य समारभ

कर्म के विषय में षट् विचारणीय विषय -

यत् कुर्वन्ति, तत् कर्म; येन कुर्वन्ति, तद्वीर्य; यत्र कुर्वन्ति,
तदधिकरणं; यदा कुर्वन्ति, स कालः; यथा कुर्वन्ति, स उपायः;
यत् साध्यति, तत् फलम्।

च.सू. 26.13

- | | | |
|----------|-----------|------------|
| (1) कर्म | (2) वीर्य | (3) अधिकरण |
| (4) काल | (5) उपाय | (6) फल |
- दर्शीकरण -
प्रयोग भेद से - 3

(1) स्थानिक कर्म (local action)

(2) सावर्देहिक कर्म (generalized/ systemic action)

कर्म (generalized/ systemic action) का
सावर्देहिक कर्म (generalized/ systemic action) का
वर्गीकरण -

नाड़ीसंस्थान -

- | | | |
|---------------|---------------|------------------|
| (1) मेघ | (2) मदकारी | (3) संज्ञास्थापन |
| (4) निद्राजनन | (5) निद्राशमन | (6) बेदनास्थापन |
| (7) आक्षेपजनन | (8) आक्षेपशमन | (9) ज्वरञ्ज |

(10) विदाही

रक्तवह संस्थान -

- | | | |
|------------------|------------------|-----------------|
| (1) हृदय | (2) हृदयोत्तेजक | (3) हृदयावसादक |
| (4) रक्तभारवद्धक | (5) रक्तभाराशामक | (6) रक्तस्तम्भक |

लसीका संस्थान -

(1) शोथहर

(2) शोथजनन

शसन संस्थान -

- (1) शसन केन्द्रोत्तेजक
- (2) शसन केन्द्रावसादक
- (3) क्षसनोत्तेजक
- (4) छेदन
- (5) कासहर
- (6) श्वासहर
- (7) हिक्कानिग्रहण
- (8) कण्ठय
- (9) श्लोभपूतिहर

पाचन संस्थान -

- (1) लालाप्रसेकजनन
- (2) लालाप्रसेकशमन
- (3) तुष्णानिग्रहण
- (4) मुखदोर्गन्ध्यनाशक
- (5) वैशधाकारक
- (6) तुष्टिघ्न
- (7) रोचन
- (8) दीपन
- (9) पाचन
- (10) विदाही
- (11) अनुलोमन
- (12) वर्मन
- (13) वर्मनोपग
- (14) छर्दिनिग्रहण
- (15) उरीपसंग्रहणीय - (अ) ग्राही एवं
(ब) स्तम्भन
- (16) पुरोषविरजनीय
- (17) शूलप्रशमन
- (18) आस्थापन
- (19) अनुवासन
- (20) संशोधन
- (21) कृमिद्ध
- (22) पित्तविरोचक
- (23) अशोचन
- (24) ख्लीहध्य

प्रजनन संस्थान -

- स्त्री प्रजजन संस्थान -
- (1) प्रजास्थापन
- (2) आर्तवजनन
- (3) स्तन्यजनन
- (4) स्तन्यशोधन

पुरुष प्रजनन संस्थान - (1) वाजीकरण

- (अ) शुक्रजनन
- (ब) शुक्रस्तम्भन
- (क) शुक्ररोचन
- (ड) शुक्रशोधन

मूत्रवह संस्थान -

- (1) मूत्रविरेचनीय
- (2) मूत्रविरजनीय
- (3) मूत्राशमरीजन
- (4) मूत्रसंग्रहणीय
- (5) मूत्रविशोधन

ज्ञानेन्द्रिय -

- चक्षुरिन्द्रिय - (1) चक्षुष्य
- श्रोत्रेरिन्द्रिय - (1) कण्ठ
- ग्राणेन्द्रिय - (1) नास्य
- रसनेन्द्रिय - (1) रस्य
- स्पर्शनेन्द्रिय - (1) स्पर्श
- (2) स्वेदजनन
- (3) विदाही
- (4) स्नेह
- (5) वर्ण
- (6) कण्डून
- (7) कुच्छ
- (8) उदर्दीप्रशमन

विविध कर्मभेद

कर्म	परिभाषा	उत्तराहण
दीपन	पचेनामं बहिकृत्य दीपनं तद्यथा मिशः । शा पू 4.1	- मिशा दीपयत्यनलं चब्दं दीपनं रामठं यथा । प्रि.नि.इव्यादिवर्ग. 54
पाचन	पचत्यामं न वहिं च कुर्याद्यत्तिब्दं पाचनम् ।	- रामठ नागकेशरवद्विद्याल्लित्रो दीपनपाचनः । शा पू 4.1-2
	यदपक्वं पाचयति पाचनं बीजपूरकम् । प्रि.नि.इव्यादिवर्ग.54	- नागकेशर - बीजपूरक
संसोधन	स्थानादबहिनियेदध्वंपथो वा मत्संचयम् । देहसंसोधनं तत्प्यादेवतालीफलं यथा । शा पू 4.8-9	- देवताली फल
	मलानिरस्य दोषादीन् देहं शोधयतीह यत् । दत्व्यं तच्छोधनं ज्ञेयं पदनं त्रिवृता यथा । प्रि.नि.इव्यादिवर्ग.63	- मद्दन
संशोधन	न शोधयति न ह्वेष्टि समान् दोषासंथोद्धतान् ॥	- अमृता

कर्म

कर्म	परिभाषा	उत्तराहण
अनुलोमन	समीकरोति विषमाज्ञामनं तद्यथाऽमृता । शा पू 4.2-3	शमयत् कुपितं दोषं यदा संशोधनं विना । निवारयति वैषष्यं शमनं तद्यथाऽमृता । प्रि.नि.इव्यादिवर्ग.62
लसन	कृत्वा पाकं मलानां यज्ज्वल्त्वा बन्धमधो तत्त्वानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी । शा पू 4.3-4	नयेत् ॥ - हरीतकी अपानं निजमागेषु प्रेरयन्मारुतं मलान् । बहिमुखान् यथा शुण्ठी कुरुते तद्दु- लोमनम् ॥ प्रि.नि.इव्यादिवर्ग.56
प्रेत	पक्व्यं यदपक्वलैव शिलाद्वं कोष्ठे मलादिकम् । नयत्यधः क्रम्सनं तद्यथा स्मारकतमालकः ॥ शा पू 4.4-5	- कृतमालक
प्रदन	मलादिकमबद्वं च बद्वं वा पिण्डितं मलैः ॥ भित्त्वाद्यः पातयति तद्देदनं कटुकी यथा । शा पू 4.5-6	- चित्रक

कर्म	परिभाषा	उत्तराहण
भिन्नति पिण्डितं गुल्मं पुरोषनिचयन्तथा। शक्त्या तद् भेदनं ज्ञेयं चित्रकः कटुका यथा ॥	प्रि.नि.इत्यादिवर्ग.57	- कटुका
विपक्वं चतुपक्वं वा मलादि द्रवता नयेत् ॥ रेचनं रेचयत्यपि तज्जंयं रेचनं त्रिवृता यथा ।	शा पृ 4.6-7	- त्रिवृत्
छेदनं शिलालक्षणगदिकान्दोषादुभूलयति यद्बलात् ॥	शा पृ 4.9-10	- क्षार
छेदनं तद्यथा क्षारा मरिचानि शिलाजतु । निःसारयेच्छेदनं तद् यवक्षारो यथोषणम् ॥	प्रि.नि.इत्यादिवर्ग.68	- शिलाजतु
लोखनं धातूमलाना देहस्य विशोष्योल्लोखयेच्च लोखनं तद्यथा क्षौद्रं नीरमुण्णं वचा चवा: ।	शा पृ 4.10-11	- मधु

कर्म	परिभाषा	उत्तराहण
रौक्ष्याच्छरीरथात् यच्छोपयित्वा तु देहं तल्लेखनं प्रोक्तं यथा क्षौद्रं वचा यवा: ॥	प्रि.नि.इत्यादिवर्ग.69	- यव
ग्राही दीपनं पाचनं यत्स्यादुष्टात्वाद्वशोषकम् ॥ ग्राहि तत्त्वं यथा शुण्ठी जीरकं गजपिपली । भुक्तं गृहणाति सम्पर्कं ग्रहणीबलवर्धनम् । ग्राहि तड्डाकटुकं जीरं जातीफलं यथा ॥	शा पृ 4.11-12	- शुण्ठी - जीरक - गजपिपली - जातीफल
स्तम्भन रौक्ष्याच्छरीरथात्वाल्लुपाकाळ्य वातकृत्स्तम्भनं तत्स्याद्यथा वत्सकटुक्लो । स्तम्भनं शैत्यजननात् संस्तम्भयति यत्तनुम् । यथा हिमस्य संस्पर्शः हिमपोट्टिलकाधृतिः ॥	प्रि.नि.इत्यादिवर्ग.58	- वत्सक - टुक्क - हिम स्पर्श - हिम पोट्टिली

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
मदकारी	बुद्धं लुप्ति यदृद्व्यं मदकारि तदुच्चते ॥ तमोगुणप्रधानं च यथा मद्यं सुरादिकम् । शा पू 4.21-22	- मद्य - सुरा - भंगा
प्रमाथी	कार्याकार्याक्वेकं यच्छन्ति मदकारि तत् । यथा भांगाहिफेन स्युमद्यानि विविधानि च ॥ प्रिनि.द्रव्यादिवर्ग.77	- अहिफेन
निरस्याति प्रमाथी स्यातद्यथा मरिचं वचा । शा पू 4.23-24	- मरिच	
आभिष्यान्त	द्रव्यं तेष्यगौषधयत्वेशद्यसृष्ट्यमत्वात् स्रोतसां मुखम् । प्रमथ्य विवृणात्याशु तत्प्रमाणित यथा सुरा ॥ प्रिनि.द्रव्यादिवर्ग.79	- वचा - सुरा
विकाशी	सन्धिबन्धास्तु शिथिलात्यल्करोति विकाशि विश्लेष्यौजश्च धातुभ्यो यथा क्रमुककोद्वा । ओजः क्षयाद्भृंशं शैथिल्यमवसादं तनोति यत् । देहे विकाशि तत्प्रोक्तं यथा पूर्णं तमाखु च । प्रिनि.द्रव्यादिवर्ग.81	- क्रमुक - कोद्व - पूर्ण - तमाखु
रसायन	धने यद्गौरवं तत्प्रादभिष्यन्ति यथा दधि । शा पू 4.24-25	- मन्त्रक दधि
	विष्वन्दनाच्च ऐच्छल्यात् रुद्धवा स्रोतांसि गौरवम् ।	

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
	कुरुते तद्विभज्यन्ति मन्त्रकञ्च यथा दधि ॥ प्रिनि.द्रव्यादिवर्ग.78	
	पूर्वं व्याप्त्याखिलं कायं ततः पाकं च व्यावायि तद्यथा भंगा फेनं चाहिसमुद्दवम् । शा पू 4.19-20	- भंगा
	जठरानिं विना गत्वा व्याजोति सकलां तनुम् । रक्तेन सह संक्षय तद् व्यावायि यथा विषम् । प्रिनि.द्रव्यादिवर्ग.80	- अहिफेन - विष
	सन्धिबन्धास्तु शिथिलात्यल्करोति विकाशि विश्लेष्यौजश्च धातुभ्यो यथा क्रमुककोद्वा । शा पू 4.20-21	- क्रमुक
	देहे विकाशि तत्प्रोक्तं यथा पूर्णं तमाखु च । प्रिनि.द्रव्यादिवर्ग.81	- कोद्व
	रसायनं च तज्जेयं यज्ञराव्याधिनाशनम् । यथाऽमृता रुदन्ती च गुग्गुलश्च हरीतकी । शा पू 4.13-14	- अमृता - रुदन्ती

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
लाभापाचो हि शस्ताना॑ धातूना॑ तद् साचनम्।	जगव्याधिहरञ्जापि यथा त्वामलकीफलम् ॥ प्रि.नि.इव्यादिवर्गं.70	- गुण्णु - हरोतको - आमलकी
वाजीकरण यस्माद्व्याघ्रेतत्त्रीषु हर्षो वाजीकरं च तद् ॥ यथा नागबलाद्याः स्मुर्वीजं च कपिकच्छुजम्। चेन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः । तद् वाजीकरणं प्रोत्समाकारकरभ्यो यथा ॥ प्रि.नि.इव्यादिवर्गं.72	- नागबला शा पृ 4.14-15 - कपिकच्छु - आकारकरभ्य	फल
जीवनीय जीवनं आयुः तस्मै हितं जीवनीयम् । चक्रपाणि	- क्षीर - जीवनीय	
बल्य बलाय हितं बल्यम् । योगीन्द्रनाथ सेन	- बल्य महाकषाय	
बृहंण बृहत्तं चक्षरीरस्य जनयेत्तद्या बृहंणम् । च.सू. 22.10	- दुध	

रसादि गुणों के परस्पर सम्बन्ध का निरूपण

मन्दभू - प्रियनिधपट्ट द्रव्यादिवर्ग । 49-52

किञ्चिद् रसेन कुरुते कर्म वीर्येण चापरम् ।
द्रव्यं गुणेन पाकेन प्रभावेण च किञ्चन ॥
एवं सर्वे गुणा द्रव्यकर्मिण परिनिष्ठितः ।

सह सम्भूय तिष्ठनि माथ्यन्तः परस्परम् ॥ २० - ७ - । ।

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
बृहत्त्वं गौरवं यतु जनयेत्तदि बृहंगम्। पयो धृतं स्वादु स्निग्धञ्चानं सर्वं यथाऽऽ- मिष्पम्॥	प्रि.नि.इव्यादिवर्ग.82	- धृत - मधुर एवं स्निग्ध इव्य
लंघन	यत् किञ्चित्तल्लाघवकरं देहे तल्लंघनं स्मृतम्॥ यथा तिक्तो रसः शुद्धिव्यायामो लघु- भोजनम्॥	च.मू. 22.९ - तिक्त रस - शोधन - व्यायाम - लघु भोजन
मेध्य	मेधाय हितं मेध्यम्। धीधृतिस्मृतिरूपान्तु मेधां वर्धयतीह यत्। मेध्यं हि तद् यथा ब्राह्मी जलनिष्ठश्च शारिखिनी॥	प्रि.नि.इव्यादिवर्ग.7.6 - ब्राह्मी - जलनिष्ठ - शारिखिनी

द्रव्य कुछ कर्म रस द्वारा, कुछ वीर्य द्वारा, कुछ गुण द्वारा, कुछ विपाक द्वारा और कुछ प्रभाव द्वारा करता है। इस प्रकार द्रव्य के सम्पूर्ण कर्म में सभी गुण सहयोगी बन कर परस्पर साथ देते हैं।

रसं विपाकस्तौ वीर्यं प्रभावस्तान्यपोहति ।

बलसाम्ये रसादीनामिति नैसर्गिकं बलम् ॥

स्वभावतः सबका बल समान होने पर रस को विपाक, इन दोनों को वीर्य और इन सबको प्रभाव दबा देता है।

यद् यद् द्रव्ये रसादीनां बलवत्वेन वर्तते ।

अभिभूयेतरास्तन्त् कारणत्वं प्रपद्यते ।

बलवैषम्य होने पर रस आदि में जो प्रबल होता है वह दुर्बलों को दबा कर अपना कर्म करता है।

• • •

9. चरक का दशोमानि गण

सन्दर्भ - च.सू. 4 (षड्विरेचनशतांश्रीय अध्याय)

कुल गण (महाकषाय) संख्या - 50

प्रत्येक गण (महाकषाय) में द्रव्यों की संख्या - 10

- | | |
|----------------------------------|-------------------------|
| (1) जीवनीय महाकषाय | (2) वृहणीय महाकषाय |
| (3) लेखनीय महाकषाय | (4) भेदनीय महाकषाय |
| (5) सञ्चानीय महाकषाय | (6) दीपनीय महाकषाय |
| (7) बल्य महाकषाय | (8) वाण्य महाकषाय |
| (9) कण्ठ्य महाकषाय | (10) हृदय महाकषाय |
| (11) तृप्तिष्ठ महाकषाय | (12) अशोष्य महाकषाय |
| (13) कुष्ठज्ञ महाकषाय | (14) कण्ठ्यज्ञ महाकषाय |
| (15) क्रिमिज्ञ महाकषाय | (16) विषज्ञ महाकषाय |
| (17) स्तन्यजनन महाकषाय | (18) स्तन्यशोधन महाकषाय |
| (19) शुक्रजनन महाकषाय | (20) शुक्रशोधन महाकषाय |

चरक का दर्शेमानि गण

(21) स्नेहोपा महाकषाय	(22) स्वेदोपा महाकषाय
(23) वमनोपा महाकषाय	(24) विरेचनोपा महाकषाय
(25) आस्थापनोपा महाकषाय	(26) अनुवासनोपा महाकषाय
(27) शिरोविरेचनोपा	(28) छर्दिनिग्रहण महाकषाय
महाकषाय	महाकषाय
(29) तुष्णानिग्रहण महाकषाय	(30) हिक्कनिग्रहण महाकषाय
(31) पुरीषसंग्रहणीय	(32) पुरीषविरजनीय महाकषा
महाकषाय	महाकषाय
(33) मूत्रसंग्रहणीय महाकषाय	(34) मूत्रविरजनीय महाकषाय
(35) मूत्रविरेचनीय महाकषाय	(36) कासहर महाकषाय
(37) श्वासहर महाकषाय	(38) शोथहर महाकषाय
(39) ज्वरहर महाकषाय	(40) श्रमहर महाकषाय
(41) दाहप्रशमन महाकषाय	(42) शोतप्रशमन महाकषाय
(43) उदर्दप्रशमन महाकषाय	(44) ऊंगमदप्रशमन महाकषाय
(45) शूलप्रशमन महाकषाय	(46) शोषितस्थापन महाकषाय
(47) बेदनास्थापन महाकषाय	(48) संज्ञास्थापन महाकषाय
(49) प्रजास्थापन महाकषाय	(50) वयःस्थापन महाकषाय

(1) जीवनीय महाकषाय –
जीवकर्षभाको मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली मुद्रापर्णि
माषपण्डी जीवन्ती मधुकमिति दर्शेमानि जीवनीयानि भवन्ति।
च.सू. 4.9(1)

- (1) जीवक (2) ऋषभक (3) मेदा (4) महामेदा
- (5) काकोली (6) क्षीरकाकोली (7) मुद्रापर्णि (8) मापपण्डी
- (9) जीवन्ती (10) मधुक

(2) बृहणीय महाकषाय –

श्रीरिणी राजक्षवका श्वगन्धा काकोली क्षीरकाकोली वात्याय-
नी भद्रौदनी भारद्वाजी पियस्याद्यगन्धा इति दर्शेमानि बृहणीयानि

च.सू. 4.9(2)

- भवन्ति।
- (1) श्रीरिणी (2) राजक्षवक (3) अश्वगन्धा (4) काकोली
- (5) शीर- (6) वाट्यायनी (7) भद्रौदनी (8) भारद्वाजी
- काकोली
- (9) पयस्या (10) ऋष्यगन्धा
- (3) लेखनीय महाकषाय –
पुस्तकुल्द्विद्रितारुहरिद्रिवचातिविषाकदुग्धोहिणी चित्रकाचिरबिल्ल्वैष्मवत्य
इति दर्शेमानि लेखनीयानि भवन्ति।
- च.सू. 4.9(3)

चरक का दर्शोमानि गण

- | | | | |
|--------------|-------------|---------------|------------|
| (1) मुस्त | (2) कुछ | (3) हरिद्रा | (4) दारहरी |
| (5) वचा | (6) अतिविषा | (7) कटुरोहिणी | (8) चित्रक |
| (9) चिरबिल्व | (10) हैमवती | | |

(4) भेदनीय महाकषाय –

सुवहाकौरुबुकानिमुखीनित्राचित्रकचिरबिल्वशांखनीशकुलाद्वा
स्वर्णक्षीरिण्य इति दर्शोमानि भेदनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(4)

- | | | | |
|---------------|-------------------|--------------|--------------|
| (1) सुवहा | (2) अकं | (3) उरुक | (4) अग्निमुख |
| (5) चित्रा | (6) चित्रक | (7) चिरबिल्व | (8) शाँखी |
| (9) शकुलादानी | (10) स्वर्णक्षीरी | | |

(5) सन्धानीय महाकषाय –

मधुकमधुपणीपृष्ठनपणर्याम्बद्धकोसमग्रामोचरसधातकीलोधीप्रियं
कट्फलानीति दर्शोमानि सन्धानीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(5)

- | | | | |
|--------------|------------|---------------|---------------|
| (1) मधुक | (2) मधुपणी | (3) पृष्ठनपणी | (4) अम्बद्धको |
| (5) समंगा | (6) मोचरस | (7) धातकी | (8) लोध |
| (9) प्रियंगु | (10) कट्फल | | |

(6) दीपनीय महाकषाय –

पिपलीपिपलीमूलचव्याचित्रकशृंगकेराम्लवेतसमरिचाजमोदाभल्लात
कास्थहिंगनीर्यासा इति दर्शोमानि दीपनीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.9(6)

- | | | | |
|-------------|-------------------|----------|------------|
| (1) पिपली | (2) पिपलीमूल | (3) चव्य | (4) चित्रक |
| (5) शांखेर | (6) अम्लवेतस | (7) मरिच | (8) अजमादा |
| (9) भल्लात- | (10) हिंगुनिर्यास | | |

कास्थि

(7) बल्य महाकषाय –

ऐन्द्रीप्रभतिरसव्यप्रोक्तापयस्याश्वगन्धास्थिरारोहिणीबलातिबला
इति दर्शोमानि बल्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(7)

- | | | | |
|-------------|---------------|------------|-----------------|
| (1) ऐन्द्री | (2) ऋषभी | (3) अतिरसा | (4) ऋषभप्रोक्ता |
| (5) पयस्या | (6) अक्षान्धा | (7) स्थिरा | (8) रोहिणी |
| (9) बला | (10) अतिबला | | |

(8) वर्ण महाकषाय –

चन्दनतुंगपदमकोशीरमधुकमज्जासारिवापयस्यासितालता
इति दर्शोमानि वर्णानि भवन्ति। च.सू. 4.10(8)

- | | | | |
|-----------|-------------|------------|------------|
| (1) चन्दन | (2) तुंग | (3) पदमक | (4) उशीर |
| (5) मधुक | (6) मज्जासा | (7) सारिवा | (8) पयस्या |
| (9) सिता | (10) लता | | |

(9) कण्ठ महाकषाय –

सारिवेक्षुमूलमधुकपिपलीद्राक्षाविदारीकैटर्यहस्पादीबृहतीकपटकारिका
इति दर्शोमानि कण्ठ्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(9)

- (1) सारिवा (2) हक्षमूल (3) मधुक (4) पिप्पली
 (5) द्राक्षा (6) विदारी (7) कैटर्ड (8) हंसपादी
 (9) बृहती (10) कण्टकारिका

(10) हृद्य महाकषाय -

आग्राम्भातकलिङ्गचकरमदेवक्षाम्लाम्लवेतसकुवलबदरदाइम-

मातुलुंगानीति दशेमानि हृद्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(10)

- (1) आम्र (2) आम्रातक (3) लिङ्गुच (4) करमद
 (5) वृक्षाम्ल (6) अम्लवेतस (7) कुवल (8) बदर
 (9) दाइम (10) मातुलुंग

(11) तृष्णिष्ठ महाकषाय -

नागरचव्याच्चत्रकविङ्गामूर्वीगुड्चीवचामुस्तमिष्टलीष्टोलानीति
 दशेमानि तृष्णिष्ठानि भवन्ति। च.सू. 4.11(11)

- (1) नागर (2) चव्य (3) चित्रक (4) विडंगा
 (5) मूर्वा (6) गुड्ची (7) वचा (8) मुस्त
 (9) पिप्पली (10) पटोल

(12) अशोष्ण महाकषाय -

कुटजिल्लचित्रकनागरातिकिषाभयाधन्वयासकदारहरिद्रावचाच-
 व्यानीति दशेमान्यशोष्णानि भवन्ति। च.सू. 4.11(12)

- (1) कुटज (2) विल्व (3) चित्रक (4) नारे
 (5) अर्तिविषा (6) अभया (7) धन्वयासक (8) दारहरिद्रा
 (9) वचा (10) चव्य

(13) कुष्ठज्ञ महाकषाय -

खदिराभयाम्लकहरिद्रारुक्करमपणीरवधकरवीरविङ्गाजातीप्रवाला
 इति दशेमानि कुष्ठज्ञानि भवन्ति। च.सू. 4.11(13)

- (1) खदिर (2) अभया (3) आमलक (4) हरिद्रा
 (5) अरुक्कर (6) सप्तपर्ण (7) आगवध (8) करवीर
 (9) विडंगा (10) जाती प्रवाल

(14) कण्ठद्वन्द्व महाकषाय -

चन्दनलदकृतमालनक्तमालनिबुक्लजसर्षपमधुक्तदारुहरिद्रामुस्तानीति
 दशेमानि कण्ठद्वन्द्वानि भवन्ति। च.सू. 4.11(14)

- (1) चन्दन (2) नलद (3) कृतमाल (4) नक्तमाल
 (5) निष्व (6) कुटज (7) सर्प (8) मधुक
 (9) दारुहरिद्रा (10) मुस्ता

(15) क्रिमिज्ज महाकषाय -

अक्षीवमिरिचाणडीरकेबुक्किङ्गनिर्गुण्डीक्रिमिहीश्वद्यूषपर्णिकाखु-
 पर्णिका इति दशेमानि क्रिमिज्जानि भवन्ति। च.सू. 4.11(15)

द्रव्यगुण विज्ञान

- | | | | |
|------------------------------|----------------|------------|--------------|
| (1) अक्षीव | (2) मरिच | (3) गण्डीर | (4) केबुक |
| (5) विडंग | (6) निर्गुण्डी | (7) किणिही | (8) श्वंस्या |
| (9) वृषपर्णिका (10) आखुपर्णी | | | |

(16) विषघटन महाकषाय –

हरिद्रामज्जिष्ठासुवहासूक्ष्मैलापालिन्दीचन्दनकतकशिरीषसिन्धुवार-

श्लेष्मातका इति दशेमानि विषघटनानि भवन्ति । च.सू. 4.11(16)

- | | | | |
|-------------------------------|---------------|-----------|----------------|
| (1) हरिद्रा | (2) मज्जिष्ठा | (3) सुवहा | (4) सूक्ष्मैला |
| (5) पालिन्दी | (6) चन्दन | (7) कतक | (8) शिरीष |
| (9) सिन्धुवार (10) श्लेष्मातक | | | |

(17) स्तन्यजनन महाकषाय –

वीरणशालिषष्टिकेश्वालिकादर्भकुशकाशगुन्द्रेत्कटकतृणमूलानीति
दशेमानि स्तन्यजननानि भवन्ति । च.सू. 4.12(17)

- | | | | |
|-------------------------|----------|------------|---------------|
| (1) वीरण | (2) शालि | (3) षष्टिक | (4) इश्वालिका |
| (5) दर्भ | (6) कुश | (7) काश | (8) गुन्दा |
| (9) इत्कट (10) कतृण मूल | | | |

(18) स्तन्यशोधन महाकषाय –

पात्रमहौषधसुरदारुमुस्तमूर्वागुड्चीवत्सकफलकिराततिक्तकदुरोहिणी-
सारिवा इति दशेमानि स्तन्यशोधनानि भवन्ति । च.सू. 4.12(18)

चरक का दशेमानि गण

- | | | | |
|---------------------------|------------|-------------|------------|
| (1) पाठा | (2) महोपथ | (3) सुरदारु | (4) मुस्त |
| (5) मूर्वा | (6) गुड्ची | (7) वत्सक | (8) किरात- |
| फल तिक्त | | | |
| (9) कदुरोहिणी (10) सारिवा | | | |

(19) शुक्रजनन महाकषाय –

जीवकर्षभककाकोलीक्षीरकाकोलीमुद्गपणीमाषपणीमेदावृद्धरुहा-
जटिलाकुलिंगा इति दशेमानि शुक्रजननानि भवन्ति ।
च.सू. 4.12(19)

- | | | | |
|------------------------|------------|------------|----------------------|
| (1) जीवक | (2) ऋषभक | (3) काकोली | (4) क्षीर-
काकोली |
| (5) मुद्गपणी | (6) माषपणी | (7) मेदा | (8) वृद्धरुहा |
| (9) जटिला (10) कुलिंगा | | | |

(20) शुक्रशोधन महाकषाय –

कुष्ठैलवालुककट्फलसमुद्रफेनकदम्बनियासेशुकाणडेक्षिवक्षुरकव-
सुकोशीराणीति दशेमानि शुक्रशोधनानि भवन्ति ।
च.सू. 4.12(20)

- | | | | |
|--------------------|-------------|-------------|---------------|
| (1) कुष्ठ | (2) एलवालुक | (3) कट्फल | (4) समुद्रफेन |
| (5) कदम्ब | (6) इक्षु | (7) काणडेशु | (8) इक्षुरक |
| (9) वसुक (10) उशीर | | | |

2020-7-1

(21) स्नेहोपग महाकषाय -

मृद्दीकामधुकमधुपर्णीमेदाविदारीकाकोलीक्षीरकाकोलीजीवकजीवन्ती-
शालपर्ण्य इति दशेमानि स्नेहोपगानि भवन्ति । च.सू. 4.13(21)

- | | | | |
|--------------|---------------|-----------------|----------|
| (1) मृद्दीका | (2) मधुक | (3) मधुपर्णी | (4) मेदा |
| (5) विदारी | (6) काकोली | (7) क्षीरकाकोली | (8) जीवक |
| (9) जीवन्ती | (10) शालपर्णी | | |

(22) स्वेदोपग महाकषाय -

शोभाज्जनकैरण्डार्कवृशीरपुनर्नवायवतिलकुलत्थमाषबदराणीति
दशेमानि स्वेदोपगानि भवन्ति । च.सू. 4.13(22)

- | | | | |
|--------------|-----------|----------|------------|
| (1) शोभाज्जन | (2) एरण्ड | (3) अर्क | (4) वृशीर |
| (5) पुनर्नवा | (6) यव | (7) तिल | (8) कुलत्थ |
| (9) माष | (10) बदर | | |

(23) वमनोपग महाकषाय -

मधुमधुककोविदारकर्बुदारनीपविदुलबिम्बीशणपुष्पोसदापुष्पाप्रत्यक्षुष्पा
इति दशेमानि वमनोपगानि भवन्ति । च.सू. 4.13(23)

- | | | | |
|---------------|---------------------|-------------|--------------|
| (1) मधु | (2) मधुक | (3) कोविदार | (4) कर्बुदार |
| (5) नीप | (6) विदुल | (7) बिम्बी | (8) शणपुष्पी |
| (9) सदापुष्पा | (10) प्रत्यक्षुष्पा | | |

चरक का दशेमानि गण

77

(24) विरेचनोपग महाकषाय -

द्राक्षाकाशमर्यपस्तुपकाभयामलकविभीतककुवलवदरकर्कन्धुपीलूनीति
दशेमानि विरेचनोपगानि भवन्ति । च.सू. 4.13(24)

- | | | | |
|--------------|-------------|-------------|----------|
| (1) द्राक्षा | (2) काशमर्य | (3) पस्तुपक | (4) अभया |
| (5) आमलक | (6) विभीतक | (7) कुवल | (8) वदर |
| (9) कर्कन्धु | (10) पीलु | | |

(25) आस्थापनोपग महाकषाय -

त्रिवृद्विबल्वपिप्पलीकुष्ठसंषर्पवचावत्सकफलशतपुष्पामधुकमदनफला-
नीति दशेमान्यास्थापनोपगानि भवन्ति । च.सू. 4.13(25)

- | | | | |
|--------------|------------|-------------|--------------|
| (1) त्रिवृत् | (2) बिल्व | (3) पिप्पली | (4) कुष्ठ |
| (5) संषर्प | (6) वचा | (7) वत्सक | (8) शतपुष्पा |
| (9) मधुक | (10) मदनफल | | |

(26) अनुवासनोपग महाकषाय -

रास्नासुरदारुबिल्वमदनशतपुष्पावृशीरपुनर्नवाश्वदंष्ट्राग्निमन्थयोनाका
इति दशेमान्यनुवासनोपगानि भवन्ति । च.सू. 4.13(26)

- | | | | |
|---------------|-------------|--------------|-----------------|
| (1) रास्ना | (2) सुरदारु | (3) बिल्व | (4) मदन |
| (5) शतपुष्पा | (6) वृशीर | (7) पुनर्नवा | (8) श्वदंष्ट्रा |
| (9) अग्निमन्थ | (10) योनाक | | |

2020-7-1

(27) शिरोविरेचनोपग महाकषाय –

ज्योतिष्मतीक्ष्वकमरिचपिप्पलीविडंगशिगुसर्पापामार्गतण्डुलश्वेता-
महाश्वेता इति दशेमानि शिरोविरेचनोपगनि भवन्ति ।

- | | | | | |
|-----------------|----------------|----------|---------------------|----------------|
| (1) ज्योतिष्मती | (2) क्ष्वक | (3) मरिच | (4) पिप्पली | च.सू. 4.13(27) |
| (5) विडंग | (6) शिगु | (7) सर्प | (8) अपामार्ग तण्डुल | |
| (9) श्वेता | (10) महाश्वेता | | | |

(28) छर्दिनिग्रहण महाकषाय –

जम्ब्वाप्रपल्लवमातुलुंगाम्लबदरदाडिमयवयष्टिकोशीरमृलाजा
इति दशेमानि छर्दिनिग्रहणानि भवन्ति । च.सू. 4.14.(28)

- | | | | |
|-----------|---------------|--------------|--------------|
| (1) जम्बु | (2) आप्रपल्लव | (3) मातुलुंग | (4) अम्ल बदर |
| (5) दाडिम | (6) यव | (7) यष्टिक | (8) उशीर |
| (9) मृत् | (10) लाजा | | |

(29) तृष्णानिग्रहण महाकषाय –

नागरधन्वयवासकमुस्तपर्पटकचन्दनकिराततिक्तकगुडूचीहीवेरधान्यकप-
टोलानीति दशेमानि तृष्णानिग्रहणानि भवन्ति । च.सू. 4.14(29)

- | | | | |
|------------|-----------------|------------|------------|
| (1) नागर | (2) धन्वयासक | (3) मुस्त | (4) पर्पटक |
| (5) चन्दन | (6) किराततिक्तक | (7) गुडूची | (8) हीबेर |
| (9) धान्यक | (10) पटोल | | |

३०। वशान

चरक का दशेमानि गण

(30) हिक्कानिग्रहण महाकषाय –

शटीपुष्करमूलबदरबीजकटकारिकावृहतीवृक्षरुद्धाभयापिप्पलीदुरालभा-
कुलीरशृंगय इति दशेमानि हिक्कानिग्रहणानि भवन्ति ।

च.सू. 4.14(30)

- | | | | |
|-------------|-----------------|-------------|---------------------|
| (1) शटी | (2) पुष्करमूल | (3) बदर बीज | (4) कट्ट-
कारिका |
| (5) वृहती | (6) वृक्षरुद्धा | (7) अभया | (8) पिप्पली |
| (9) दुरालभा | (10) कुलीरशृंगी | | |

(31) पुरीषसंग्रहणीय महाकषाय –

प्रियङ्गवनन्ताप्रास्थिकट्कगलोष्मोचरससमांधातकीपुष्पपद्मापद्मकेश-
राणीति दशेमानि पुरीषसंग्रहणीयानि भवन्ति । च.सू. 4.15(31)

- | | | | |
|---------------|------------|---------------|-------------|
| (1) प्रियङ्गु | (2) अनन्ता | (3) आप्रास्थि | (4) कट्कवंग |
| (5) लोध्र | (6) मोचरस | (7) समंगा | (8) धातकी |

पुष्प

- | | |
|-----------|---------------|
| (9) पद्मा | (10) पद्मकेशर |
|-----------|---------------|

(32) पुरीषविरजनीय महाकषाय –

जम्बुशल्लकीत्वकच्छुरामधूकशाल्मलीश्रीवेष्टकभृष्टमृत्ययस्योत्पल-
तिलकणा इति दशेमानि पुरीषविरजनीयानि भवन्ति ।

च.सू. 4.15(32)

2020-7-11

द्रव्यगुण विज्ञान

- (1) जम्बु (2) शल्लकी (3) कच्छुगा (4) मधूक
 त्वक्
 (5) शाल्मली (6) श्रीवेष्टक (7) भृष्ट मृत् (8) पयस्या
 (9) उत्पल (10) तिलकणा
- (33) मूत्रसंग्रहणीय महाकथाय –

जम्ब्वाप्रप्लक्षवटकपीतनोऽुम्बराश्वस्थभल्लातकाशमन्तकसोमवल्का
 इति दशेमानि मूत्रसंग्रहणीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(33)

(1) जम्बु (2) आम्र (3) प्लक्ष (4) वट
 (5) कपीतन (6) उङ्गम्बर (7) अश्वस्थ (8) भल्लातक
 (9) अशमन्तक (10) सोमवल्क

(34) मूत्रविरजनीय महाकथाय –

पद्मोत्पलनलिनकुमुदसौगन्धिकपुण्डरीकशतपत्रमधुकप्रियंगुधातकी-
 पुष्पाणीति दशेमानि मूत्रविरजनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(34)

(1) पद्म (2) उत्पल (3) नलिन (4) कुमुद
 (5) सौगन्धिक (6) पुण्डरीक (7) शतपत्र (8) मधुक
 (9) प्रियंगु (10) धातकीपुष्प

(35) मूत्रविरेचनीय महाकथाय –

वृक्षादनीश्वदंष्ट्रावसुकवशिरपाषाणभेददर्भकुशकाशगुद्रेकटमूलानीति
 दशेमानि मूत्रविरेचनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(35)

चरक का दशेमानि गण

- (1) वृक्षादनी (2) श्वदंष्ट्रा (3) वसुक (4) वशिर
 (5) पापाणभेद (6) दर्भ (7) कुश (8) काश
 (9) गुन्द्र (10) इल्कटमूल
- (36) कासहर महाकथाय –
- द्राक्षाभयामलकपिष्ठलीदुरालभाष्ट्रीकण्टकारिकावृथीरपुनर्वातामलक्ष्य
 इति दशेमानि कासहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(36)
- (1) द्राक्षा (2) अभया (3) आमलक (4) पिष्ठली
 (5) दुरालभा (6) शृंगी (7) कण्टकारिका (8) वृथीर
 (9) पुनर्वा (10) तामलकी
- (37) श्वासहर महाकथाय –
- शटीपुष्करमूलाम्लवेतसैलाहिंगवगुरुसुरसातामलकीजीवन्तीचण्डा
 इति दशेमानि श्वासहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(37)
- (1) शटी (2) पुष्करमूल (3) अम्लवेतस (4) एला
 (5) हिंगु (6) अगुरु (7) सुरसा (8) तामलकी
 (9) जीवन्ती (10) चण्डा
- (38) श्वयथुहर महाकथाय –
- पाटलामिनमश्यश्योनाकबिल्वकाशमर्यकपटकारिकाबृहतीशालपर्णीपृश्नि-
 पर्णीगोक्षुरका इति दशेमानि श्वयथुहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(38)

2020-7-11

इत्युपनिषद्

चरक का देशमानि गाण

(1) काशमर्फल (4) मधुक

(2) चन्दन (7) उशीर

(3) मधुक (8) मारिवा

(5) काशमर्फल (6) नीलोत्पल (7) उशीर

(9) पूर्णिमणि (10) गोकुरक

(9) गुड्हची (10) हींबेर

(39) ज्वरहर महाकषाय -

सारिवाशकर्णपाठमज्ज्वलादाक्षापीलुपरूषकाभयामलकविषीतकानीति
दशेमानि ज्वरहरगाणि भवन्ति ।

च.सू. 4.16(39)

- | | | | |
|--------------|--------------|-----------|--------------|
| (1) सारिवा | (2) शकरा | (3) पाठा | (4) मज्ज्वला |
| (5) द्राक्षा | (6) पीलु | (7) परूषक | (8) अभया |
| (9) आमलक | (10) बिभीतिक | | |

(40) श्रमहर महाकषाय -

द्राक्षाखर्जुरप्रियालबदरदाइमफल्लुपरूषकेशुयवषष्टिका इति
दशेमानि श्रमहराणि भवन्ति ।

च.सू. 4.16(40)

- | | | | |
|------------|--------------|--------------|---------------|
| (1) तार | (2) अग्रु | (3) धान्यक | (4) शृंगवेर |
| (5) भूतीक | (6) वचा | (7) कण्टकारी | (8) अग्निमन्थ |
| (9) ईयोनाक | (10) मिष्पली | | |

(43) उदर्द्देश्यमन महाकषाय -

तिन्दुकप्रियालबदरखर्जिरकदरसप्तपणां श्वकपणीर्जुनासनारिमेदा
इति दशेमानुदर्देश्यमनानि भवन्ति ।

च.सू. 4.17(43)

- | | | | |
|-------------|-------------|--------------|------------|
| (1) तिन्दुक | (2) प्रियाल | (3) बदर | (4) खर्जिर |
| (5) कदर | (6) सप्तपणि | (7) अश्वकर्ण | (8) अर्जुन |
| (9) असन | (10) अरिमेद | | |

(44) अंगमर्दप्रशमन महाकषाय -

विदारीगन्धा पूर्णिमणि बृहतीकण्टकारिकैरपड़काकोलीचन्दनोशीरलामधु-
लाजाचन्दनकाशमर्फलमधुकशकर्णनीलोत्पलोशीरमारिवग्नीहींबो-
र्णीति दशेमानि दाहप्रशमनानि भवन्ति ।

च.सू. 4.17(41)

- (1) विदारीगन्धा (2) पृश्नपर्ण (3) बृहती
 (5) एरण्ड (6) काकोली (7) चन्दन
 (9) एला (10) मधुक

पञ्चगुण विज्ञ
 (4) कण्टकाळि
 (8) उशीर

(45) शूलप्रशामन महाकषाय –

पिप्लीपिप्लीमूलचव्यचित्रकशंगवेरमरिचाजमोदाजगन्धाजाजंगण्ड
 राणीति दशेमानि शूलप्रशामनानि भवन्ति। च.सू. 4.17(45)
 (1) पिप्ली (2) पिप्लीमूल (3) चव्य (4) चित्रक
 (5) शंगवेर (6) मरिच (7) अजमोदा (8) अजगन्धा
 (9) अजाजी (10) गण्डीर

(46) शोणितस्थापन महाकषाय –

मधुमधुकरुधिरमोचरसमृत्कपाललोधगैरिकप्रियंगुशकरालाऽ
 इति दशेमानि शोणितस्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(46)
 (1) मधु (2) मधुक (3) रुधिर (4) मोचरस
 (5) मृत्कपाल (6) लोध (7) गैरिक (8) प्रियंगु
 (9) शकरा (10) लाजा

(47) वेदनास्थापन महाकषाय –

शालकट्फलकदम्बपद्मकतुम्बमोचरसशिरीषवज्जुलैलवालुकाशेष
 इति दशेमानि वेदनास्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(47)

चरक का दशेमानि गण

85

- (1) शाल (2) कट्फल (3) कदम्ब (4) पदम्ब
 (5) तुम्ब (6) मोचरस (7) शिरीप (8) वज्जुल
 (9) एलवालुक (10) अशोक

(48) संज्ञास्थापन महाकषाय –

हिंगुकैट्यारिमेदावचाचोरकवयस्थागोलोमीजटिलापलंकपाशोकरोहिण्य
 इति दशेमानि संज्ञास्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(48)
 (1) हिंगु (2) कैट्य (3) अरिमेद (4) वचा
 (5) चोरक (6) वयस्था (7) गोलोमी (8) जटिला
 (9) पलंकषा (10) अशोकरोहिणी

(49) प्रजास्थापन महाकषाय –

ऐन्द्रीब्राह्मीशतवीर्यासहस्रवीर्याऽमोदाऽव्यथाशिवाऽरिष्टावाठ्यपुष्पी-
 विष्वक्सेनकान्ता इति दशेमानि प्रजास्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(49)
 (1) ऐन्द्री (2) ब्राह्मी (3) शतवीर्या (4) सहस्रवीर्या
 (5) अमोदा (6) अव्यथा (7) शिवा (8) अरिष्टा
 (9) वाठ्यपुष्पी (10) विष्वक्सेनकान्ता

(50) वयःस्थापन महाकषाय –

अमृताऽभयाधात्रीमुक्ताश्वेताजीवन्त्यतिरसामण्डूकपणीस्थिरापुनर्नवा
 इति दशेमानि वयःस्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(50)
 २०२०-७-१

- | | | | |
|------------|---------------|------------|-------------|
| (1) अमृता | (2) अभया | (3) धात्री | (4) मुक्ता |
| (5) श्वेता | (6) जीवन्ती | (7) अतिरसा | (8) मण्डूक- |
| पर्णी | | | |
| (9) स्थिरा | (10) पुनर्नवा | | |
- • •

10. मिश्रक गण

ओऽद्विद् गण

बृहत्पञ्चमूल - बृहत्पञ्चमूल - बृहत्पञ्चमूल - बृहत्पञ्चमूल
 बिल्वकाशमर्यतकर्कारीपाटलाटिण्टुकैर्महत् ॥ बृहत्पञ्चमूल
 जयेत्कषायतिक्तोष्णं पञ्चमूलं कफानिलौ । अ.ह.सू. 6.167-168

बिल्व + काशमर्य + तकर्कारी + पाटला + टिण्टुक

गुण - - कषाय - तिक्त - उष्ण - कफवातन्त्र

लघुपञ्चमूल -

हस्वं बृहत्पञ्चमूलीद्वयगोक्षुरकैः स्मृतम् ॥

स्वादुपाकरसं नातिशीतोष्णं सर्वदोषजित् । अ.ह.सू. 6.168-169

बृहती + कण्टकारी + शालिपर्णी + पृश्निपर्णी + गोक्षुर

गुण - - मधुर रस - मधुर पाकी - न अधिक शीतल - न अधिक

उष्ण - त्रिदोषहर

2020-7-11

दशमूल -

उभाभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम्।

दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः।

तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वीडाऽरुचीहरेत्॥ भा.प्र. हरीतक्यादिवर्गं

बृहत्पञ्चमूल (बृहती + कण्टकारी + शालिपर्णी + पृश्निपर्णी + गोक्षुर)

+

लघुपञ्चमूल (बिल्व + काशमर्य + तर्कारी + पाटला + टिण्डुक)

गुण -- त्रिदोषघ्न -- श्वास -- कास -- शिरोवेदनानाशक -- तन्द्रा -
शोथ -- ज्वर -- आनाह -- पार्श्वशूल -- अरोचक नाशक

वल्ली पञ्चमूल -

विदारीसारिवारजनीगुदूच्योऽजशृंगी चेति वल्लीसंज्ञः॥

सु.सू. 38.72

विदारी + सारिवा + रजनी + गुदूची + अजशृंगी

कण्टक पञ्चमूल -

करमर्दीत्रिकण्टकसैरीयकशतावरीगृध्नख्य इति कण्टकसंज्ञः॥

सु.सू. 38.73

करमर्द + त्रिकण्टक + सैरीयक + शतावरी + गृध्नखी

तृण पञ्चमूल -

सुश्रुत मतेन -

कुशकाशनलदर्भकाण्डेक्षुका इति तृणसंज्ञकः॥ सु.सू. 38.75

कुश + काश + नल + दर्भ + काण्डेक्षु

वाग्भट मतेन -

तृणाख्यं पित्तजिदर्भकासेक्षुशरशालिभिः॥ अ.ह.सू. 6.171

दर्भ + कास + इक्षु + शर + शालि

मध्यम पञ्चमूल -

बलापुर्नवैरण्डशूर्पपर्णीद्वयेन तु॥

मध्यमं कफवातघ्नं नातिपित्तकरं सरम्। अ.ह.सू. 6.169-170

बला + पुर्नवा + एरण्ड + मुदगपर्णी + माषपर्णी

गुण -- कफवातघ्न -- नातिपित्तकर -- सर

जीवन पञ्चमूल -

अभीरुवीराजीवन्तीजीवकर्वभकैः स्मृतम्॥

जीवनाख्यं तु चक्षुष्यं वृष्यं पित्तानिलापहाम्।

अ.ह.सू. 6.170-171

शतावरी + काकोली + जीवन्ती + जीवक + ऋषभक

गुण -- चक्षुष्य -- वृष्य -- पित्तवातघ्न

2020-7-11

पञ्चपल्लव -

आम्रजम्बूकपित्थानां बीजपूरकबिल्वयोः।
गन्धकर्मणि सर्वत्र पञ्चपल्लवम्॥

आम्र + जम्बू + कपित्थ + बीजपूर + बिल्व

पञ्चवल्कल -

पर्याय - पञ्चवेतस (नरहरि पण्डित मतेन)

न्यग्रोधोदुम्बराश्वस्थ - प्लक्षवेतसवल्कलैः।
सर्वैरेकत्र मिलितैः पञ्चवेतसमुच्यते॥ रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.25

न्यग्रोध + उदुम्बर + अश्वस्थ + प्लक्ष + वेतस

त्रिफला -

पर्याय - - फलत्रिक - वरा

पश्याबिभीतकधात्रीणां फलैः स्यात्रिफला समैः।
फलत्रिकञ्च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता॥ भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग.42

हरीतकी + आमलकी + बिभीतकी

त्रिकटु -

पर्याय - - कटुत्रिक - त्र्यूषण - व्योष
विश्वोपकुल्या मरिचं त्रयं त्रिकटु कथ्यते।
कटुत्रिकं तु त्रिकटु त्रयूषणं व्योष उच्यते॥

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग.162

पिप्पली + मरिच + शुण्ठी

त्रिमद -

विडंगमुस्तचित्रैश्च त्रिमदः समुदाहृतः।

विडंग + मुस्तक + चित्रक

चतुरुषण -

व्योषः सकणामूलः कथितं चतुरुषणं भिषगवर्यैः।

तत्तुल्यगुणं किन्तु प्रकीर्तिं प्रोल्बणं वीर्यै॥

प्रियनिघण्टु शारादिवर्ग 1100

पिप्पली + मरिच + शुण्ठी + पिप्पलीमूल

पञ्चकोल -

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः।

पञ्चभिः कोलमात्रं यत्पञ्चकोलं तदुच्यते॥

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग 172

पिप्पली + पिप्पलीमूल + चव्य + चित्रक + नागर

षडूषण -

पञ्चकोलं समरिचं षडूषणमुदाहृतम्।

पञ्चकोलगुणं तत्तु रूक्षमुष्णं विषापहम्॥

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग 174

2020-7-11

पिप्ली + पिप्लीमूल + चव्य + चित्रक + नागर + मरिच

चतुर्बीज -

मेथिका चन्द्रशूरश्च कालाऽजाजी यवानिका।

एतच्चतुष्टयं युक्तं चतुर्बीजमिति स्मृतम्॥

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग 121

मेथिका + चन्द्रशूर + कालाऽजाजी + यवानिका

जीवनीय गण -

जीवन्ती काकोल्यौ मेदे द्वे मुदगमाषपण्यौ च।

ऋषभक्जीवकमधुकं चेति गणो जीवनीयाख्यः ॥ अ.ह.सू. 15.8

जीवन्ती + काकोली + क्षीरकाकोली + मेदा + महामेदा + मुदग-
पण्या + माषपण्या + ऋषभक + जीवक + मधुक

अष्टवर्ग -

जीवकर्षभक्तो मेदे काकोल्यौ ऋषद्विवृद्धिके ॥

अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्वयैः कथितश्चरकादिभिः ॥

अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्वृहणः शुक्रलो गुरुः ।

भग्नसन्धानकृत्यामबलासबलवर्द्धनः ।

वातपित्तास्तद्वाहज्वरपेहक्षयप्रणुत् ॥

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग 120-122

जीवक + ऋषभक + मेदा + महामेदा + काकोली + क्षीर-
काकोली + ऋषद्वि + वृद्धि

गुणकर्म - - शीत - मधुर - वृहण - शुक्रल - गुरु -
भग्नसन्धानकर - कामवर्द्धक - कफवर्द्धक - बलवर्द्धक - वातपित्तम्
- रक्तविकारनाशक - तृष्णा - दाह - ज्वर - प्रमेह - क्षय नाशक

प्रतिनिधि द्रव्य -

1. जीवक → विदारीकन्द
2. ऋषभक → विदारीकन्द
3. मेदा → शतावरी
4. महामेदा → शतावरी
5. काकोली → अश्वगन्धा
6. क्षीरकाकोली → अश्वगन्धा
7. ऋषद्वि → वाराहीकन्द
8. वृद्धि → वाराहीकन्द

त्रिजातक -

पर्याय - त्रिसुगन्धि

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धि त्रिजातकम् । रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.18

त्वक् + एला + तेजपत्र 2020-7-11 12:00

द्रव्यगुण विज्ञान

चतुर्जातक -

नागकेशरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते । रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.18

त्वक् + एला + तेजपत्र + नागकेशर

कटु चतुर्जातक -

एलात्वपत्रकैस्तुल्यैर्मिरिचेन समन्वितैः ।

कटुपूर्वमिदं चान्यच्चातुर्जातकमुच्यते ॥ रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.19

एला + त्वक् + तेजपत्र + मरिच

पञ्चतिक्त -

गुडूची निम्बमूलत्वक् भिषड्माता निदिग्धिका ।

पटोलपत्रमित्येतत् पञ्चतिक्तं प्रकीर्तितम् ॥

र त

गुडूची + निम्बमूल त्वक् + वासा + कण्टकारी + पटोल पत्र

अम्ल पञ्चक -

रसतरंगिणी मतेन -

अम्लवेतस + जम्बूर + मातुलुंग + नारंग + निम्बुक

राजनिघण्टु मतेन -

(1) कोल + दाढ़िम + वृक्षाम्ल + चुल्लकी + अम्लवेतस
 (2) जम्बूर + नारंग + अम्लवेतस + तिन्तिडीक + बीजपूर

मिश्रक गण

त्रिकार्षिक -

नागरातिविषा मुस्ता त्रयमेतत्रिकार्षिकम् ॥ रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.16

नागर + अतिविषा + मुस्ता

चातुर्भद्रक -

गुडूच्चा मिलितं तच्च चातुर्भद्रकमुच्यते ॥ रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.17

नागर + अतिविषा + मुस्ता + गुडूची

स्वल्प त्रिफला -

स्वल्पा काशमर्यखर्जूरपरूषकफलैर्भवेत् ।

काशमर्य + खर्जूर + परूषक

मधुर त्रिफला -

पर्याय - मधुरादि फलत्रय

द्राक्षाकाशमर्यखर्जूरीफलानि मिलितानि तु ।

मधुरत्रिफला ज्ञेया मधुरादिफलत्रयम् ॥ रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.3

द्राक्षा + काशमर्य + खर्जूरीफल

महाविष -

संख्या - राजनिघण्टु मतेन - 5

शृंगिकः कालकूटश्च मुस्तको वत्सनाभकः ।

सत्कुकश्चेति योगोऽयं महापञ्चविषाभिधः ॥

रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.42 7-1 12:00

1. शृंगिक 2. कालकूट 3. मुस्तक 4. वत्सनाभ 5. सकुक

उपविष -

संख्या - रसरलसमुच्चय मतेन - 7

रसतरंगिणी मतेन - 11

राजनिधण्टु मतेन - 5

लांगली विषमुष्टिश्च करवीरं जया तथा ।

नीलक: कनकोऽर्कश्च वर्गो ह्युपविषात्मकः ॥ र र स 10.84

1. लांगली (कलिहारी) 2. कुचला 3. कनेर

4. भाँग 5. भल्लातक 6. धत्तूरा

7. अर्क

विषतिन्दुकबीजं च त्वहिफेनञ्च रेचकम् ।

धत्तूरबीजं विजया गुञ्जा भल्लातकाह्वयः ॥

अर्कक्षीरं सुहीक्षीरं लांगली करवीरकम् ।

समाख्यातो गणोऽयं तु बुधैरुपविषा भिधः ॥ र त 24.163-164

1. विषतिन्दुक बीज 2. अहिफेन 3. जयपाल

4. धत्तूरबीज 5. विजया (भाँग) 6. गुञ्जा

7. भल्लातक 8. अर्कक्षीर 9. सुहीक्षीर

10. लांगली 11. करवीर

मिश्रक गण

अग्र औषधि वर्ग -

सन्दर्भ एवं कुल द्रव्य संख्या -

संहिता	सन्दर्भ	कुल अग्र द्रव्य संख्या
चरक संहिता	च.सू. 25.40	152 (156 - गणना करने पर)
अष्टांग संग्रह	अ सं 13.3	155
अष्टांग हृदय	अ) उ 40.48-58	54

चरकोक्त अग्र औषधि वर्ग -

1. अनं वृत्तिकराणां श्रेष्ठम्
2. उदकमाथासकराणाम्
3. (सुरा श्रमहराणाम्)
4. क्षीरं जीवनीयानाम्
5. मांसं बृंहणीयानाम्
6. रसस्तर्पणीयानाम्
7. लवणमन्द्रव्यरुचिकराणाम्
8. अम्लं हृदयानाम्
9. कुकुरो बल्यानाम्
10. नक्रेतो वृष्याणाम्
11. मधु श्लेष्मपित्तप्रशमनानाम्
12. सर्पिर्वातपित्तप्रशमनानाम्

2020-7-11

13. तैलं वातश्लेष्मप्रशमनानाम्
14. वमनं श्लेष्महरणाम्
15. विरेचनं पित्तहरणाम्
16. बस्तिर्वातहरणाम्
17. स्वेदो मार्दवकरणाम्
18. व्यायामः स्थैर्यकरणाम्
19. क्षारः पुंस्त्वोपघातिनाम्
20. (तिन्दुकमनन्दद्रव्यरुचिकरणाम्)
21. आमं कपित्थमकण्ठयानाम्
22. आविकं सर्पिरहदयानाम्
23. अजाक्षीरं शोषन्स्तन्यसात्म्यरक्तसांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम्
24. अविक्षीरं श्लेष्मपित्तजननानाम्
25. महिषीक्षीरं स्वप्नजननानाम्
26. मन्दकं दध्यभिष्यन्दकरणाम्
27. गवेधुकानं कर्शनीयानाम्
28. उद्वालकानं विरूक्षणीयानाम्
29. इक्षुर्मूत्रजननानाम्
30. यवाः पुरीषजननानाम्
31. जाम्बवं वातजननानाम्

मिश्रक गण

32. शष्कुल्यः श्लेष्मपित्तजननानाम्
33. कुलत्था अम्लपित्तजननानाम्
34. माषाः श्लेष्मपित्तजननानाम्
35. मदनफलं वमनास्थापनानुवासनोपयोगिनाम्
36. त्रिवृत् सुखविरेचनानाम्
37. चतुर्गुलो मृदुविरेचनानाम्
38. स्नुक्यप्यस्तीक्ष्णविरेचननाम्
39. प्रत्यक्षुष्णा शिरोविरेचनानाम्
40. विडंगं क्रिमिघानाम्
41. शिरीषो विषघ्नानाम्
42. खदिरः कुष्ठघ्नानाम्
43. रास्ना वातहरणाम्
44. आमलकं वयःस्थापनानाम्
45. हरीतकी पथ्यानाम्
46. एरण्डमूलं वृष्यवातहरणाम्
47. पिप्पलीमूलं दीपनीयपाचनीयानाहप्रशमनानाम्
48. चित्रकमूलं दीपनीयपाचनीयगुदशोथार्शःशूलहरणाम्
49. पुष्करमूलं हिक्काश्वासकासपाश्वशूलहरणाम्
50. मुस्तं सांग्राहिकदीपनीयपाचनीयानाम्

51. उदीच्चं निर्वापणदीपनीयपाचनीयच्छर्द्धतीसारहराणाम्
52. कट्कं गं सांग्राहिकपाचनीयदीपनीयानाम्
53. अनन्ता सांग्राहिकरकपित्तप्रशमनानाम्
54. अमृता सांग्राहिकवातहरदीपनीयश्लेष्मशोणितविबन्धप्रशमनानाम्
55. बिलं सांग्राहिकदीपनीयवातकफप्रशमनानाम्
56. अतिविषा दीपनीयपाचनीयसांग्राहिकसर्वदोषहराणाम्
57. उत्पलकुमुदपद्मकिङ्गलः सांग्राहिकरकपित्तप्रशमनानाम्
58. दुरालभा पित्तश्लेष्मप्रशमनानाम्
59. गन्धप्रियंगु शोणितपित्तातियोगप्रशमनानाम्
60. कुटजत्वक् श्लेष्मपित्तरक्तसांग्राहिकोपशोषणानाम्
61. काशर्मयफलं रक्तसांग्राहिकरकपित्तप्रशमनानाम्
62. पृश्नपर्णी सांग्राहिकवातहरदीपनीयवृष्याणाम्
63. विदारिगन्धा वृष्यसर्वदोषहराणाम्
64. बला सांग्राहिकबल्यवातहराणाम्
65. गोक्षुरको मूत्रकृच्छ्रानिलहराणाम्
66. हिंगुनिर्यासश्छेदनीयदीपनीयानुलोमिकवातकफप्रशमनानाम्
67. अम्लवेतसो भेदनीयदीपनीयानुलोमिकवातश्लेष्महराणाम्
68. यावशूकः स्नानीयपाचनीयाशोष्णानाम्
69. तक्राभ्यासो ग्रहणीदोषशोफाशोघृतव्यापत्तप्रशमनानाम्

मिथ्रक गण

70. क्रव्यान्मांसरसाभ्यासो ग्रहणीदोषशोषाशोष्णानाम्
71. क्षीरघृताभ्यासो रसायनानाम्
72. समघृतसक्तुप्राशाभ्यासो वृष्योदावर्तहराणाम्
73. तैलगण्डूपाभ्यासो दन्तबलरुचकरणाम्
74. चन्दनं दुर्गन्धहरदाहनिर्वापणलेपनानाम्
75. रासनागुरुणी शीतापनयनप्रलेपनानाम्
76. लामज्जकोशीरं दाहत्वगदोषस्वेदापनयनप्रलेपनानाम्
77. कुष्ठं वातहराभ्यंगोपनाहोपयोगिनाम्
78. मधुकं चक्षुष्यवृष्यकेश्यकण्ठवर्णविरजनीयरोपणीयानाम्
79. वायुः प्राणसंज्ञाप्रदानहेतूनाम्
80. अग्निरात्मस्तम्भशीतशूलोद्वेपनप्रशमनानाम्
81. जलं स्तम्भनीयानाम्
82. मृद्घप्लोष्ट्रनिर्वापितमुदकं तृष्णाच्छर्द्धतीयोगप्रशमनानाम्
83. अतिमात्रशनमामप्रदोषहेतूनाम्
84. यथान्यभ्यवहारोऽग्निसन्धुक्षणानाम्
85. यथासात्म्यं चेष्टाभ्यवहारौ सेव्यानाम्
86. कालभोजनमारोग्यकरणाम्
87. तृप्तिराहरसुणानाम्
88. वेगसन्धारणमनारोग्यकरणाम्

89. मद्यं सौमनस्यजननानाम्
90. मद्याक्षेपो धीधृतिस्मृतिहराणाम्
91. गुरुभोजनं दुर्विपाककराणाम्
92. एकाशनभोजनं सुखपरिणामकराणाम्
93. स्त्रीष्वतिप्रसंगः शोषकराणाम्
94. शुक्रवेगनिग्रहः घाण्ड्यकराणाम्
95. पराधातनमनाश्रद्धाजननानाम्
96. अनशनमायुषो हासकराणाम्
97. प्रमिताशनं कर्शनीयानाम्
98. अजीर्णध्यशनं ग्रहणीदूषणानाम्
99. विषमाशनमग्निवैषम्यकराणाम्
100. विरुद्धवीर्यशनं निन्दितव्याधिकराणाम्
101. प्रशमः पथ्यानाम्
102. आयासः सर्वापथ्यानाम्
103. मिथ्यायोगो व्याधिकराणाम्
104. रजस्वलाभिगमनमलक्ष्मीमुखानाम्
105. ब्रह्मचर्यमायुष्याणाम्
106. परदाराभिगमनमनायुष्याणाम्
107. संकल्पो वृष्याणाम्

मिश्रक गण

108. दौर्मनस्यमवृप्याणाम्
109. अयथाबलमारम्भः प्राणोपरोधिनाम्
110. विषादो रोगवर्धनानाम्
111. स्नानं श्रमहराणाम्
112. हर्षः प्रीणनानाम्
113. शोकः शोषणानाम्
114. निवृत्तिः पुष्टिकराणाम्
115. पुष्टिः स्वप्नकराणाम्
116. अतिस्वप्नस्तन्द्रकराणाम्
117. सर्वरसाभ्यासो बलकराणाम्
118. एकरसाभ्यासो दौर्बल्यकराणाम्
119. गर्भशल्यमाहार्याणाम्
120. अजीर्णमुद्धार्याणाम्
121. बालो मृदुभेषजीयानाम्
122. वृद्धो याप्यानाम्
123. गर्भिणी तीक्ष्णौषधव्यवायव्यामवर्जनीयानाम्
124. सौमनस्यं गर्भधारणानाम्
125. सन्निपातो दुश्शिकित्स्यानाम्
126. आमो विषमचिकित्सानाम्

2020-7-11

127. ज्वरो रोगाणाम्
128. कुप्तं दीर्घरोगाणाम्
129. राजयक्षमा रोगसमूहानाम्
130. प्रमेहोऽनुषंगिणाम्
131. जलौकसोऽनुशस्त्राणाम्
132. बस्तिस्तन्त्राणाम्
133. हिमवानौषधिभूमीनाम्
134. सोम ओषधीनाम्
135. मरुभूमिरारोग्यदेशानाम्
136. अनूपोऽहितदेशानाम्
137. निर्देशकारित्वमातुरगुणानाम्
138. भिषक् चिकित्सांगानाम्
139. नास्तिको वर्ज्यानाम्
140. लौल्यं क्लेशकराणाम्
141. अनिर्देशकारित्वमरिष्टानाम्
142. अनिर्वेदो वार्तलक्षणानाम्
143. वैद्यसमूहो निःसंशयकराणाम्
144. योगो वैद्यगुणानाम्
145. विज्ञानमौषधीनाम्

मिश्रक गण

146. शास्त्रसहितस्तर्कः साधनानाम्
147. संप्रतिपत्तिः कालज्ञानप्रयोजनानाम्
148. अव्यवसायः कालातिपत्तिहेतूनाम्
149. दृष्टकर्मता निःसंशयकराणाम्
150. असमर्थता भयकराणाम्
151. तद्विद्यसंभाषा बुद्धिवर्धनानाम्
152. आचार्यः शास्त्राधिगमहेतूनाम्
153. आयुर्वेदोऽमृतानाम्
154. सद्वचनमनुष्ठेयानाम्
155. असद्ग्रहणं सर्वाहितानाम्
156. सर्वसन्यासः सुखानाम्

वाग्भटोक्त अग्र औषधि वर्ग -

1. मुस्तापर्फटकं ज्वरे
2. तृष्णि जलं मृदृष्टलोष्टोद्भवम्
3. लाजाशर्दिषु
4. बस्तिजेषु गिरिजम्
5. मेहेषु धात्रीनिशे
6. पाण्डों श्रेष्ठमयो
7. अभयोऽनिलकफे

8. प्लीहामये पिप्पली
9. सन्धाने कृमिजा
10. विषे शुकतरुः
11. मेदोनिले गुग्गुलुः
12. वृषोऽस्तपित्ते
13. कुटजोऽतिसारे
14. भल्लातकोऽर्शःसु
15. गरेषु हेम
16. स्थूलेषु ताक्ष्यम्
17. क्रिमिषु कृमिघ्नम्
18. शोषे सुरा
19. च्छागपयोऽथ मांसम्
20. अक्ष्यामयेषु त्रिफला
21. गुड्ढची वातासरोगे
22. मथितं ग्रहण्याम्
23. कुप्तेषु सेव्यः खदिरस्य सारः
24. सर्वेषु रोगेषु शिलाह्यम्
25. उन्मादं घृतमनवम्
26. शोकं मद्यम्

27. व्यापमृतिं ब्राह्मी
28. निद्रानाशं क्षीरं जयति
29. रसाला प्रतिश्यायम्
30. मांसं काश्यम्
31. लशुनः प्रभञ्जनम्
32. स्तब्धगात्रात् स्वेदः
33. गुडमञ्जर्याः खपुरो नस्यात् स्कन्धांसवाहुरुजम्
34. नवनीतखण्डमर्दितमौष्ट्रं मूत्रं पयश्च हन्त्युदरम्
35. नस्यं मूर्धविकारान्
36. विद्रधिमचिरोत्थमस्वविस्तावः
37. नस्यं कवलो मुखजान्
38. नस्याऽजनतर्पणानि नेत्ररुजः
39. वृद्धत्वं क्षीरघृते
40. मूर्च्छा शीताम्बुमारुतच्छायाः
41. समशुक्ताद्रकमात्रा मन्दे वहौ
42. श्रमे सुरा स्नानम्
43. दुःखसहत्वे स्थैर्ये व्यायामो
44. गोक्षुर्हितः कृच्छ्रे
45. कासे निदिधिका

2020-7-11

46. पार्श्वशूले पुष्करजा जटा
47. वयसः स्थापने धात्री
48. त्रिफला गुग्गुलुक्रिणे
49. बस्तिवातविकारान्
50. पैत्तान् रेकः
51. कफोद्वान् वमनम्
52. क्षौद्रं जयति बलासम्
53. सर्पिः पित्तम्
54. समीरणं तैलम्

जांगम गण

क्षीराष्ट्रक -

अविक्षीरमजाक्षीरं गोक्षीरं माहिषं च यत्।

उष्ट्रीणामथ नागीनां वडवायाः स्त्रियास्तथा ॥ च.सू. 1.106

अवि दुग्ध + अजा दुग्ध + गोदुग्ध + माहिष दुग्ध + उष्ट्री दुग्ध +
हस्तिनी दुग्ध + अश्व दुग्ध + स्त्री दुग्ध

मूत्राष्ट्रक -

अविमूत्रमजामूत्रं गोमूत्रं माहिषं च यत् ॥

हस्तिमूत्रमथोष्ट्रस्य हयस्य च खरस्य च ।

च.सू. 1.93-94

पित्रक गण

अविमूत्र + अजामूत्र + गोमूत्र + माहिष मूत्र + हस्ति मूत्र +
उष्ट्र मूत्र + अश्व मूत्र + गर्दभ मूत्र

प्रथम चार प्राणियों के मादा का तथा अन्तिम चार प्राणियों के नर का
मूत्र ग्रहण करना चाहिए।

पित्त पञ्चक -

पित्तं पञ्चविधं मत्स्यगवाश्वनरब्हिंजम् ।

मत्स्य पित्त + गोपित्त + अश्व पित्त + नर पित्त + मयूर पित्त

पार्थिव गण

लवण पञ्चक -

सैन्धवञ्चाथ सामुद्रं विडं सौवर्चलं तथा ।

रोमकञ्चेति विज्ञेयं बुधैर्लवणपञ्चकम् ॥

र त 2.3

सैन्धव लवण (Rock salt) + सामुद्र लवण (sea salt) + विड
लवण (omononium chloride) + सौवर्चल लवण (black
salt) + रोमक लवण (black salt)

क्षार द्रव्य -

स्वर्जिका यावशूकश्च क्षारद्रव्यमुदाहृतम् ।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग ॥ 257

स्वर्जिकाश + यवक्षार

2020-7-1

क्षाराष्टक -

पलाशबज्जिशिखरिचिङ्गार्कतिलानालजा: ॥

यवजः स्वर्जिका चेति क्षाराष्टकमुदाहृतम्।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग । 258-259

पलाश क्षार + बज्जिक्षार + शिखरि क्षार + चिङ्गा क्षार + अर्कक्षार +
तिलनाल क्षार + यवक्षार + स्वर्जिक्षार

• • •

11. द्रव्य नामकरण सिद्धान्त

द्रव्य नामकरण का सिद्धान्त

नरहरि पण्डित मतेन -

नामानि क्वचिदिहं रूढिः प्रभावात् देश्योक्त्या क्वचन च
लाज्जनोपमाऽन्याम्।

वीर्येण क्वचिदितराह्वयादिदेशात् द्रव्याणां धूवमिति
सप्तधोदितानि ॥ रा.नि. प्रस्तावना ॥ 13

- (1) रूढः (2) प्रभाव (3) देश्योक्ति (4) लाज्जन
- (5) उपमा (6) वीर्य (7) इतराह्वय

द्रव्य नामकरण के आधार

- (1) बाह्य रचना के आधार पर
- (2) उपमा के आधार पर
- (3) देश या उत्पत्ति स्थान के आधार पर

2020-7-1

- (4) काल के आधार पर
- (5) गन्ध के आधार पर
- (6) रस के आधार पर
- (7) कर्म के आधार पर
- (8) प्राचीन मान्यताओं एवं धार्मिक अनुष्ठानों के आधार पर
- (9) सामान्य प्रयोगों के आधार पर
- (10) ऐतिहासिकता के आधार पर
- (11) विभिन्न जन्तुओं एवं उनके अंग-प्रत्यंग के आधार पर
- (12) विशेष आन्तरिक संरचना के आधार पर
- (13) लाञ्छन चिह्न के आधार पर
- (14) रूढ़ि के आधार पर
- (15) वीर्य के आधार पर
- (16) इतराह्वा

पर्याय

एकं तु नाम प्रथितं बहूनामेकस्य नामानि तथा बहूनि ।

द्रव्यस्य जात्याकृतिवर्णवीर्यरसप्रभावादिगुर्णर्भवन्ति ॥ ध.नि. ९

द्रव्य की जाति, आकृति, वर्ण, वीर्य, रस, प्रभाव आदि गुणों से बहुत द्रव्यों का एक ही नाम विख्यात होता है और एक ही द्रव्य के बहुत से नाम होते हैं।

महत्त्व -

अनामविम्मोहमुपैति वैद्यो न वेत्ति पश्यन्नपि भेषजानि । ध.नि 13
जो वैद्य औषध के नाम (एवं पर्याय) को नहीं जानते हैं, वे सन्देहयुक्त होते हैं। वे औषधियों को देखते हुए भी नहीं जानते या नहीं पहचान पाते।

• • •

12. भेषज परीक्षा विधि आदि

भेषज परीक्षा विधि

करणं पुनर्भेषजम्। भेषजं नाम तद्युपकरणायोपकल्पते भिषजो धातुसाम्याभिनिर्वृत्तौ प्रयत्मानस्य विशेषतश्चोपायान्तेभ्यः।

तद्विविधं व्यपाश्रयभेदात् – दैवव्यपाश्रयं, युक्तिव्यपाश्रयं चेति।

तत्र दैवव्यपाश्रयं – मन्त्रौषधिमणिमंगलबल्युपहारहोम-नियमप्रायश्चित्तोप- वासस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादि, युक्तिव्यपाश्रयं – संशोधनोपशमने चेष्टाश्च दृष्टफलाः। एतच्चेव भेषजमंगभेदादपि द्विविधं – द्रव्यभूतम्, अद्रव्यभूतं च। यत्र यदद्रव्यभूतं तदुपायाभिष्ठुतम्। उपायो नाम भयदर्शन-विस्मापनविस्मारणक्षोभणहर्षणभर्त्सनवधबन्धस्वजसंवाहनादिरमूर्तौ भावविशेषो यथोक्ताः सिद्धयुपायाश्चोपायाभिष्ठुता इति। यतु

द्रव्यभूतं तद्वमनादिपु योगमुपेति। तस्यापीयं परीक्षा – इदमेवं प्रकृत्यैवं गुणमेवं भावमस्मिन् देशे जातमस्मिन् नृतावेवं गृहीतमेवं निहितमेवमुपस्कृतमनया च मात्रया युक्तमस्मिन् व्याधावेवं विधस्य पुरुषस्यैवतावन्तं दोषमपकर्त्युपशमयति वा, यदन्यदपि चैवंविधं भेषजं भवेत्तच्चानेन विशेषेण युक्तमिति॥

च.वि. 8.87

भेषज को 'करण' कहते हैं। भेषज वह है - जो धातुसाम्य (रोगमुक्ति) के लिए प्रयत्नशील चिकित्सक के लिए विशेष कर कार्ययोनि, प्रवृत्ति, देश, काल तथा उपाय पर्यन्त पूर्वोक्त साधन सहायक होता है।

आश्रय भेद से भेषज के दो प्रकार -

1. दैवव्यपाश्रय 2. युक्तिव्यपाश्रय

1. दैवव्यपाश्रय भेषज – दैवव्यपाश्रय के अन्तर्गत मन्त्र, औषधि, मणि, मंगल, बलि, उपहार, होम, नियम, प्रायश्चित्तादि ये सभी विधियाँ समाविष्ट हैं।

2. युक्तिव्यपाश्रय भेषज – युक्तिव्यपाश्रय के अन्तर्गत संशोधन, उपशमन और प्रत्यक्ष फलदायी समस्त क्रियायें समाविष्ट हैं।

अंगभेद से भेषज के दो प्रकार – 1. द्रव्यभूत 2. अद्रव्यभूत

1. अद्रव्यभूत भेषज – अद्रव्यभूत उपायों द्वारा व्याप्त है। उपाय हैं

2020-7-1

- भयदर्शन, विस्मापन, विस्मारण, क्षोभण, हर्षण, भर्त्सन, वध, बधन आदि।

2. द्रव्यभूत भेषज - द्रव्यभूत का प्रयोग वमनादि मूर्ति क्रियाओं में होता है।

इस द्रव्य की इस प्रकार परीक्षा करनी चाहिए -

1. यह द्रव्य इस प्रकृति (स्वभाव) का है।
2. यह इस द्रव्य का गुण है।
3. यह इस द्रव्य का प्रभाव है।
4. यह द्रव्य इस देश में, ऋतु में उत्पन्न हुआ है।
5. यह द्रव्य इस ऋतु में ग्रहण किया गया।
6. यह द्रव्य इस स्थान पर इस तरह संग्रहीत किया गया।
7. यह द्रव्य इन क्रियाओं द्वारा निर्मित किया गया। आदि।

द्रव्य संग्रह

तानि तु द्रव्याणि देश-काल-गुण-भाजन- संपद्धीर्यबला-
धानात् क्रियासमर्थतमानि भवन्ति ॥ च क 1.7

द्रव्यसंग्रहार्थ प्रशस्त भूमि -

श्वभ्रशकराश्मविषमवल्मीकश्मशानाधातनदेवतायतन सिकता-
भिरनुपहतामनूषरामभंगुरामदूरोदकां स्निग्धां प्ररोहवतीं मृद्धीं

तिथरां समां कृष्णां गौरीं लोहितां वा भूमिमौषधग्रहणाय
परीक्षेत। सु.सू. 36.3

- श्वभ्र - शर्करा - अश्म - विषम - वल्मीक - श्मशान -
आधातन - देवतायन - सिकता आदि से रहित भूमि
- अनूपर - अभंगुर - उदक युक्त - स्त्रिग्राध - प्ररोहवती - मृदु -
स्थिर - सम - कृष्ण - गौरी - लोहित वर्णीय मृत्तिका से युक्त

प्रयोज्यांगानुसार संग्रह काल

सामान्य काल (शा.पू. 1.59) -

- सभी कार्यों के लिए - शरद ऋतु
- वमन एवं विरेचन कर्म के लिए - वसन्त ऋतु
- प्रातःकाल में (गृहणीयात्तानि सुमनाः शुचिः प्रातः सुवासरे ॥
शा.पू. 1.56)

विशेष काल -

- आचार्य चरक मतेन - 9 (च.क. 1)
- आचार्य सुश्रुत मतेन - 6 (सु.सू. 36)
- आचार्य नरहरि पण्डित मतेन - 5
- तेषां शाखापलाशामचिरप्रसूठं वर्षावसन्तयोग्राह्यं,
ग्रीष्मे मूलानि शिशिरे वा शीर्णप्रसूठपर्णानां,

शरदि त्वक्कन्दक्षीराणि, हेमन्ते साराणि, यथर्तु पुष्पफलमिति ॥

च.क. 1/10

द्रव्य अंग	आचार्य चरक मतेन	आचार्य सुश्रुत द्वारा उल्लिखित अन्य का मत	आचार्य नरहरि पण्डित मतेन
शाखा	वर्षा एवं वसन्त	-	-
पत्र	पल्लव - वर्षा एवं वसन्त	वर्षा	ग्रीष्म
मूल	शीर्णप्ररूढपर्ण - ग्रीष्म एवं शिशिर	प्रावृद्	शिशिर
त्वक्	शरद्	शरद्	-
कन्द	शरद्	-	हेमन्त
क्षीर	शरद्	हेमन्त	-
सार	हेमन्त	वसन्त	-
पुष्प	यथा काल	-	वसन्त
फल	यथा काल	ग्रीष्म	-
पञ्चांग	-	-	शरद्

द्रव्यगुण विज्ञान

भेषज परीक्षा विधि आदि

119

आचार्य सुश्रुत मतेन - सौम्य औषधियों को सौम्य ऋतु में तथा आग्नेय औषधियों को आग्नेय ऋतु में संग्रह करना चाहिए।

द्रव्य संग्रह स्थल

सामान्य -

आग्नेया विन्ध्यशैलाद्याः सौम्यो हिमगिरिर्मतः । शा.पू. 1.55

- आग्नेय द्रव्य → विन्ध्य पर्वत क्षेत्र
- सौम्य द्रव्य → हिमालय पर्वत क्षेत्र

पञ्चमहाभूतानुसार (सु.सू. 36.6) -

- विरेचनार्थ द्रव्य → पृथिवी एवं जल महाभूत प्रधान भूमि से
- बमनार्थ द्रव्य → अग्नि, आकाश एवं वायु महाभूत प्रधान भूमि से
- उभय कर्मार्थ द्रव्य → पञ्चमहाभूत प्रधान भूमि से
- शमन द्रव्य → आकाश महाभूत प्रधान भूमि से

देश एवं भूमि

देशस्त्वधिष्ठनम् ॥

च.वि. 8.75

रोग या चिकित्सोपयोगी द्रव्य मात्र का जो आधार है वह देश है।

देशो भूमिरातुरश्च ।

च.वि. 8.84

भूमि और आतुर को देश कहते हैं।

2020-7-11

भेद -

भूमिदेहप्रभेदेन देशमाहुरिह द्विधा ।

जांगलं वातभूयिष्ठमनूपं तु कफोल्वणम् ॥

साधारणं सममलं त्रिधा भूदेशमादिशेत् ।

अ.ह.सू. 1/23-24

देश

भूमि देश

देह देश

जांगल - वातभूयिष्ठ

अनूप - कफभूयिष्ठ

साधारण - समदोषज

अल्पोदकदुमो यस्तु प्रवातः प्रचुरातपः ।

ज्ञेयः स जांगलो देशः स्वल्परोगतमोऽपि च ॥

प्रचुरोदकवृक्षो यो निवातो दुर्लभातपः ।

अनूपो बहुदोषश्च, समः साधारणो मतः ॥ च.वि. 3.47-48

देश के भेद

जांगल देश	आनूप देश	साधारण देश
• अल्प जलाशय एवं अल्प वृक्ष	• प्रचुर जलाशय एवं प्रचुर वृक्ष	• सम
• प्रवात एवं प्रचुर मात्रा में आतप	• निवात एवं दुर्लभ मात्रा में आतप	

भेषज परीक्षा विधि आदि

121

जांगल देश	आनूप देश	साधारण देश
<ul style="list-style-type: none"> स्वल्प रोग युक्त देश ‘मरुभूमिरारोग्य-देशानाम्।’ च.सू. 25.40 	<ul style="list-style-type: none"> बहु दोष युक्त देश ‘अनूपोऽहित-देशानाम्।’ च.सू. 25.40 	

भेषजागार

सन्दर्भ -

• सुश्रुत संहिता सूत्रस्थान 36 एवं 38

• अष्टांग संग्रह सूत्रस्थान 8

प्लोतमृद्दाण्डफलकशंकुविन्यस्तभेषजम् ।

प्रशस्तायां दिशि शुचौ भेषजागारमिष्यते ॥

सु.सू. 36.17

धूमवर्षानिलक्लेदैः सर्वर्तुष्वनभिदुते ।

ग्राहयित्वा गृहे न्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

सु.सू. 38.81

- प्लोत - मृत्तिका भाण्ड - फलक - शंकु पर औषध रखने की पूर्व या उत्तर दिशा में अच्छी स्वस्थ व्यवस्था हो

- उत्तम भूमि पर निर्मित

- धूम - वर्षा - वायु - क्लेद से रहित गृह ।

२०२०-८-११

प्रयोज्यांग

औंद्रिद् द्रव्यों के प्रयोज्यांग –

मूलत्वक्षसारनिर्यासनाल(ड)स्वरसपल्लवाः।

क्षारः क्षीरं फलं पुष्पं भस्म तैलानि कण्टकाः॥

पत्राणि शुंगाः कन्दाश्च प्ररोहाश्चौद्धिदो गणः। च.सू. 1.73-74

- मूल	- त्वक्	- सार	- निर्यास
- नाल	- स्वरस	- पल्लव	- क्षार
- क्षीर	- फल	- पुष्प	- भस्म
- तैल	- कण्टक	- पत्र	- शुंग
- कन्द	- प्ररोह		

जांगम द्रव्यों के प्रयोज्यांग –

मधूनि गोरसाः पित्तं वसा मज्जाऽसृगामिषम्॥

विष्मूत्रचमरितोस्थिस्नायुशृंगनखाः खुराः।

जंगमेभ्यः प्रयुज्यन्ते केशा लोमानि रोचनाः॥ च.सू. 1.68-69

- मधु	- गोरस	- पित्त	- वसा
- मज्जा	- रक्त	- आमिष	- विट्
- मूत्र	- चर्म	- रेतस्	- अस्थि
- स्नायु	- शृंग	- नख	- खुर
- केश	- लोम	- रोचना	

• • •

पेपर 1 भाग ब

13. द्रव्य शोधनादि प्रकरण

शोधन प्रकरण

परिभाषा –

शोधनं कर्म विज्ञेयं द्रव्यदोषनिवारणम्।

प्रियब्रत शर्मा

उद्दिष्टरौषधैः सार्वद्वयते पेषणादिकम्।

मलविच्छितये यतु शोधनं तदिहोच्यते॥

र.त. 2/52

किसी भी द्रव्य के मल को दूर करने के लिए बताई गई औषधियों के साथ मिलाकर मर्दन, क्षालन, निर्वाप आदि कर्म करने को शोधन कहा जाता है।

विविध द्रव्यों की शोधन विधि

वत्सनाभ – वत्सनाभ के चने के बराबर छोटे-छोटे टुकड़े कर गोदुग्ध अजादुरध में दोलायन विधि से 6 घण्टे तक स्वेदन कर लेने से शुद्ध हो जाता है।

कुचला – कुचला बीज को काज्जी में डुबो कर 3 दिन तक पड़ा

2020-7-1

द्रव्यगुण विज्ञान

रहने दें तथा तीन दिन बाद बीजों को काढ़ी में निकालकर बाहरी त्वचा को छीलकर अलग कर दें तेथे धूप में सुखा कर लोहे के इमामदस्ते में कूटकर चूर्ण कर रख लें।

- जयपाल -** जयपाल के नूतन बीज को लेकर सर्वप्रथम उसका छिलका तथा बीज के दो दलों को अलग करके बीच के हरें रंग के अंकुर सदृश जीभ को निकाल दें। अब जीभरहित बीज मज्जा को एक कपड़े में बॉधक दोलायन्न विधि से 1 प्रहर तक स्वेदन कर शुद्ध करें।
- धन्तूर -** धन्तूर बीज को दोलायन्न विधि से गोदुग्ध में 3 घण्टे तक स्वेदन कर तत्पश्चात् गर्म जल से प्रक्षालन कर सुखा लें से धन्तूर बीज शुद्ध हो जाता है।

- भांग -** भांग की पत्ती को जल में भिगो-निचोड़ कर धूप में सुखा लेने के पश्चात् इसे गोबृत में मन्द-मन्द अग्नि पर भज लें, इस प्रकार भांग शुद्ध हो जाती है।

- भल्लातक -** एक मजबूत कपड़े की पोट्टी अथवा थैली में भल्लातक एवं इष्टिका चूर्ण भर कर हाथों के मध्यम दबाव से रगड़। जब ईंट का चूर्ण तैल से तर हो जाय और भल्लातक की त्वचा निकल जाय तब इसे गरम पानी में डालकर अच्छी प्रकार धोकर साफ कर सुखाकर रख लें।

द्रव्य शोधनादि प्रकरण

गुज्जा -

मुही -

लांगली -

अहिफेन -

अतिविषा -

गुगुलु -

नवीन गुज्जा बीज के मोटे चूर्ण को द्विगुण वस्त्र की पोट्टी में बॉधकर गोदुग्ध में दोलायन्न विधि से 6 घण्टे (2 प्रहर) स्वेदन कर लेने से गुज्जा बीज शुद्ध हो जाता है।

दो पल (8 तोला) सुहीदुग्ध तथा 2 तोले चिञ्चा (इमली) पत्र स्वरस (कपड़े से छना हुआ) को एकत्र मिलाकर धूप में सुखा कर रख लें, इस प्रकार सुहीदुग्ध शुद्ध हो जाता है।

लांगली को गोमूत्र में एक दिन रखने से यह शुद्ध हो जाता है।

जल एवं गोदुग्ध द्वारा स्वच्छ अहिफेन को आर्द्रक स्वरस की सात से इक्कीस भावना देकर सुखा कर रख लेने से अहिफेन शुद्ध हो जाता है।

अतिविषा को गोमय रस में स्वेदन करके धूप में सुखा लेने सुशुद्धिकरण हो जाता है।

गुगुलु को एक प्रहर तक चौगुने गोदुग्ध में स्वेदन कर शुद्ध करना चाहिए।

अभाव प्रतिनिधि द्रव्य

योगरत्नाकर मतेन -

द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य	द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य
गुडूची सत्त्व	गुडूची स्वरस	चित्रक	- दन्ती - अपामार्ग
धन्वयास	दुरालभा	तगर	कुष्ठ
मूर्वा	जिंगिनी	अहिंसा	मानकन्द
लक्ष्मणा	नीलकण्ठशिखा	बकुल	कहलार
उत्पल	पंकज	नीलोत्पल	कुमुद
कमल	कमलाक्ष	बकुल	आभा त्वक्
जातीपत्र	- लवंग - जातीफल	अर्कादि क्षीर	अर्कादि पत्र
पुष्कर	- कुष्ठ - एरण्ड मूल	स्थौर्णेयक	कुष्ठ
- चविका - गजपिण्डी	पिण्डीमूल	सोमराजी	प्रपुन्नाट फल
दार्ढी	हरिद्रा	रसायन	दार्ढी
सौराष्ट्रिका	स्फटिक	तालीसपत्र	स्वर्णताली
भार्गा	- तालीसपत्र - कण्टकारी मूल	रुचक लवण	पांसुत्थ लवण

द्रव्यगुण विज्ञान

द्रव्य शोधनादि प्रकरण

द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य	द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य
लवण	सेन्धव	यस्तीमभु	धातकी
अम्लवेतस	चुक्र	चुक्र	जम्बीरादि
द्राक्षा	काश्मरीफल	- द्राक्षा - कुमुम	मधूक
नर्खा	लवंग कुसुम	कस्तूरी	- कंकोल - जातीपुष्य - मालतीपुष्य या पत्र
कर्पूर	- सुगन्धि मुस्तक - ग्रन्थिपर्ण	कुंकुम	नवीन कुसुम्भ पुष्य
- श्रीखण्ड चन्दन - क्षेत्रचन्दन	कर्पूर		

अष्टवर्ग के प्रतिनिधि द्रव्य (भावमिश्र मतेन) -

1. जीवक → विदारीकन्द
2. ऋषभक → विदारीकन्द
3. मेदा → शतावरी
4. महामेदा → शतावरी

(वि २। ३८९)

2020-7-11

5. काकोली → अश्वगन्था
 6. क्षीरकाकोली → अश्वगन्था
 7. ऋद्धि → वाराहीकन्द
 8. वृद्धि → वाराहीकन्द
-

द्रव्यगुण विज्ञान

Plant extract - FOOD VATT
Fluid extracts, oils, oil essences
Dry extracts, Agaric, Tincture
Thin -

14. प्रशस्त भेषजादि प्रकरण

प्रशस्त भेषज्य

बहुता तत्रयोग्यत्वमनेकविधकल्पना।
 संपच्चेति चतुष्कोऽयं द्रव्याणां गुण उच्यते॥ च.सू. 9.7

- बहुता - योग्यता - अनेकविधकल्पना - सम्पत्

तदेव युक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते।

स चैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत्॥ च.सू. 1.134

वही भैषज्य श्रेष्ठ है जो आरोग्य दान में सक्षम हो।

बहुकल्पं बहुगुणं सम्पन्नं योग्यमौषधम्॥ अ.ह.सू. 1/28

- बहुकल्पम् - बहुगुणम् - सम्पन्न - योग्य

विरुद्ध द्रव्य सिद्धान्त

परिभाषा - जब दो या दो से अधिक औषधि द्रव्यों का संयोग रोगी के लिए हितकारक न होकर अहितकारक होता है, तब इसे 'विरोध' / 'विरुद्ध संयोग' / 'असंयोज्यता' कहा जाता है।

2020-7-1

यत् किञ्चिद्दोषमास्त्राव्यं न निर्हरति कायतः ।
आहारजातं तत् सर्वमहितायोपपद्यते ॥

जो कोई द्रव्य विशेष किसी दोषविशेष को प्रकृपित कर शरीर से बाहर निर्हरण नहीं करता है, उस सम्पूर्ण द्रव्य समूह को 'अहितकारक' (विरोधी) कहते हैं।

यत्किञ्चिद्दोषमुत्क्लेश्य भुक्तं कायान्न निर्हरेत् ।
रसादिष्वयथार्थं वा तद्विकाराय कल्पते ॥

जो भुक्त द्रव्य दोषों को प्रकृपित कर तथा रसादियों में विकारोत्पत्ति करते हैं किन्तु शरीर से बाहर उत्सर्ग नहीं करते हैं वे विकार उत्पन्न करते हैं।

विरुद्ध द्रव्य संयोग के भेद -

आचार्य चरक मतेन - 18

यच्चापि देशकालाग्निमात्रासात्प्यानिलादिभिः ।

संस्कारतो वीर्यतश्च कोष्ठावस्थाक्रमैरपि ॥

परिहारोपचाराभ्यां पाकात् संयोगतोऽपि च ।

विरुद्धं तच्च न हितं हृत्संपद्विधिभिश्च यत् ॥ च.सू. 26.86-87

- | | |
|-----------------------|----------------------|
| (1) देश - विरुद्ध | (2) काल - विरुद्ध |
| (3) अग्नि - विरुद्ध | (4) मात्रा - विरुद्ध |
| (5) सात्प्य - विरुद्ध | (6) दोष - विरुद्ध |

प्रशस्त भेषजादि प्रकरण

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| (7) संस्कार - विरुद्ध | (8) वीर्य - विरुद्ध |
| (9) कोष्ठ - विरुद्ध | (10) अवस्था - विरुद्ध |
| (11) क्रम - विरुद्ध | (12) परिहार - विरुद्ध |
| (13) उपचार - विरुद्ध | (14) पाक - विरुद्ध |
| (15) संयोग - विरुद्ध | (16) हृदय - विरुद्ध |
| (17) सम्पद - विरुद्ध | (18) विधि - विरुद्ध |

विरुद्ध संयोग की व्याधिजनकता -

घाणद्यान्ध्यवीसर्पदकोदराणां विस्फोटकोन्मादभगन्दराणाम् ।

मूर्च्छमदाध्मानगलग्रहाणां पाण्डवामयस्यामविषस्य चैव ॥

किलासकुष्ठग्रहणीगदानां शोथाम्लपित्तज्वरपीनसानाम् ।

सन्तानदोषस्य तथैव मृत्योर्विरुद्धमनं प्रवदन्ति हेतुम् ॥

च.सू. 26.102-103

घाणद्य	आन्ध्य	विसर्प	दकोदर	विस्फोट
उन्माद	भगन्दर	मूर्च्छा	मद	आध्मान
गलग्रह	पाण्डुरोग	आमविष	किलास	कुष्ठ
ग्रहणीगद	शोथ	अम्लपित्त	ज्वर	पीनस
सन्तानदोष	मृत्यु			

• • •

2020-7-11

15. निघण्टु विज्ञान

धन्वन्तरि निघण्टु -

लेखक: महेन्द्र भोगिक

काल: 10 वीं शती

वैशिष्ट्य: द्रव्यों के पर्याय सहित गुणकर्मादि का विवेचन, प्रयोगों का वर्णन, वर्गीकरण और विभाजन एक स्थान पर संग्रहीत मिलता है। इसे विवेचन शैली को परवर्ती निघण्टुकारों ने भी अपनाया है।

समस्त औषधियों को 7 वर्गों में विभाजित किया है। यथा:

- गुदूच्यादिवर्ग (136 द्रव्यों का वर्णन)
- शतपुष्पादिवर्ग (54 द्रव्य)
- चन्दनादिवर्ग (79 द्रव्य)
- करबीरादिवर्ग (75 द्रव्य)
- आम्रादिवर्ग (74 द्रव्य)

निघण्टु विज्ञान

- सुवर्णादिवर्ग
- मिश्रकादिवर्ग

16वीं - 21वीं शताब्दी
भावप्रकाश निघण्टु

लेखक: भावमिश्र

निवास: कविराज गणनाथ सेन मतेन: वाराणसी। प्रियब्रत शर्मा मतेन:

माध्य

काल: 16 वीं शती

वैशिष्ट्य: भावप्रकाश निघण्टु यह मूल ग्रन्थ भावप्रकाश में वर्णित निघण्टु भाग है। भावमिश्र ने इस निघण्टु भाग में मदनपाल का अनुसरण किया है। यथा: इसमें विषय वस्तु 23 वर्गों में विभाजित की गई है।

- | | | |
|-------------------|--------------------|-------------------|
| - हरीतक्यादि वर्ग | - कर्पूरादि वर्ग | - गुदूच्यादि वर्ग |
| - पुष्प वर्ग | - वटादि वर्ग | - आम्रादि वर्ग |
| - धात्वादि वर्ग | - धान्य वर्ग | - शाक वर्ग |
| - मांस वर्ग | - कृतान्न वर्ग | - वारिवर्ग |
| - दुग्ध वर्ग | - दधि वर्ग | - तक्र वर्ग |
| - नवनीत वर्ग | - घृत वर्ग | - मूत्र वर्ग |
| - तैल वर्ग | - सन्धान वर्ग | - मधु वर्ग |
| - इक्षु वर्ग | - अनेकार्थनाम वर्ग | |

2020-7-1

राज निघण्टु

लेखक: नरहरि पण्डित

निवास: कश्मीर

काल: 17 वीं शती

ग्रन्थ पर्याय नाम: निघण्टु राज्ञभिधानचूड़ामणि

वैशिष्ट्य: नरहरि पण्डित शैब थे तथा सभी शास्त्रों में पारंगत थे।

निघण्टु में नामों पर विशेष रूप से विचार किया गया है जिसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा क्षेत्रिय नामों दृष्टि में रखा गया है। द्रव्यों के नामका का आधार निम्नोक्त 7 विषय हैं: R P U V D A U

- | | | | |
|---------|----------|-----------------|---------|
| - रूढ़ि | - प्रभाव | - देश्योक्ति | - आकृति |
| - उपमा | - वीर्य | - उत्पत्तिस्थान | |

इस निघण्टु में 23 वर्गों में द्रव्यों का विभाजन किया गया है। यथा:

- अनूपादि	- भूम्यादि	- गुडूच्यादि
- शताह्नादि	- पर्पटादि	- पिप्पल्यादि
- मूलकादि	- शाल्मल्यादि	- प्रभद्रादि
- करवीरादि	- आम्रादि	- चन्दनादि
- सुवर्णादि	- पानीयादि	- क्षीरादि
- शाल्यादि	- मांस वर्ग	- मनुष्यादि वर्ग
- सिंहादि वर्ग	- रोगादि	- सत्त्वादि
- मिश्रकादि	- एकार्थादि	
• • •		

16. Pharmacology

Definitions

Pharmacology – The science of drugs is known as 'Pharmacology'.

Pharmacon (drug) + logos (science) = Pharmacology

Pharmacodynamics – The study of effects of drugs on the body is known as 'Pharmacodynamics'.

Pharmacokinetics – The study of bodies reaction towards the drug is known as 'Pharmacokinetics'.

Drug – A substance that is used for diagnosis, treatment and prevention of diseases is known as a 'Drug'.

Father of Pharmacology – Oswald Schmiedeberg

2020-7

Essential drugs – As per WHO Essential drugs are 'those that satisfy the priority health care needs of the population'.

Bio-availability – The rate and extent of absorption of a drug from a given dosage. It is determined by drug's concentration - time curve in blood or by its excretion in the urine.

Synergism – The action of one drug is facilitated or increased by the other drug; this relationship is known as 'Synergism'.

Antagonism – The action of one drug is decreased or abolished by the other drug; this relationship is known as 'Antagonism'.

Drug dosage – The appropriate amount of a drug needed to produce required degree of response is known as its dosage.

Adverse drug effect – An undesirable or unintended consequence of a drug administration is known as 'Adverse drug effect'.

Pharmacovigilance – The science and activities related to the recognition, evaluation, understanding and

prevention of adverse effects or any complications related to drugs is known as 'Pharmacovigilence'.

Drug Nomenclature

A drug has three categories of names -

1. Chemical name
2. Non-proprietary name
3. Proprietary name

Routes of Drug Administration

1. Local routes
 - a. Topical
 - b. Intra-arterial
 - c. Intra-articular
2. Systemic routes
 - a. Oral
 - b. Sub-lingual/ Buccal
 - c. Rectal
 - d. Cutaneous
 - e. Inhalation
 - f. Nasal
 - g. Parenteral

i. Subcutaneous (s.c.)

ii. Intra-muscular (i.m.)

iii. Intra-venous (i.v.)

iv. Inter-dermal

Routes of Drug Excretion

1. Urine

2. Feces/ stool

3. Saliva

4. Sweat

5. Exhaled air

6. Milk

Drugs for Cardio-vascular System

Beta - Blockers

1. Propranolol

2. Labetalol

3. Carvedilol

4. Pindolol

5. Oxprenolol

6. Metoprolol

7. Atenolol

8. Bisoprolol

9. Esmolol

10. Nebivolol

11. Celiprolol

Cardiac Glycosides

1. Digoxin

Anti-arrhythmic drugs

1. Membrane stabilizing agents (Na^+ channel blockers) - Quinidine - Procainamide - Lidocaine - Mexiletine - Adenosine

2. Anti-adrenergic agents (Beta blockers) - Propranolol - Esmolol

3. Agents widening AP (prolong repolarization) - Amiodarone - Sotalol

4. Calcium channel blockers - Verapamil - Diltiazem

Anti-hypertensive drugs

1. Sympathetic inhibitors - Clonidine - Methyldopa - Reserpine - Prazosin - Hydralazine - Indapamide - Dexazosin - Lacidipine

2020-7-1

2. ACE inhibitors - Captopril - Enalapril maleate, Lisinopril - Perindopril - Ramipril - Losartan potassium - Irbesartan - Valsartan - Olmesartan, Eprosartan mesylate - Amrinone etc.

Diuretics

1. Frusemide
2. Torasemide
3. Bumetanide
4. Spironolactone
5. Triamterene
6. Hydrochlorothiazide
7. Chlorthalidone
8. Acetazolamide
9. Telmisartan
10. Glyceral trinitrate
11. Nicorandil
12. Isosorbide dinitrate
13. Nifedipine
14. Verapamil

15. Diltiazem

16. Amlodipine

Peripheral vasodilators

1. Isoxsuprine
2. Cinnarizine
3. Cyclandelate
4. Pentoxifylline etc.

Coagulants

1. Vitamin K
2. Ethamsylate
3. Tranexamic acid
4. Calcium dobesilate
5. Aprotinin etc.

Anti-coagulants

1. Heparin
2. Daltiparin sodium
3. Reviparin sodium
4. Enoxaparin
5. Streptokinase

6. Urokinase
7. Abciximab
8. Tirofiban

Anti-platelet drugs

1. Aspirin
2. Clopidogrel
3. Cilostazol
4. Dipyridamole
5. Ticlopidine
6. Prasugrel etc.

Vasopressors

1. Dopamine HCl
2. Dobutamine HCl
3. Mephentermine
4. Phenylephrine

Drugs for pulmonary hypertension

1. Bosentan
2. Ambrisentan

Drugs for Musculo-Skeletal System

Opioid analgesics

1. Dextropropoxyphene
2. Pentazocine
3. Buprenorphine
4. Morphine sulphate
5. Tramadol HCl
6. Pethidine HCl etc.

Non-opioid analgesics

1. Aspirin
2. Leflunomide
3. Ibuprofen
4. Paracetamol
5. Carbamazepine
6. Naproxen
7. Auranofin
8. Indomethacin
9. Flurbiprofen
10. Mefenamic acid

2020-7

11. Piroxicam
 12. Tenoxicam
 13. Lornoxicam
 14. Diclofenac sodium/ potassium
 15. Aceclofenac potassium
 16. Nimesulide
 17. Diacerin
 18. Glucosamine sulphate
 19. Oxyphenbutazone
- Muscle Relaxants**
1. Dicyclomine
 2. Tizanidine
 3. Baclofen
 4. Chlormezanone
 5. Methocarbamol
 6. Carisoprodol
 7. Valethamate
 8. Drotaverine
 9. Thiocolchiside
 10. Metaxalone

प्रव्याप्ति विषय

*Pharmacology***Neuromuscular Drugs**

1. Anticholinesterase
2. Pyridostigmine bromide
3. Rivastigmine

Antibiotics**Penicillins**

1. Benzyl penicillin
2. Ampicillin
3. Cloxacillin
4. Carbenicillin
5. Piperacillin
6. Amoxycillin

Carbapenem

1. Meropenem trihydrate
2. Imipenem
3. Faropenem

Cephalosporins

1. Cephazolin sodium
2. Cefixine trihydrate

3. Ceftazidine
4. Cefalexin
5. Cefadroxil
6. Cefuroxime
7. Cefoperazone sodium
8. Cefpodoxime proxetil
9. Cefdinir etc.

Aminoglycosides

1. Amikacin
2. Tobramycin sulphate
3. Neomycin
4. Gentamicin
5. Kanamycin
6. Netilmicin

Tetracyclines

1. Doxycycline
2. Tetracycline
3. Minocycline

Chloramphenicol

1. Chloramphenicol

Macrolids

1. Azithromycin
2. Roxithromycin
3. Clarithromycin
4. Clindamycin
5. Erythromycin
6. Polymyxin B
7. Spiramycin
8. Vancomycin
9. Spectinomycin etc.

Oxazolidinones

1. Linezolid

Quinolones

1. Ciprofloxacin
2. Gemifloxacin
3. Sparfloxacin
4. Norfloxacin
5. Lomefloxacin
6. Levofloxacin

7. Ofloxacin
8. Nalidixic acid

Sulphonamides

1. Co-trimoxazole
2. Timethoprim
3. Sulphadiazine
4. Sulfamoxole

Anti-fungals

1. Amphotericin B
2. Nystatin
3. Hamycin
4. Griseofulvin
5. Ketoconazole
6. Terbinafine
7. Fluconazole
8. Itraconazole

Anti-malarials

1. Sulfonamides
2. Chloroquine

Pharmacology

3. Amodiaquine
4. Mefloquine
5. Quinine sulphate
6. Primaquine
7. Artesunate
8. Arteether
9. Lumefatrine
10. Proguanil HCl

Anti-leprotic drugs

1. Dapsone
2. Clofazimine

Anti-viral drugs

1. Acyclovir
2. Famciclovir
3. Ribavirin
4. Interferons
5. Amantadine

Anti-retroviral drugs

1. Abacavir sulphate

2. Didanosine
3. Lamivudine
4. Stavudine
5. Zidovudine
6. Adefovir
7. Tenofovir
8. Oseltamivir
9. Atazanavir etc.

Drugs for Protozoal infections

1. Metronidazole
2. Ornnidazole
3. Tinidazole
4. Secnidazole
5. Furazolidone

Anthelmintics

1. Mebendazole
2. Albendazole
3. Ivermectin
4. Niclosamide

Anti-tubercular drugs

1. Rifampicin
2. Isoniazid
3. Ethambutol
4. Pyrazinamide
5. Streptomycin
6. Cycloserine
7. Prothionamide etc.

Drugs for Central Nervous System

Sedatives and Tranquilizers

1. Diazepam
2. Alprazolam
3. Etizolam
4. Oxazepam
5. Buspirone
6. Lorazepam
7. Trifluoperazine
8. Quinidine
9. Melatonin etc.

Tricyclic and Related Anti-depressants

1. Amitriptylline
2. Imipramine
3. Amoxapine
4. Mirtazapine
5. Nitroxazepine
6. Fluoxetine HCl
7. Clomipramine
8. Doxepin
9. Escitalopram
10. Trimipramine
11. Sertaline HCl
12. Citalopram etc.

Antimanic drugs

1. Olanzapine
2. Lithium
3. Chlorpromazine
4. Haloperidol
5. Thioridazine

6. Loxapine
7. Clozapine etc.

Hypnotics

1. Barbiturates
2. Nitrazepam
3. Flurazepam
4. Zopiclone etc.

Anti-convulsants

1. Carbamazepine
2. Sodium valproate
3. Pregabalin
4. Clonazepam
5. Clobazem
6. Gabapentine etc.

Drugs for controlling rigidity & tremors

1. Levodopa
2. Carbidopa
3. Tetrabenazine
4. Ropinirole

5. Pramipexole
6. Selegiline
7. Bromocriptine
8. Amantadine
9. Piribedil

Anti-emetics and Anti-nauseants

1. Domperidone
2. Ondansetron
3. Granisetron
4. Prochlorperazine
5. Metoclopramide
6. Dimenhydriante
7. Promethazine theoclinate
8. Trifluoperazine etc.

Drugs for Migraine

1. Propranolol
2. Ergotamine
3. Sumatriptin
4. Flunarizine
5. Rizatriptan etc.

Cerebral activators

1. Piracetam
2. Pyritinol
3. Ginkgo Biloba
4. Dihydroergotoxine
5. Donepezil
6. Nimodipine
7. Galantamine etc.

Drugs for Peripheral Neuropathy

1. Mecobalamin
2. Methylcobalamin
3. Adenosylcobalamin
4. Benfotiamine
5. Epalrestat

Drugs for Gastro-intestinal System

H2 Blockers & Ulcer healing drugs

1. Cimetidine
2. Ranitidine
3. Famotidine

4. Omeprazole
5. Lansoprazole
6. Pantoprazole
7. Esomeprazole
8. Rabeprazole
9. Sucralfate
10. Misoprostol etc.

Drugs modifying intestinal motility and secretions

1. Propantheline
2. Metoclopramide
3. Oxyphenonium
4. Mosapride citrate
5. Isopropamide
6. Hyoscine butylbromide
7. Mebeverine
8. Itopride HCl etc.

Laxatives, Purgatives and Lubricants

1. Isapgol hunk
2. Sodium picosulphate

3. Liquid paraffin
4. Lactulose

Anti-diarrhoeals

1. Norfloxacin
2. Tinidazole
3. Metronidazole
4. Ornidazole
5. Ciprofloxacin

Non-specific Anti-diarrhoeal drugs

1. 5 - Aminosalicylic acid
2. Sulphasalazine
3. Balsalazide
4. Racecadotril
5. Loperamide
6. Diphenoxylate etc.

Carminatives

1. Sodium bicarbonate
2. Dill oil
3. Cinnamon oil

4. Citric acid
5. Alpha galactosidase etc.

Digestive enzyme preparations

1. Pepsin
2. Fungal diastase
3. Simethicone
4. Pancreatin

Drugs acting on Genito-urinary Tract

Antibiotics for Urinary tract

1. Nitrofurantoin

Urinary Tract analgesics and anti-spasmodics

1. Dehydroemetine
2. Phenazopyridine
3. Flavoxate HCl
4. Oxybutynin chloride
5. Alfuzocin
6. Tamsulosin HCl
7. Finesteride etc.

द्रव्यगुण विज्ञान

Pharmacology

Locally acting drugs for urethral and vaginal infections

1. Clotrimazole
2. Miconazole
3. Econazole
4. Hamycin
5. Nystatin
6. Ciclopirox olamine
7. Dienoestrol
8. Povidone iodine
9. Lactobacillus sporogenes
10. Chlorquinaldol

Uterine stimulants

1. Oxytocin
2. Isoxsuprine
3. Ritodrine HCl
4. Carboprost
5. Dinoprostone
6. Mifepristone

Drugs for erectile dysfunction

1. Sildenafil citrate
2. Tadalafil
3. Dapoxetine

Drugs for Respiratory System Expectorants, Anti-tussives & Mucolytics

- Expectorants -**
1. Directly acting - Sodium citrate, Potassium citrate, Potassium iodide, Guaiacol, Guaiphenesin, Balsam of Tolu, Vasaka etc.
 2. Reflexly acting - Ammonium chloride/carbonate, Potassium iodide, Ipecacuanha etc.

Anti-tussives -

1. Codeine
2. Pholcodeine
3. Ethylmorphine
4. Noscapine
5. Dextromethorphan etc.

Mucolytics -

1. Bromhexine
2. Acetyl cysteine etc.

Bronchodilators

1. Sympathomimetics - Salbutamol, Terbutaline, Bambuterol, Salmeterol, Ephedrine etc.
2. Methylxanthines - Theophylline, Aminophylline, Choline theophyllinate etc.
3. Anticholinergics - Ipratropium bromide etc.

Mast cell stabilizers

1. Sodium cromoglycate
2. Ketotifen

Leukotriene antagonists

1. Montelukast sodium
2. Zafirlukast

Corticosteroids

1. Systemic - Hydrocortisone, Prednisolone etc.
2. Inhalational - Beclomethasone dipropionate, Budesonide etc.

Anti-allergics

1. Dechlorpheniramine maleate
2. Pheniramine maleate
3. Diphenhydramine
4. Chlorpheniramine maleate
5. Cetirizine dihydrochloride
6. Levocetirizine hydrochloride
7. Clemastine fumarate
8. Fexofenadine
9. Azelastine hydrochloride etc.

Drugs for Skin

Topical antifungals & Anti-parasitics

1. Clotrimazole
2. Miconazole
3. Ketoconazole
4. Oxiconazole nitrate
5. Ciclopirox olamine
6. Quiniodochlor
7. Tolnaftate

8. Benzyl benzoate
9. Terbinafine etc.

Anti-infective dermatological preparations

1. Fusidic acid
2. Mupirocin
3. Nadifloxacin
4. Povidone - iodine
5. Acyclovir
6. Feracrylum
7. Doxepin hydrochloride
8. Sisomicin
9. Silver sulfadiazine

Topical steroids

1. Beclomethasone dipropionate
2. Betamethasone benzoate
3. Betamethasone dipropionate
4. Betamethasone valerate
5. Clobetasol propionate
6. Fluocinolone acetonide

- 7. Hydrocortisone acetate
- 8. Mometasone furoate etc.

Non-steroidal topical drugs

- 1. Calcipotriol
- 2. Acitretin

Drugs acting of skin vasculature

- 1. Minoxidil
- 2. Tazarotene
- 3. Heparin

Drugs for acne vulgaris

- 1. Benzoyl peroxide
- 2. Retionic acid
- 3. Erythromycin
- 4. Clindamycin
- 5. Adapalene
- 6. Isotretinoin etc.

Emollients

- 1. Vegetable oils
- 2. Woolfat
- 3. Liquid paraffin

Dermal protectives

- 1. Magnesium stearate
- 2. Zinc stearate
- 3. Talc
- 4. Calamine
- 5. Zinc oxide
- 6. Boric acid etc.

Keratolytics

- 1. Salicylic acid
- 2. Resorcinol
- 3. Benzoic acid

Anti-seborrheic drugs

- 1. Selenium sulphide
- 2. Zinc pyrithione
- 3. Salicylic acid
- 4. Resorcinol

Anti-scabiotic drugs

- 1. Permethrin

Melanizing drugs

- 1. Psoralen

2. Trioxsalen
3. Methoxsalen

Drugs for Eyes

Anti-infective ophthalmic preparations

1. Ofloxacin
2. Norfloxacin
3. Sulphacetamide sodium
4. Ciprofloxacin
5. Levofloxacin
6. Gentamycin
7. Tobramycin
8. Polymyxin B
9. Soframycin
10. Acyclovir etc.

Anti-inflammatory and anti-allergic preparations

1. Flurbiprofen sodium
2. Diclofenac sodium
3. Ketorolac tromethamine
4. Sodium cromoglycate etc.

द्रव्यगुण विज्ञान

Pharmacology

Mydriatics and Cycloplegics

1. Atropine
2. Homatropine
3. Phenylephrine
4. Tropicamide

Miotics

1. Pilocarpine
2. Timolol maleate
3. Betaxolol
4. Dipivefrine HCl
5. Travoprost
6. Dorzolamide

Vitreous substitutes

1. Polydimethyl siloxane

Drugs for Oro-pharyngeal Region

Nasal decongestants

1. Phenylephrine
2. Ephedrine
3. Sodium cromoglycate
4. Fluticasoen propionate

Hormones

Hormones and related drugs

1. Oestrogen
2. Estradiol valerate
3. Ethinylestradiol
4. Methyltestosterone
5. Tibolone
6. Progestins
7. Levonorgestrel
8. Norethindrone acetate
9. Dydrogesterone
10. Hydroxyprogesterone
11. Lynestrenol
12. Testosterone
13. Mesterolone
14. Danazol
15. Allyloestrenol
16. Bromocriptine
17. Norethisterone enantate

द्रव्यगुण विज्ञान

Pharmacology

18. Vasopressin
19. Somatostatin
20. Desmopressin

Anabolic steroids

1. Nandrolone decanoate
2. Nandrolone phenylpropionate
3. Stanzolol

Corticosteroids & related drugs

1. Hydrocortisone acetate
2. Dexamethasone
3. Betamethasone
4. Fludrocortisone acetate
5. Prednisolone
6. Deflazacort
7. Triamcinolone

Hyperglycemic and hypoglycemic drugs

1. Insulin
2. Acarbose
3. Tolbutamide

4. Glibenclamide
5. Gliciazide
6. Metformin
7. Chloropropamide
8. Biguanides
9. Pioglitazone
10. Glimepride
11. Repaglinide
12. Miglitol
13. Voglibose
14. Aspartame
15. Chromium picolinate
16. Sitagliptine
17. Vildagliptine etc.

Drugs acting on Thyroid function

1. Carbimazole
2. Thyroxine sodium
3. Levothyroxine sodium
4. Cinacalcet
5. Iodine

- Vitamins etc.**
1. Vitamin A
 2. Vitamin E
 3. Thiamine
 4. Riboflavin (B2)
 5. Niacin (B3)
 6. Pyridoxine (B6)
 7. Vitamin C
 8. Alfacalcidol
 9. Calcitriol
 10. Cholecalciferol
 11. Doxercalciferol
 12. Colostrum

Appetite stimulants

1. Cyproheptadine

Hepato-biliary preparations

1. L-Ornithine-L-Aspartate
2. Silymarin

Anti-obesity drugs

1. Orlistat

Hypolipidaemic Drugs

1. Gemfibrozil
2. Bezafibrate
3. Fenofibrate
4. Lovastatin
5. Simvastatin
6. Atorvastatin
7. Rosuvastatin
8. Pravastatin
9. Ezetimibe etc.

Drugs for treating Gout

1. Allopurinol
2. Febuxostat
3. Probenecid
4. Colchicine

Drugs in poisoning

1. Leucovorin

2. D- Penicillamine
3. Dimercaprol
4. Desferrioxamine
5. Pralidoxime chloride
6. Naloxone
7. N-acetylcysteine
8. Deferasirox etc.

Drug dependence

1. Disulfiram
2. Nicotine
3. Naltrexone
4. Bupropion hydrochloride
5. Citicoline

Immuno-modulators

1. Lenalidomide
2. Fligrastim
3. Lenograstim

Immuno-suppressants

1. Azathioprine

2. Cyclosporine
3. Mycophenolate mofetil
4. Tacrolimus

Anesthetics

1. Lidocaine
2. Bupivacaine
3. Propofol
4. Lorazepam
5. Midazolam
6. Succinylcholine chloride
7. Halothane

Muscle relaxants (Peripherally acting)

1. Gallamine
2. Pancuronium
3. Atracurium
4. Vecuronium bromide
5. Ketamine
6. Thiopentone sodium
7. Fentanyl

Mucolytics, Proteolytic and other enzymes

1. Trypsin
2. Chymotrypsin
3. Hyaluronidase
4. Serratiopeptidase

Vaccines

1. Rabies vaccine
2. BCG vaccine
3. Tetanus toxoid vaccine
4. DPT vaccine
5. Influenza vaccine
6. Measles vaccine
7. MMR vaccine
8. Hepatitis vaccine
9. Cholera vaccine
10. Rubella vaccine
11. Meningococcal vaccine

Immunoglobulins

1. Lyophilised human plasma protein

2. Anti-snake venom (ASV)
 3. Human albumin
 4. Human Anti-D immunoglobulin
 5. Human normal immunoglobulin etc.
- • •

1. प्रमुख द्रव्य प्रकरण

अगुरु (*Aquilaria agallocha*)

पर्याय: - प्रवर - लोह - राजाह - योगज - वैशिक

English name: Aloe wood/ Eagle wood

Family: Thymelaeaceae

प्रयोज्यांग: काण्डसार / तैल

गण: चरक मतेन - शीतप्रशमन - श्वासहर - शिरोविरेचन -
तिक्तस्कन्ध

सुश्रुत मतेन - एलादि - सालसारादि - श्लेष्मसंशमन

रस: कटु, तिक्त गुण: लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण

वीर्य: उष्ण विपाक: कटु

कर्म: - त्वच्य - कर्णाक्षिरोग हर

भेद: रा.नि.: 4 - कृष्णागुरु - काष्ठागुरु (पीत) - दाहागुरु -
मंगल्यागुरु

भा.प्र.: 2 - अगुरु - कृष्णागुरु (- गुणाधिक - लोहवद्वारा
मज्जति)

सूत्रः

अगुरुष्णां कटु त्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णञ्च पित्तलम्।
लघु कर्णाद्धिकरोगान्म शीतवातकफप्रणुत्॥
कृष्णं गुणाधिकं ततु लोहवद्वारी मज्जति।
अगुरुप्रभवः स्नेहः कृष्णागुरुसमः स्मृतः॥

भा.प्र. कर्पूरादिवर्ग 22-23

अग्निमन्थ (*Premna integrifolia*)

पर्यायः - जय - श्रीपणी - गणिकारिका - तर्कारी - नादेयी -
बैंजयन्तिका

Family: Verbenaceae

प्रयोज्यांगः पत्र / मूल / त्वक्

गणः चरक मत्तेन - शोथहर - शीतप्रशमन - अनुवासनोपग
सुश्रृत मत्तेन - बृहत् पञ्चमूल - वातसंशमन - वीरतर्वादि -
वरुणादि

रसः तिक्त, कटु, कपाय, मधुर गुणः रुक्ष, लघु
चीर्यः उष्ण विपाकः कटु

द्रव्यगुण विज्ञान

गम्भुत द्रव्य प्रकरण

CLRC

कर्मः - शोथन - पाण्डुरोगान्म

भेदः 2 - अग्निमन्थ (बृहदग्निमन्थ) - तर्कारी [क्षुद्राग्निमन्थ
(*Clerodendrum phlomidis*)]

सूत्रः

अग्निमन्थः श्वयथुनुद्वीर्योष्णाः कफवातहृत्।

पाण्डुनुक्तुकस्तुवरो मधुरोऽग्निदः॥

भा.प्र. गुड्ड्यादिवर्ग 24

(अहिफेन (*Papaver somniferum*))

पर्यायः - खसफलक्षीर - आफूक

English name: Opium

Family: Papaveraceae

प्रयोज्यांगः खसफल क्षीर ✓

गणः उपविष

रसः तिक्त, कपाय गुणः लघु, रुक्ष, सूक्ष्म, व्यवायी, विकासी

वीर्यः उष्ण विपाकः कटु CLRC 2 K

प्रभावः मादक

कर्मः - शोषण - ग्राही

भेदः 4 - श्वेत - पीत - कृष्ण - चित्र

2020-7

क्षेत्र: खाखस पोशता (Poppy Capsule)

फल: डोडा

फल त्वकः: पोशत (धातूनां शोषक रूक्षमदकृद्वाग्विवर्धनम्)

बीजः: पोशतदाना / खाखस तिला (Poppy Seeds)

फलक्षीरः: अहिफेन

शोधन विधि: अहिफेन को पानी में घोलकर, कपड़े से छानकर अग्नि पर घन कर लें। तत्पश्चात् आर्द्रक स्वरस की 21 भावना हैं।

सूत्रः

आपूक शोषणं ग्राहि श्लेष्मधं वातपित्तलम्।

खसफलोद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥ भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग 238

आमलकी (Emblica officinalis)

पर्यायः: - धात्री - जातीफलरसा - शिव - श्रीफल - धात्रीफल

English name: Emblic myrobalan/ Indian gooseberry

Family: Euphorbiaceae

प्रयोज्यांगः: फल

गणः: चरक मतेन - वयःस्थापन - विरेचनोपग

सुश्रुत मतेन - त्रिफला - परूषकादि

रसः: पञ्चरस, अम्ल प्रधान, **गुणः:** गुरु, रूक्ष, शीत

लवण वर्जित

प्रमुख द्रव्य प्रकरण

विपाकः: मधुर

वीर्यः: शीत

कर्मः: - हरीतकी सम गुण - रक्तपित्तन - प्रमेहन्ब - परम वृष्ट्य - रसायन

सूत्रः

हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तु विशेषतः ।

रक्तपित्तप्रमेहन्बं परं वृष्ट्यं रसायनम् ॥

हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यतः ।

कफं रूक्षकघायत्वात्पलं धात्र्यान्त्रिदोषजित् ॥

यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।

तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥

भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग 39-41

अपामार्ग (Achyranthes aspera)

पर्यायः: - शिखरी - अधः शल्य - मयूरक - मर्कटी - दुर्ग्रहा - किणिही - खरमञ्जरी

English name: The Prickly Chaff Flower

Family: Amaranthaceae

प्रयोज्यांगः: मूल / तण्डुल / पत्र / पञ्चांग

गणः: चरक मतेन - शिरोविरेचन - कृमिन - वमनोपग

सुश्रुत मतेन - अकर्दि

2020-7-11

रसः कटु, तिक्क
वीर्यः उष्ण
कर्मः - सारक - रोचक - हृद, रुजाहर - अशोचन
भेदः 2 - श्वेत - रक्त
सूत्रः
अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तकः कटुः।
पाचनो रोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः।
निहन्ति हृद्याध्मार्शः कण्डूशूलोदरापचीः॥

भा.प्र. गुडूच्यादि वर्ग 220

(आरग्वध (Cassia fistula)) ५

पर्यायः - राजवृक्ष - शम्पाक - चतुरंगुल - व्याधिघात - कृतमाल
- दीर्घफल - स्वर्णांग

English name: Pudding Pipe Tree/ Indian Laburnum/ Purging Cassia

Family: Caesalpinoideae

प्रयोज्यांगः फलमञ्जा / मूलत्वक् / पुष्प / पत्र

गणः चरक मतेन - कुष्ठन - कण्डून - विरेचन - तिक्कस्कन्ध
सुश्रुत मतेन - आरग्वधादि - श्यामादि - अधोभागहर

द्रव्यगुण विज्ञान

प्रमुख द्रव्य प्रकरण

रसः मधुर

वीर्यः शीत

कर्मः - संसनोत्तम - परम कोष्ठशुद्धिकर

सूत्रः

आरग्वधोगुरुः स्वादुः शीतलः संसनोत्तमः ॥

ज्वरहृदोग्नितास्ववातोदावर्तशूलनुत् ।

तत्फलं संसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम् ॥

ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ।

भा.प्र. हरीतकादि वर्ग 149-150

आर्द्रक एवं शुणठी (Zingiber officinale)

पर्यायः शुणठीः - विश्वा - नागर - विश्वभेषज - ऊपण - कटुभद्र
- श्रृंगवेर - महोषध आर्द्रकः - आर्द्रिका

English name: Ginger

Family: Zingiberaceae

प्रयोज्यांगः कन्द

गणः चरक मतेन - तृप्तिष्ठ - अशोचन - दीपनीय - शूलप्रशमन

- तृष्णानिग्रहण

सुश्रुत मतेन - पिप्पल्यादि - त्रिकटु भावमिश्र मतेन -

पञ्चकोल - पद्मषण

2020-7-1

गुणः गुरु, मुडु, स्निग्ध

विपाकः मधुर

कर्मः - संसनोत्तम - परम कोष्ठशुद्धिकर

सूत्रः

आरग्वधोगुरुः स्वादुः शीतलः संसनोत्तमः ॥

ज्वरहृदोग्नितास्ववातोदावर्तशूलनुत् ।

तत्फलं संसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम् ॥

ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ।

द्रव्यगुण विज्ञान

रसः कटु गुणः (शुण्ठीः लघु, स्निध) (आर्द्रकः गुरु, रुक्ष, तीक्ष्ण)
 वीर्यः उष्ण विपाकः (शुण्ठीः मधुर) (आर्द्रकः कटु)
 कर्मः शुण्ठीः - आमवातज्वरी - वृष्य - स्वर्य - श्लोपदहर - ग्राह
 आर्द्रकः - भेदिनी
 विशेषः भोजन पूर्वः आर्द्रक + सैन्धव
 वर्ज्यः - कुष्ठ - पाण्डुरोग - मूत्रकृच्छ्र - रक्तपित्त - ब्रण - ज्वर - दाह - ग्रीष्म एवं शरद ऋतु
 सूत्रः
 शुण्ठीः शुण्ठी रुच्यामवातज्वरी पाचनी कटुका लघुः।
 स्निधोष्णा मधुरा पाके कफवातविबन्धनुत्॥
 वृष्या स्वर्याविमिश्वासशूलकासहृदामयान्।
 हन्ति श्लोपदशोथार्श आनाहोदरमारुतान्॥
 भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग 45-46
 आर्द्रकः आर्द्रिका भेदिनी गुर्वी तीक्ष्णोष्णा दीपनी मता॥
 कटुका मधुरा पाके रुक्षा वातकफापहा।
 ये गुणाः कथिताः शुण्ठ्यास्तेऽपि सन्त्यार्द्रकेऽखिलाः॥
 भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम्।

प्रमुख द्रव्य प्रकरण

अनिसन्दीपनं रुच्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम्॥
 कुष्ठपाण्डवामये कृच्छ्रे रक्तपित्ते ब्रणे ज्वरे।
 दहे निदाघशरदोर्नेव पूजितमार्द्रकम्॥

भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग 49-52

(अर्जुन (*Terminalia arjuna*)) ②

पर्वायः - ककुभ - गाण्डीवी - पार्थ - धनञ्जय - नदीसर्ज

English name: Arjuna

Family: Combretaceae

प्रयोज्यांगः त्वक्

गणः चरक मतेन - कपायस्कन्थ - उदर्दप्रशमन

सुश्रुत मतेन - न्यग्रोधादि - सालसारादि

रसः कपाय गुणः लघु, रुक्ष 6 LR 1 K

वीर्यः शीत विपाकः कटु

प्रभावः हृदय

कर्मः - हृदय - मेदोहर - क्षतक्षयच्छ - विपच्छ

सूत्रः

ककुभः शीतलो हृदयः क्षतक्षयविषास्तजित्।
 मेदोमेहवृणान् हन्ति तुवरः कफपित्तहत्॥ भा.प्र. वटादिवर्ग 27

English: Gall stone

परिचय: गाय अथवा बैल के पित्ताशय में प्राप्त अश्मरी विशेष।

गुणकर्म: - लेखन - शोथहर - संज्ञाप्रबोधन - मेध्य -
आर्तवजनन - अश्मरीनाशन

मृगशृंग (Hart's horn/ Deer horn)

पर्याय: - एणशृंग - मृगविषाण - हरिणशृंग - विषाण

परिचय: यह हरिणजातीय बन्य पशु (बारहसिंग) का शृंग (सींग) है।

ग्राह्य मृगशृंग: - कीट रहित - दीर्घ - भारयुक्त - दृढ़ -
छोटे-छोटे शृंग से युक्त

गुणकर्म: दोषघ्रन्ता - - कफनिःस्सारक

रोगघ्रन्ता - - हच्छूल - पार्वशूल - क्लास - श्वास -
प्रतिश्यायहर

• • •

3. अन्नपान वर्ग प्रकरण

जल वर्ग

पर्याय - वारिवर्ग - पानीयवर्ग - तोयवर्ग - V

जल के पर्याय -

पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलमम्बु च।

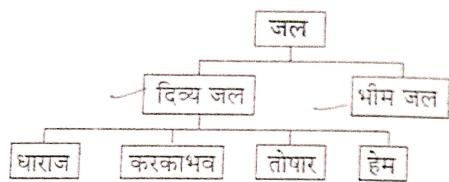
आपो वार्वारि कं तोयं पयः पाथस्तथोदकम्।

जीवनं वनमम्भोऽर्णोऽमृतं घनरसोऽपि च ॥ भा प्र वारिवर्ग 1

- पानीय - सलिल - नीर - कीलाल - जल - अम्बु - आप -
वा - वारि - क - तोय - पयः - पाथः - उदक - जीवन - वन -
अम्भः - अर्ण - अमृत - घनरस

जल के भेद -

भवमित्र मतेन - 2



जल के सामान्य गुण –

निर्गन्धमव्यक्तरसं तृष्णाञ्चं शुचि शीतलम्।

अच्छं लघुं च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ॥ सु.सू. 45.20

– निर्गन्ध – अव्यक्त रस – तृष्णाञ्चं – शुचि – शीतल – अच्छ – लघु – हृद्य

जीवनं तर्पणं हृद्यं हलादि बुद्धिप्रबोधनम्।

तन्वव्यक्तरसं मृष्टं शीतं लच्छमृतोपमम् ॥ अ.ह.सू. 5.1

– जीवनीय – तर्पणीय – हृद्य – हलादकारक – बुद्धिप्रबोधक – तनु – अव्यक्त रस – मृष्ट – शीत – शुचि – अमृत तुल्य

शीतोदक के गुण –

शीतं मदात्ययग्लानिमूर्च्छाच्छर्दिश्रमध्रमान् ॥

तृष्णोष्णादाहपित्तास्त्रविषाण्यम्बु नियच्छति ॥ अ.ह.सू. 5.15-16

– मदात्यय – ग्लानि – मूर्च्छा – छर्दि – श्रम – भ्रम – तृष्णा – उष्णता – दाह – पित्तास्त्र (रक्तपित्त) – विष नाशक

अन्वयान वर्ग प्रकरण

उग्रोदक के गुण –

दीपनं पाचनं कण्ठं लघूणां वस्तिशोधनम् ॥

हिघमाध्मानानिलश्लेष्मसद्यःशुद्धिनवज्वरे ।

अ.ह.सू. 5.16-17

कासामर्पीनसश्वासपार्श्वरक्षु च शस्यते ॥

– दीपन – पाचन – कण्ठ – लघु – उण्ण – वस्तिशोधन

– हिघका – आध्मान – वातकफज विकार – सद्यःशुद्धि – नवज्वर

– कास – आम – पीनस – श्वासरोग – पार्श्वशूल में प्रशस्त

(शृतशीतोदक के योग्य →)

मद्यपानात्समुद्धूते रोगे पित्तोत्थिते तथा ॥

सन्निपातसमुद्ध्ये च शृतशीतं प्रशस्यते ।

दाहातीसारपित्तासृड्मूर्च्छामद्यविषार्तिषु ॥

शृतशीतं जलं शस्तं तृष्णाच्छर्दिभ्रमेषु च । सु.सू. 45.42, 44-45

– मद्यपानजन्य रोग – पित्तज रोग – सन्निपातिक रोग – दाह –

अतीसार – पित्तासृक् (रक्तपित्त) – मूर्च्छा – मद्य – विष – तृच्छा –

छर्दि – भ्रम नाशक

पर्युषित जल के दोष –

न च पर्युषितं देयं कदाचिद्वारि जानता ॥

अस्लीभूतं कफोत्क्लेदि न हितं तत् पिपासवे । सु.सू. 45.41-42

..... व्युषितं तत्त्विदोषकृत् ॥

अ.ह.सू. 5.18

- अमलता युक्त - कफोत्क्लेश कारक - अहितकर - त्रिदोषकारक
नारिकेलोदक के गुण -

नारिकेलोदकं स्निग्धं स्वादु वृष्ट्यं हिमं लघु ।

तृष्णापित्तानिलहरं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ अ.ह.सू. 5.19

- स्निग्ध - मधुर - वृष्ट्य - शीत - लघु - तृष्णाहर - पित्तवातज
विकार शामक - दीपन - बस्तिशोधन

अल्पोदक पान योग्य अवस्थायें -

अरोचके प्रतिशयाये प्रसेके श्वयथौ क्षये ॥

मन्देऽग्नावुदरे कुष्ठे ज्वरे नेत्रामये तथा ।

ब्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ॥ सु.सू. 45.45-46

- अरोचक - प्रतिशयाय - प्रसेक - शोथ - क्षय - मन्दाग्नि -
उदररोग - कुष्ठ - ज्वर - नेत्ररोग - ब्रण - मधुमेह

जल परिपाक काल -

पीतं जलं जीर्यति यामयुग्माद्यामैकमात्राच्छृतशीतलञ्च ।

तदर्धमात्रेण शृतं कटुष्णां पयः प्रपाके त्रय एव कालाः ॥

भा प्र वारिवर्ग 86

- सामान्य जल → 1 याम

- शृतशीत जल → 1 प्रहर

- शृत कटुष्णा जल → ½ प्रहर

अन्तपान वर्ग प्रकरण

भोजन और जल का सम्बन्ध -

समस्थूलकशा भुक्तमध्यान्तप्रथमाम्बुपाः ।

भोजन के मध्यम में जलपान → सम ✓

भोजन के अन्त में जलपान → स्थौल्य ✓

भोजन के आदि में जलपान → कार्य ✓

दुग्ध वर्ग

पर्याय - क्षीरवर्ग

दुग्ध के पर्याय -

दुधं क्षीरं पयः स्तन्यं बालजीवनमित्यपि ।

- दुग्ध - क्षीर - पयः - स्तन्य - बालजीवन

अ.ह.सू. 5.15

भा प्र दुग्धवर्ग ॥

दुग्ध के सामान्य गुण -

प्रायशो मधुरं स्निग्धं शीतं स्तन्यं पयो मतम् ।

प्रीणनं बृंहणं वृष्ट्यं मेध्यं बल्यं मनस्करम् ॥

जीवनीयं श्रमहरं श्वासकासनिबर्हणम् ।

हन्ति शोणितपित्तं च सन्धानं विहतस्य च ॥

सर्वप्राणभृतां सात्यं शमनं शोधनं तथा ।

तृष्णाङ्गं दीपनीयं च श्रेष्ठं क्षीणक्षतेषु च ॥

पाण्डुरोगेऽम्लपित्ते च शोषे गुल्मे तथोदरे ।

अतीसारे ज्वरे दाहे श्वयथौ च विशेषतः ॥
 योनिशुक्रप्रदोषेषु मूत्रेष्वप्रचुरेषु च ।
 पुरीषे ग्रधिते पथर्यं वातपित्तविकारिणाम् ॥
 नस्यालेपावगाहेषु वमनास्थापनेषु च ।
 विरेचने स्नेहने च पयः सर्वत्र युज्यते ॥ च.सु. 1.107-112

अष्टविध दुग्ध →

- अविक्षीरमजाक्षीरं गोक्षीरं माहिषं च यत् ।
उष्ट्रीणामथ नागीनां वडवायाः स्त्रियास्तथा ॥ च.सू. 1.106

✓ अष्टविध क्षीर ✓			
अवि (Sheep)	अजा (Goat)	गो (Cow)	माहिष (Buffalo)
उद्धी (Camel)	नाग (Elephant)	बडव (Mare)	स्त्री (Human)

गो दूध के गुण -

अत्र गव्यं तु जीवनीयं रसायनम् ॥
क्षतेक्षीणहितं मेध्यं बल्यं स्तन्यकरं सरम् ।

अन्तर्राष्ट्रीय अन्वयन वर्ग प्रकरण

अनपान व्रग प्रवृत्त
 श्रमभ्रमदालक्ष्मीश्वासकासातितृट्क्षुधः ॥
 जीर्णज्वरं मूत्रकच्छु रक्तपित्तं च नाशयेत् । अ.ह.सू. 5/21-23
 - जीवनीय - रसायन - क्षतक्षीण में हितकर - मेध्य - बल्य -
 सत्यकर - सर - श्रम, भ्रम, मद, अलक्ष्मी, श्वास, कास, अतितृष्णा,
 अत्यधिक क्षुधा, जीर्णज्वर, मूत्रकच्छु एवं रक्तपित्तनाशक

माहिष दुर्घ के गुण -
हितमत्यन्यनिदेश्यो गरीयो माहिषं हिमम्। अ.ह.सू. 5/23
- अत्यधिन एवं अनिद्रा में हितकर - अत्यधिक गुरु - शीत

अजा दूध के गुण -

अल्पाम्बुपानव्यायामकदुतिकाशनैर्लघु ।
आजं शोषज्वरश्वासरक्तपित्तातिसारजित् ॥ 5/24
- लघु - शोष - ज्वर - श्वास - रक्तपित्त - अतिसारनाशक

उष्ट दग्ध के गण -

इष्टदूक्षोष्णलवणमौष्ट्रकं दीपनं लघु ।
 शस्तं वातकफानाहकृमिशोफोदरार्शसाम् ॥ ५/२५
 - इष्टदूक्ष - उष्ण - लवण - दीपन - लघु - वात, कफ,
 नाह, कृमि, शोफ, उदरेणे एवं अर्श रोग में प्रस्तुत

मानुष दुर्घट के गुण -

मानुषं वातपित्तासृगभिघातक्षिरोगजित्।

तर्पणाश्वोत्तरैर्नरस्यैः ॥ अ.ह.सू. 5/26

- वात, पित्त, असृक्, अभिघात एवं अक्षिरोगनाशक - तर्पण,

आश्वोत्तर एवं नस्य में उपयोगी

आविक दुर्घट के गुण -

अहृद्यं तूष्णमाविकम्॥

वातव्याधिहरं हिध्माश्वासपित्तकफप्रदम् । अ.ह.सू. 5/26-27

- अहृद्य - उष्ण - वातव्याधिहर - हिध्मा, श्वास, पित्त एवं

कफकर

हस्तिनी दुर्घट के गुण -

हस्तिन्याः स्थैर्यकृत् । अ.ह.सू. 5/27

~~१०~~ - स्थैर्यकर

एकल्प प्राणियों के दुर्घट के गुण -

~~११~~ क्षेद्मुष्णं त्वैकशकं लघु ॥

शाखावातहरं साम्ललवणं जडताकरम् । अ.ह.सू. 5/27-28

- उष्ण - लघु - शाखागत वातहर - अम्ल - लवण - जडताकर

अनपात वर्ग प्रकरण

अवस्था के अनुसार दुर्घट के गुण -

पयोऽभिष्यन्दि गुर्वामं, युक्त्या शृतमतोऽन्यथा ॥

भवेद्गरीयोऽतिशृतं, धारोष्णाममृतोपमम् । अ.ह.सू. 5/28-29

आम दुर्घट → - अभिष्यन्दि - गुरु

शृत दुर्घट → - अनभिष्यन्दि - लघु

अतिशृत दुर्घट → अत्यधिक गुरु

धारोष्ण दुर्घट → अमृत के समान

दधिवर्ग

दधि के सामान्य गुण -

रोचनं दीपनं वृष्यं स्नेहनं बलवर्धनम् ।

पाकेऽम्लमुष्णं वातघं मंगल्यं बृहणं दधि ॥

पीनसे चातिसारे च शीतके विषमज्वरे ।

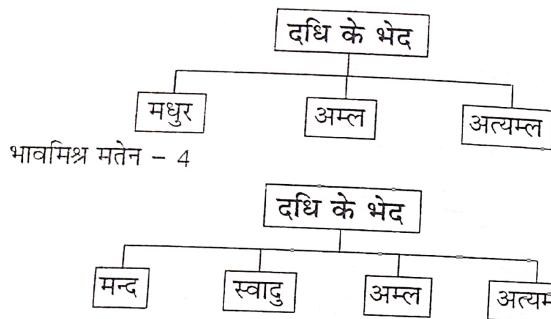
अरुचौ मूत्रकृच्छ्रे च काश्ये च दधि शस्यते ॥

च.सू. 27.225-226

- रोचन - दीपन - वृष्य - स्नेहन - बल्य - अम्ल विपाक - उष्ण - वातघ - मंगल्य - बृहणीय - पीनस - अतिसार - शीतज्वर - विषमज्वर - अरुचि - मूत्रकृच्छ्र - काश्य में हितकर

दधि के भेद -

सुश्रुत मतेन - 3



दधि सेवन के नियम -

न नक्तं दधि भुज्जीत न चाप्यघृतशकरम्।

नामुद्गयूषं नाक्षौद्रं नोष्णं नामलकैर्विना ॥

च.सू. 7.61

- रात्रि में - घृत एवं शर्करा मिलाये बिना - मुद्गयूष मिलाये बिना

- मधु के बिना - उष्ण करके - आमलकी मिलाये बिना → दधि सेवन नहीं करना चाहिए।

तक्रवर्ग

पर्याय - - दण्डाहत - कालशेय - गोरस - विलोडित (कै.नि.)

तक्र के भेद -

भावमिश्र मतेन - 5

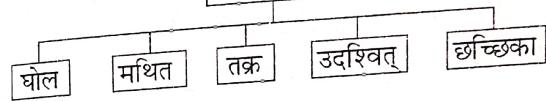
घोलं तु मथितं तक्रमुद्धिष्ठच्छिकाऽपि च।

अनपान वर्ग प्रकरण

ससरं निर्जलं घोलं मथितं त्वसरोदकम् ॥

तक्रं पादजलं प्रोक्तमुद्धित्वद्वारिकम् ।

छच्छिका सारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका ॥ भा.प्र.तक्रवर्ग 1-2

तक्र के भेद

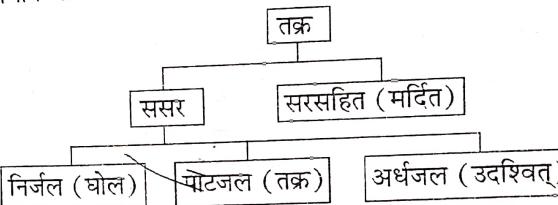
आचार्य चरक मतेन - 3

1. अनुद्धृत स्नेह

2. अर्धोद्धृत स्नेह

3. उद्धृत स्नेह (रुक्ष)

आचार्य चक्रपाणिदत्त मतेन - 4



निर्माण विधि -

तक्रं पादजलं । भा.प्र. पूर्व । तक्रवर्ग 2

भाण्डस्य मध्ये दधि सन्निधाय, दध्नस्तु यन्वेण शनैर्हतं यत् ।

तोयेन निषिञ्चन् प्रहरं विनीय तोयेन तक्रं दशाधा क्रमेण ।

कै.नि. तक्रवर्ग 1221

2020-7-1

भाण्ड के मध्य में दधि रखकर यन्त्र (मथानी) से शानैः - शानैः मध्यते हुए थोड़ा जल मिलाकर एक प्रहर (3 घण्टे) पर्यन्त मध्यते से तक्र चमत्ता है।

युण -

शोफाशौग्रहणीदोषमूत्रग्रहोदरारुचौ ।
स्नेहव्यापदि पाण्डुत्वे तक्रं दद्याद्गरेषु च ॥ च.सू. 27.229
- शोफ - अशोरोग - ग्रहणीदोष - मूत्रग्रह - उदररोग - अरुचि -
स्नेहव्यापद् - पाण्डुरोग - गरविष में हितकर

रोगाधता -

शोफाशौग्रहणीदोषमूत्रग्रहोदरारुचौ ।
स्नेहव्यापदि पाण्डुत्वे तक्रं दद्याद्गरेषु च ॥ च.सू. 27.229
- शोथ - अशोरोग - ग्रहणीदोष - मूत्रग्रह - उदररोग - अरुचि -
स्नेहजन्य व्यापद् - पाण्डुरोग - गरविष नाशक

दोषानुसार प्रयोग -

दोष	तक्र प्रयोग
वात दोष प्रकोप	अम्ल तक्र + सैन्धव
पित्त दोष प्रकोप	मधुर तक्र + शर्करा
कफ दोष प्रकोप	तक्र + त्रिकटु + क्षार

अन्यान वर्ग प्रकरण

रसानुसार तक्र की दोषाधता -

मधुर तक्र	- कफप्रकोपक - पित्तशामक
अम्ल तक्र	- वातशामक - पित्तप्रकोपक

तक्र सेवन योग्य -

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोत्थेष्वामयेषु च ।
मार्गावरोधे दुष्टे च वायौ तक्रं प्रशस्यते ॥ सु.सु. 45.87
- शीतकाल - अग्निमान्द्य - कफज विकार - मार्गावरोधज विकार
- वात दुष्टि

तक्र सेवन अयोग्य -

नैव तक्रं क्षये दद्यान्नोष्णाकाले न दुर्बले ।
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपित्तजे ॥ भा.प्र. पूर्व । तक्रवर्ग । 17
- क्षय रोग - ग्रीष्म ऋतु - दुर्बल व्यक्ति - मूर्च्छा - भ्रम - दाह -
रक्तपित्त योग्य

मधु वर्ग

पर्याय - माक्षिक - माध्वीक - क्षौद्र - सारध - मक्षिकावान्त
- वरटी वान्त - भृंगवान्त - पुष्परसोद्दव

मधु के भेद -

आचार्य चरक मतेन - 4

जाति	श्रेष्ठता	वर्ण
माक्षिक	श्रेष्ठ	तैलवर्ण
भ्रामर	गुरु पाकी	श्वेतवर्ण
क्षौद्र		कपिलवर्ण
पौत्रिक		घृतवर्ण

आचार्य भावमित्र मतोन - 8

माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्रिकं छात्रमित्यपि ।

आर्थ्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ॥ भा प्र मधुवर्ग 6

- माक्षिक - भ्रामर - क्षौद्र - पौत्रिक - छात्र - आर्थ्य - औद्दालक
- दाल

मधु के गुण -

वातलं गुरु शीतं च रक्तपित्तकफापहम् ।

सन्धातृ छ्डेदनं रुक्षं कवायं मधुरं मधु ॥ च.सू. 27.245

- वातल - गुरु - शीत - रक्तपित्त - कफ - सन्धानकर -
छ्डेदन - रुक्ष - कवाय - मधुर

नव एवं पुराण मधु के गुण -

नवं मधु भवेत्पुष्ट्यै नातिश्लेष्महरं सरम् ।

पुराणं ग्राहकं रुक्षं मेदोच्चमतिलेखनम् ॥ भा प्र मधुवर्ग 1.25

अननपान वर्ग प्रकरण

नव मधु → - पुष्टिकारक - नातिश्लेष्महर - सर
पुराण मधु → - ग्राही - रुक्ष - मेदोच्च - अतिलेखन

उष्ण मधु का उपयोग -
प्रच्छर्दने निरुहे च मधूषां न निवार्यते ।
अलब्धपाकमाश्वेव तयोर्यस्मानिवर्तते ॥
- वमनकर्म - निरुह बस्ति के लिए

अ.ह.सू. 5/54

उष्ण मधु की मारकता -
मधु चोष्णामुष्णार्तस्य च मधु मरणाय ।

च.सू. 26.84

घृत वर्ग

पर्याय - - आज्ज्य - हविस् - सर्पिस्

घृत के सामान्य गुण -

स्मृतिबुद्ध्यग्निशुक्रौजःकफमेदोविवर्धनम् ।

वातपित्तविषोन्मादशोषालक्ष्मीज्वरापहम् ॥

सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः ।

सहस्रवीर्य विधिभिर्घृतं कर्मसहस्रकृत ॥ च.सू. 27.231-232

- स्मृति - बुद्धि - अग्नि - शुक्र - ओज - कफ - मेद वर्द्धक -
वातपित्तघ - विष - उम्माद - शोष - अलक्ष्मी - ज्वरहर - सर्व स्नेहों
में उत्तम - शीत - मधुर रसात्मक - मधुर विपाकी - सहस्र वीर्य युक्त
आदि ।

व्यानुसार धृत के नाम -

• चक्र मतेन -

- पुराण धृत - 10 वर्ष पुराना - उग्रगन्ध
- प्रपुराण धृत - 10 वर्ष से पुराना एवं 100 वर्ष तक -
लाक्षारसनिभम् - शीत - सर्वग्रहनाशनम् - मेध्य - विरेचन के
लिए उत्तम
- 100 वर्ष पुराना धृत - कोई भी रोग इससे असाध्य नहीं - दृष्ट
स्पर्शन एवं नस्य से सर्वग्रहनाशन - अपस्मार एवं ग्रहोन्माद में
हितकर

• सुश्रुत मतेन -

- पुराण धृत - 10 वर्ष पुराना
- कौम्भ सर्पि - 10 से 100 वर्ष के बीच
- महाधृत - 100 वर्ष से ऊपर

धृत माहात्म्य -

सर्पिस्तैलं वसा मज्जा सर्वस्नेहोत्तमा मताः ।

एषु चैवोत्तमं सर्पिः संस्कारस्यानुवर्तनात् ॥ च.सू. 13.13

चतुर्विध स्नेहों में सर्पि सर्वोत्तम स्नेह है। इसका कारण है सर्पि का
→ संस्कारानुवर्तन

नवनीत के गुण -

नवनीतं हितं गत्यं वृद्धं वर्णबलाग्निकृत् ॥

संग्राहि वातपित्तासृक्षयाशौर्दितकासहृत् ।

तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः ॥ भा प्र नवनीतवर्ग 1-2

- वर्ण - बल्य - अग्निवर्द्धक - संग्राहि - वातपित्तघ -
रक्तपित्तघ - क्षयघ - अशौघ - अर्दितनाशक - कासघ - बालक
एवं वृद्धों के लिए हितकर - शिशुओं के लिए अमृत तुल्य

तैल वर्ग

परिभाषा -

तिलादिस्तिर्थवस्तूनां स्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।

भा प्र तैलवर्ग 1

तिल आदि स्नेहयुक्त वस्तुओं के स्नेह भाग को मुनिगण 'तैल' कहते
हैं।

सामान्य गुण -

मारुतघ्नं न च श्लेष्यवर्धनं बलवर्धनम् ।

त्वच्यमुष्णां स्थिरकरं तैलं योनिविशोधनम् ॥

च.सू. 13.15

- वातघ्न - कफघ्न - बलवर्धन - त्वच्य - उष्ण - स्थिरकर -
योनिविशोधन

कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्णां व्यवायि च ।

पित्तलं बद्धविषमूत्रं न च श्लेष्माभिवर्धनम् ॥

वातघेषूतमं बल्यं त्वच्यं मेधाग्निवर्धनम्।

तैलं संयोगसंस्कारात् सर्वरोगापहं मतम्॥ *TAS*

तैलप्रयोगादजरा निर्विकारा जितश्रमाः।

आसन्नतिबलाः संख्ये दैत्याधिपतयः पुरा ॥ च.सू. 27.286-288

- कषाय अनुरस - मधुर - सूक्ष्म - उष्ण - व्यवायि - पित्तल - पुरीष एवं मूत्र बद्धताकारक - न श्लेष्मल - उत्तम वातघ - बल्य - त्वच्य - मेधा एवं अग्नि वर्द्धक - संयोग संस्कार से सर्वरोगहर आदि।

त्रिल तैल के गुण -

तैलं स्वयोनिवत्तत्र मुख्यं तीक्ष्णं व्यवायि च।

त्वक्दोषकृदचक्षुष्यं सूक्ष्मोष्णं कफकृन च ॥ अ.ह.सू. 5/55

- सर्वश्रेष्ठ - तीक्ष्ण - व्यवायि - त्वक्दोषकारकर - अचक्षुष्य - सूक्ष्म - उष्ण वीर्य - कफ को न बढ़ाने वाला - कृश व्यक्तियों का बृहण करनेवाला - स्थूल व्यक्तियों का कर्षण करनेवाला - मल बांधनेवाला - कृमिहर - संस्कार से सर्वरोगहर

एरण्ड तैल के गुण -

ऐरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्धनम्।

वातासृगुल्महृदोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ च.सू. 27.289

- मधुर - गुरु - श्लेष्मवर्द्धक - वातरक्त, गुल्म, हृदोग, जीर्णज्वर

नाशक

अन्नपान वर्ग प्रकरण

सर्षप तैल के गुण -

कटूषां सार्षपं तीक्ष्णं कफशुक्रानिलापहम्।

लघु पित्तास्त्रकृत् कोठकुष्ठाशर्ऊव्रिणजनुजित् ॥ अ.ह.सू. 5/59

- कटु - उष्ण - तीक्ष्ण - कफश्ल - शुक्रश्ल - वातश्ल - लघु - रक्त एवं पित्तकर

- कोठ - कुष्ठ - अर्श - व्रण - क्रिमि नाशक

कतिपय तैलों के गुण -

आक्ष अर्थात् बिभीतक तैल	निष्क तैल	उमा अर्थात् अतसी तैल	कुसुम्भ तैल
- मधुर	- कुछ उष्ण	- उष्ण	- उष्ण
- शीतल	- तिक्त	- त्वक्दोष	- त्वक्दोष - कफ
- केश्य	- कृमि	कफ और पित्तवर्धक	और पित्तवर्धक
- गुरु	कुष्ठ और कफनाशक		
- पित्तवातहर			

शूक्रधान्य वर्ग

परिभाषा - शूक्रयुक्त फलवाले धान्यों को 'शूक्रधान्य' कहते हैं।

घट्टिक के गुण -

शीतः स्निग्धोऽगुरुः स्वादुस्त्रिदोषज्ञः स्थिरात्मकः।

घट्टिकः प्रवरो गौरः कृष्णागौरस्ततोऽनु च ॥ च.सू. 27.13

- शीत - स्निग्ध - लघु - मधुर - त्रिदोषन - स्थिर

यव के गुण -

रूक्षः शीतोजगुरुः स्वादुबहुवातशकृद्यवः ।

स्थैर्यकृत् सकषायश्च बल्यः श्लेष्मविकारनुत् ॥ च.सू. 27.19

- रूक्ष - शीत - लघु - मधुर - बहुवात एवं बहु पुरीषकर - स्थैर्यकर - कषाय - बल्य - कफविकारनाशक

गोधूम के गुण -

सन्धानकृद्वातहरो गोधूमः स्वादुशीतलः ।

जीवनो वृंहणो वृष्यः स्निग्धः स्थैर्यकरो गुरुः ॥ च.सू. 27.21

- सन्धानकर - वातहर - मधुर - शीतल - जीवनीय - वृंहणीय
- वृष्य - स्निग्ध - स्थैर्यकर - गुरु

शूक्रधान्यों का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व -

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
शूक्रधान्य	लोहित शालि	यवक

शमीधान्य वर्ग

पर्याय - शिष्मी धान्य

मुदग के गुण -

कषायमधुरो रूक्षः शीतः पाके कटुर्लघुः ।

विशदः श्लेष्मपित्तज्ञो मुदगः सूख्योत्तमो भतः ॥ च.सू. 27.23

- कपाय - मधुर - रूक्ष - शीत - कटु विपाक - लघु - विशद
- कफपित्तच - सूप के लिए उत्तम

माष के गुण -

वृष्यः परं वातहरः स्निग्धोष्णो मधुरो गुरुः ।

बल्यो बहुमलः पुंस्त्वं माषः शीघ्रं ददाति च ॥ च.सू. 27.24

- वृष्य - परम वातहर - स्निग्ध - उष्ण - मधुर - गुरु - बल्य -
बहु मलकर - पुंस्त्वकर

कुलत्थ के गुण -

उष्णाः कषायाः पाकेऽम्लाः कफशुक्रानिलापहाः ।

कुलत्था ग्राहिणः कासहिक्काश्वासार्शसां हिताः ॥ च.सू. 27.26

- उष्ण - कषाय - अम्ल विपाक - कफ, शुक्र एवं वातहर - ग्राही
- कास - हिक्का - श्वास - अर्श में हितकर

तिल के गुण -

स्निग्धोष्णो मधुरस्तित्तकः कषायः कटुकस्तिलः ।

त्वच्यः केश्यश्च बल्यश्च वातज्ञः कफपित्तकृत् ॥ च.सू. 27.30

- स्निग्ध - उष्ण - मधुर - तित्तक - कषाय - कटु - त्वच्य -
केश्य - बल्य - वातज्ञ - कफपित्तकर

शमीधान्यों का श्रेष्ठश्रेष्ठत्व -

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम्
शमीधान्य	मुद्ग	माष

फल वर्ग

मृद्धीका के गुण -

तृष्णादाहज्वरश्वासरक्तपित्तक्षतक्षयान्।
 वातपित्तमुदावर्त स्वरभेदं मदात्ययम्॥
 तिक्तास्यतामास्यशोषं कासं चाशु व्यपोहति।
 मृद्धीका बृंहणी वृष्ट्या मधुरा स्निग्धशीतला। च.सू. 27.125-126
 - तृष्णा - दाह - ज्वर - श्वास - रक्तपित्त - क्षत - क्षय -
 वातपित्त - उदावर्त - स्वरभेद - मदात्यय - तिक्तास्यता - मुखशोष -
 कास शामक - बृंहणीय - वृष्ट्य - मधुर - स्निग्ध - शीतल

कपित्थ के गुण -

कपित्थमापं कण्ठञ्चं विषञ्चं ग्राहि वातलम्॥
 मधुराम्लकषायत्वात् सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम्।
 परिपक्वं च दोषञ्चं विषञ्चं ग्राहि गुर्वपि॥ च.सू. 27.136-137
 आप कपित्थः - कण्ठञ्च - विषञ्च - ग्राही - वातल
 पक्व कपित्थः - मधुर - अम्ल - कषाय - सुगन्धि - रुचिकर -
 दोषञ्च - विषञ्च - ग्राही - गुरु

बिल्व के गुण -

बिल्वं तु दुर्जरं पक्वं दोषलं पूतिमारुतम्।
 स्निग्धोष्णातीक्षणं तद्बालं दीपनं कफवातजित्॥ च.सू. 27.138

पक्व बिल्वः - दुर्जर - दोषल - पूति मारुतकर
 बाल बिल्वः - स्निग्ध - उष्ण - तीक्षण - दीपन - कफवातम्

बिभीतक के गुण -

रसासृडःमांसमेदोजान्दोषान् हन्ति बिभीतकम्॥
 स्वरभेदकफोत्क्लेदपित्तरोगविनाशनम्। च.सू. 27.148-149
 - रस, रक्त, मांस एवं मेदो दोषनाशक - स्वरभेद - कफ - उत्क्लेद
 - पित्तरोग नाशक

दाढ़िम के गुण -

अम्लं कषायमधुरं वातघं ग्राहि दीपनम्॥
 स्निग्धोष्णं दाढ़िमं हृद्यं कफपित्ताविरोधि च।

च.सू. 27.149-150

- अम्ल - कषाय - मधुर - वातघ - ग्राही - दीपन - स्निग्ध -
 उष्ण - हृद्य - कफपित्त अविरोधि

वाताम के गुण -

वातामाद्युष्णवीर्यं तु कफपित्तकरं सरम्॥
 परं वातहरं स्निग्धम्।

अ.ह.सू. 6/123-124

- उष्ण वीर्य - कफपित्तकफ - सर - परम वातहर - स्नाध

जम्बु के गुण -

जाम्बवं गुरु विष्टम्भ शीतलं भृशवातलम् ॥

संग्राहि मूत्रशक्तिरकण्ठं कफपित्तजित् । अ.ह.सू. 6/127-128

- गुरु - विष्टम्भ - शीतल - अत्यधिक वातकारक - मूत्र एवं मल संग्राहि - अकण्ठय - कफपित्तघ

आम्र फल के गुण -

वातपित्तास्त्रवृक्षद्वालं, बद्धास्थि कफपित्तकृत् ॥

गुर्वान्नं वातजित्यक्वं स्वाद्वम्लं कफशुक्रकृत् ।

अ.ह.सू. 6/128-129

बाल आम्र फल के गुण	बद्धास्थि आम्र फल के गुण	पक्व आम्र फल के गुण
- वातकारक	- कफपित्तकारक	- गुरु
- पित्तकारक		- वातशामक
- रक्तकारक		- मधुर - अम्ल
		- कफवर्द्धक
		- शुक्रवर्द्धक

अन्पान वर्ग प्रकरण

वृक्षाम्ल के गुण -

वृक्षाम्लं ग्राहि रूक्षोष्णं वातश्लेष्महरं लघु ॥ अ.ह.सू. 6/129

- ग्राहि - रूक्ष - उष्ण - वातकफघ - लघु

भल्लातक के गुण -

भल्लातकस्य त्वड़मांसं बृंहणं स्वादु शीतलम् ।

तदस्थग्निसमं मेध्यं कफवातहरं परम् ॥ अ.ह.सू. 6/134

भल्लातक त्वचा एवं मांस के गुण	भल्लातक अस्थि के गुण
- बृंहण	- अग्नि सम
- मधुर	- मेध्य
- शीतल	- परम कफवातघ

लकुच के गुण -

फलानामवरं तत्र लकुचं सर्वदोषकृत् ।

अ.ह.सू. 6/140

- फलों में अवर - त्रिदोषकारक

फलवर्ग का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व -

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
फल	मृद्वीका	लकुच

शाक वर्ग

पटोलशाक के गुण -

हृद्यं पटोलं कृमिनुत्खादुपाकं रुचिप्रदम्। अ.ह.सू. 6/79
 - हृद्य - कृमिघ - मधुर विपाक - रुचिकर

वासा शाक के गुण -

वृषं तु वमिकासञ्च रक्तपित्तहरं परम्। अ.ह.सू. 6/80
 - वमनहर - कासघ - परम रक्तपित्तहर

कारबेल्लक के गुण -

कारबेलं सकटुकं दीपनं कफजित्परम्॥ अ.ह.सू. 6/80
 - कटु रसात्मक - दीपन - परम कफनाशक

वार्ताक के गुण -

वार्ताकं कटु तिक्तोष्णं मधुरं कफवातजित्।
 सक्षारमग्निजननं हृद्यं रुच्यमपित्तलम्॥ अ.ह.सू. 6/81
 - कटु - तिक्त - उष्ण - मधुर - कफवातघ - सक्षार -
 अग्निजनन - हृद्य - रुच्य - अपित्तल

विदारी के गुण -

विदारी वातपित्तघी मूत्रला स्वादुशीतला ॥
 जीवनी बृंहणी कण्ठ्या गुर्वा वृष्या रसायनम्। अ.ह.सू. 6/85-86

अन्नपान वर्ग प्रकरण

- वातपित्तघ - मूत्रल - मधुर - शीतल - जीवनीय - बृंहणीय -
 कण्ठ्य - गुरु - वृष्य - रसायन

जीवन्ती शाक के गुण -

चक्षुष्या सर्वदोषघी जीवन्ती मधुरा हिमा ॥ अ.ह.सू. 6/86
 - चक्षुष्य - त्रिदोषघ - मधुर - शीत

कूष्माण्ड के गुण -

वल्लीफलानां प्रवरं कूष्माण्डं वातपित्तजित् ॥ अ.ह.सू. 6/88-89
 बस्तिशुद्धिकरं वृष्यम् । - वल्ली फलों में प्रवर - वातपित्तघ - बस्तिशुद्धिकर - वृष्य

तर्कारी एवं वरुण के गुण -

तर्कारीवरुणं स्वादु सतिक्तं कफवातजित् ॥ अ.ह.सू. 6/97
 - मधुर - तिक्त - कफवातघ

कासमर्द के गुण -

कृमिकासकफोत्क्लेदान् कासमर्दों जयेत्सरः ॥ अ.ह.सू. 6/100
 - कृमिघ - कासघ - कफोत्क्लेद नाशक - सर

सर्षप के गुण -

गुरुष्णं सार्षपं बद्धविषमूत्रं सर्वदोषकृत् ॥ अ.ह.सू. 6/101
 - गुरु - उष्ण - मल एवं मूल बॉधनेवाला - त्रिदोषकर

मूलक के गुण -

बाल मूलक	महत् मूलक	स्त्रियों मूलक	शुष्क मूलक	आम मूलक
- अव्यक्त रस	- कटु रस	वातनाशक	वात-	त्रिदोष-
- किञ्चित् क्षार	- कटु विपाक		कफघ्न	कारक
- तिक्त	- उष्ण वीर्य			
- दोषहर	- त्रिदोषकारक			
- लघु	- गुरु			
- उष्ण	- अभिष्वन्दि			
- गुल्म - कास				
- क्षय - श्वास				
- ब्रण - नेत्ररोग				
- गल रोग				
- स्वर - अग्नि-				
साद - उदावर्त				
- पीनस नाशक				

सुरस के गुण -

हिंदुमात्रासविषश्वासपार्श्वरुक्यपूतिगन्धा ।

सुरसः

॥

अ.ह.सू. 6/108

अन्तपान वर्ग प्रकरण

- हिंका - कास - विष - श्वास - पार्श्वशूल - पूतिगन्ध नाशक

आर्दिका के गुण -

आर्दिका तिक्तमधुरा मूत्रला न च पित्तकृत् । अ.ह.सू. 6/109

- तिक्त - मधुर - मूत्रल - न पित्तकर

लशुन के गुण -

लशुनो भृशतीक्षणोष्णः कटुपाकरसः सरः ॥

हृद्यः केशयो गुरुवृद्ध्यः स्त्रियो रोचनदीपनः ॥

भग्नसन्धानकृद्बल्यो रक्तपित्तप्रदूषणः ॥

किलासकुष्ठगुल्माशोमेहक्रिमिकफानिलान् ।

सहित्यापीनसश्वासकासान् हन्ति रसायनम् ॥

अ.ह.सू. 6/109-111

गुण → - अत्यधिक तीक्ष्ण - अत्यधिक उष्ण - सर - गुरु - स्त्रियों

रस → - कटु विपाक - कटु रस

दोषकर्म → - कफवातन्

कर्म → - हृद्य - केश्य - वृद्ध्य - रोचन - दीपन - भग्नसन्धानकारक - बल्य - रक्तपित्त प्रदूषक - रसायन

रोगान्तरा → - किलास - कुष्ठ - गुल्म - अशोरोग - मेह नाशक - क्रिमिघ - हिंका - पीनस - श्वास - कास नाशक

2020-7-11 12

पलाण्डु के गुण –

पलाण्डुस्तदगुणन्दूनः श्लेष्मलो नातिपित्तलः। अ.ह.सू. 6/112

– लशुन की अपेक्षा न्यून गुण – कफवर्द्धक – न अतिपित्तवर्द्धक

गृजनक के गुण –

कफवातशीसां पथ्यः स्वेदेभ्यवहृतौ तथा ॥।

तीक्ष्णो गृजनको ग्राही पित्तिनां हितकृन्न सः ।

अ.ह.सू. 6/112-113 ।

– कफवातज अर्श में स्वेदन एवं भोजनार्थ पथ्य

सूरण के गुण –

दीपनः सूरणो रुच्यः कफघ्नो विशदो लघुः ॥।

विशेषादर्शसां पथ्यः ॥ अ.ह.सू. 6/113-114

– दीपन – रुचिकर – कफघ्न – विशद – लघु – अर्श में विशेष रूप से पथ्य

शाकवर्ग की अवयवानुसार गुणवत्ता –

पत्रे पुष्पे फले नाले कन्दे च गुरुता क्रमात् ॥। अ.ह.सू. 6/114

अन्यान वर्ग प्रकरण

शाक के अवयव	गुरुता
पत्र	+
पुष्प	++
फल	+++
नाल	++++
कन्द	+++++

शाकवर्ग का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व –

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
शाक	जीवन्ती	सर्षप

मांस वर्ग

अच्छविधि मांसवर्ग –

मांसमित्याहुरष्टधा ।

ह्यमृग्यं वैच्छिकिरं किञ्च प्रातुर्द च बिलेशयम् ।

प्रासहं च महामृग्यमध्वरं मात्स्यमष्टधा ॥ ॥ ॥ अ.ह.सू. 6/54. ॥ ॥ ॥

मांसवर्ग – 8

मृग	विच्छिक	प्रतुद	बिलेशय	प्रसह	महामृग	अच्छर	मत्स्य
10 प्राणी	21 प्राणी	10 प्राणी	4 प्राणी	26 प्राणी	10 प्राणी	11 प्राणी	18 प्राणी

2020-7-11 12:11

द्रव्यगुण विज्ञान

अष्ट मांसवर्ग का देशानुसार वर्गीकरण –

आद्यान्त्या जांगलानूपा मध्यौ साधारणौ स्मृतौ। अ.ह.सू. 6/55

जांगल देश	आनूप देश	साधारण देश
• मृग	• महामृग	• विलेशय
• विष्कर	• अच्चर	• प्रसह
• प्रतुद	• मत्स्य	

जांगल मांस के गुण –

तत्र बद्धमला: शीता लघवो जांगला हिता:॥

पित्तोत्तरे वातमध्ये सन्निपाते कफानुगे। अ.ह.सू. 6/55-56

– विबन्धकर – शीतल – लघु

– कफानुग, वातमध्य और पित्तोत्तर सन्निपात में हितकर

शिखि मांस के गुण –

नातिपथ्यः शिखी पथ्यः श्रोत्रस्वरवयोदृशाम्॥ अ.ह.सू. 6/58

– सामान्यतः न अतिपथ्यकर

– श्रोत्र – स्वर – वय – द्रुष्टि के लिए पथ्य

कुकुट मांस के गुण –

तद्वच्च कुकुटो वृष्यः ।

अ.ह.सू. 6/59

– शिखि मांस के समान – वृष्य

द्रव्यगुण विज्ञान

अन्नपान वर्ग प्रकरण

चटक मांस के गुण –

चटका: श्लेष्मला: स्निग्धा वातघाः शुक्रलाः परम्॥

अ.ह.सू. 6/60

– कफवद्धक – स्निग्ध – वातघन – परम शुक्रल

बिलेशयादि मांस की तुलनात्मक गुणवत्ता –

गुरुष्णास्निग्धमधुरा वर्गाश्वातो यथोत्तरम्।

मूत्रशुक्रकृतो बल्या वातघाः कफपित्तलाः॥ अ.ह.सू. 6/61

मांस वर्ग	गुरु गुण	उष्ण गुण	स्निग्ध गुण	मधुर रस
बिलेशय वर्ग	+	+	+	+
प्रसह वर्ग	++	++	++	++
महामृग वर्ग	+++	+++	+++	+++
अच्चर वर्ग	++++	++++	++++	++++
मत्स्य वर्ग	+++++	+++++	+++++	+++++

अजायांस के गुण –

नातिशीतगुरुस्निग्धं मांसमाजमदोषलम्॥

शरीरधातुसामान्यादनभिष्यन्दि बृहणम्॥ अ.ह.सू. 6/63-64

– न अतिशीत – न अति गुरु – न अति स्निग्ध – अदोषल – शरीरस्थ धातु के समान गुण वाला – अनभिष्यन्दि – बृहण

गोमांस के गुण –

शुष्ककासश्रमात्यग्निविषमज्वरपीनसान्।
काश्वर्यं केवलवातांश्च गोमांसं सन्नियच्छति ॥ अ.ह.सू. 6/65
– शुक कास – श्रम – अत्यग्नि – विषमज्वर – पीनस – काश्वर्य
– केवल वात नाशक

लिंग – अवयवादि भेदानुसार मांस के गुण –

पुङ्गियोः पूर्वपश्चार्थं गुरुणी, गर्भिणी गुरुः ।
लघुयोर्धिच्चतुष्पात्सु, विहंगेषु पुनः पुमान् ॥
शिरःस्कन्धोरुपृष्ठस्य कट्ट्याः सक्वानोश्च गौरवम् ।
तथाऽप्यपवाशययोर्यथापूर्वं विनिर्दिशेत् ॥
शोणितप्रभृतीनां च धातूनामुत्तरोत्तरम् ।

मांसाद्गरीयो वृषणमेद्वृक्कयकृदगुदम् ॥ अ.ह.सू. 6/69-71

पुमान् का पूर्वर्ध मांस	गुरु
खी का पश्चार्थ मांस	गुरु
गर्भिणी मांस	गुरु
चतुष्पाद मांस	खी मांस – लघु
विहंग मांस	पुमान् मांस – लघु
अंगानुसार मांस का	शिर → स्कन्ध → ऊरु → पृष्ठ → कटि उत्तरोत्तर लघुत्व
	→ सविथ → आमाशय → पकवाशय

अन्यपान वर्ग प्रकरण

धातुओं का उत्तरोत्तर गुरुत्व	रक्त → मांस → मेद → अस्थि → मज्जा → शुक्र
अंगानुसार मांस उत्तरोत्तर गुरुत्व	मांस → वृषण → मेद्र → वृक्क → यकृत् → गुद

मांसवर्ग का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
मृग मांस	ऐणेय	गोमांस
पक्षी	लाव	काणकपोत
विलेशय	गोधा	मण्डूक
मत्स्य	रोहित	चिलचिम

आहारयोगी वर्ग

सन्दर्भ – च.सू. अध्याय 27.286-318

तैल के सामान्य गुण –

कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुण्डं व्यवायि च ।
पित्तलं बद्धविणमूत्रं न च श्लेष्माभिवर्धनम् ॥
वातेषूत्तमं बल्यं त्वच्यं मेधाग्निवर्धनम् ।
तैलं संयोगसंस्कारात् सर्वरोगापहं मतम् ॥
तैलप्रयोगादजरा निर्विकारा जितश्रमाः ।
आसन्नतिबलाः संख्ये दैत्याधिपतयः पुरा ॥ च.सू. 27.286-288

2020-7-11 12:11

— कषाय अनुरस — मधुर — सूक्ष्म — उष्ण — व्यवायि — पितल —
पुरीष एवं मूत्र बद्धताकारक — न श्लेष्मल — उत्तम वातान्ध — बल्य —
त्वच्य — मेधा एवं अग्नि वर्द्धक — संयोग संस्कार से सर्वरोगहर आदि।

एरण्ड तैल के गुण —

ऐरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्धनम्।

वातासृगुल्महृदोगजीर्णज्वरहरं परम्॥ च.सू. 27.289

— मधुर — गुरु — श्लेष्मवर्द्धक — वातरक्त, गुल्म, हृदोग, जीर्णज्वर
नाशक

शुण्ठी के गुण —

सस्नेहं दीपनं वृद्ध्यमुच्चां वातकफापहम्।

विपाके मधुरं हृद्यं रोचनं विश्वभेषजम्॥ च.सू. 27.296

— सस्नेह — दीपन — वृद्ध्य — उष्ण — वातकफल — मधुर विपाकी
— हृद्य — रोचन

पिप्पली के गुण —

श्लेष्मला मधुरा चार्द्वा गुर्वी स्निग्धा च पिप्पली।

सा शुष्का कफवातान्धी कटूष्णा वृद्ध्यसंमता॥ च.सू. 27.297

आर्द्र पिप्पलीः — श्लेष्मल — मधुर — गुरु — स्निग्ध

शुष्क पिप्पलीः — कफवातान्ध — कट्टु — उष्ण — वृद्ध्य

अन्नपान वर्ग प्रकरण

मरिच के गुण —

नात्यर्थमुच्चां मरिचमवृद्ध्यं लघु रोचनम्। च.सू. 27.298

छेदित्वाच्छोषणात्वाच्च दीपनं कफवातजित्॥

— नाति उष्ण — अवृद्ध्य — लघु — रोचन — छेदि — शोषण — दीपन

— कफवातान्ध

हिंग के गुण —

वातश्लेष्मविबन्धनं कटूष्णां दीपनं लघु। च.सू. 27.299

हिंग शूलप्रशमनं विद्यात् पाचनरोचनम्॥

— वातकफल — विबन्धहर — कट्टु — उष्ण — दीपन — लघु — शूल

प्रशमन — पाचन — रोचन

सैन्धव के गुण —

रोचनं दीपनं वृद्ध्यं चक्षुष्यमविदाहि च।

त्रिदोषघनं समधुरं सैन्धवं लवणोत्तमम्॥ च.सू. 27.300

— रोचन — दीपन — वृद्ध्य — चक्षुष्य — अविदाही — त्रिदोषघन —
मधुर — उत्तम लवण

यवक्षार के गुण —

हृत्याण्डुग्रहणीरोगप्लीहानाहगलग्रहान्।

कासं कफजमशार्सि यावशूको व्यपोहति॥ च.सू. 27.305

2020-7-11 12:11



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

- हृद्रोग - पाण्डुरोग - ग्रहणी रोग - प्लीहा - आनाह - गलग्रह - कास - कफज अर्श नाशक

मांसरस के गुण -

प्रीणनः सर्वभूतानां हृद्यो मांसरसः परम् ॥

शुष्क्यतां व्याधिमुक्तानां कृशानां क्षीणरेतसाम् ।

बलवर्णार्थिनां चैव रसं विद्याद्यथामृतम् ॥

सर्वरोगप्रशमनं यथास्वं विहितं रसम् ।

विद्यात् स्वर्यं बलकरं वयोबुद्धीन्द्रियायुषाम् ॥

व्यायामनित्याः स्त्रीनित्या मद्यनित्याश्च ये नराः ।

नित्यं मांसरसाहारा नातुराः स्युर्न दुर्बलाः ॥ च.सू. 27.312-315

- प्रीणन - परम् हृद्य - शुष्क, व्याधिमुक्त, कृश, क्षीण रेतस्, बल एवं वर्ण के इच्छुक के लिए अमृत तुल्य - सर्वरोगप्रशमन - स्वर्य - वय, बुद्धि, इन्द्रिय और आयु के लिए बलकर - व्यायाम नित्या, स्त्री नित्या, मद्य नित्या के लिए नित्य सेवनीय आदि ।

• • •